सत्यनाम ।

कबीरदर्शन ग्रंथमालाकी द्वितीय मणिका।

अनुरागसागर ।

(४६) ग्रन्थोंद्वारा संशोधित ।

कबीरपन्थी ग्रंथोंके एक मात्र जीर्णोद्धारक,संशोधक,प्रकाशक, टीकाकार, कबीरधर्म नगरके वंशप्रतापी हजूरी महंत श्री युगलदासजी प्रसिद्ध रसीदपुरशिवहर-वाले भारतपथिक स्वामी युगलानन्दविहारी-द्वारा ४६ ग्रन्थोंसे संगृहीत.

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "**श्रीवेङ्कटेश्वर**" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया ।

संवत् १९८२, शक १८४७.

इस पुस्तकको खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छाप कर यहीं प्रकाशित किया।

सत्यनाम ।

प्रस्तावना.

अनुरागसागर आजतक लखनऊ, पटना, नरसिंहपुर और मुम्बईमें भिन्न भिन्न रूपसे छप चुके हैं। जिनमेंसे अन्तिम बार मुम्बईमें जो ग्रन्थ छपे हैं वह मेरे नामसे छापे गये हैं। क्योंकि, वह ग्रन्थ मैंने ही 'श्रीवेंकटेश्वर' प्रेसवालोंको दिये थे। यद्यपि इसके छपते समय भी मेरे पास इस ग्रन्थकी १३ हस्तलिखित प्रतियां उपस्थित थीं तथापि प्रेसवालोंकी शीघ्रताके कारण उसे पूर्णरूपसे सब प्रतियों द्वारा शुद्ध करनेका अवसर नहीं मिल सका, इसलिये विशेष २ स्थानोंपर अन्य ग्रन्थोंके साथ मिलाकर छपनेको दे दिया। यही कारण है कि, इसकी प्रस्तावना भी लिख न सका।

किंतु उस समयभी उपर्युक्त १३ प्रतियोंको देखनेका अवसर मिलनेसे मुझे ज्ञान हो गया कि, उन तेरहों प्रतियोंमें परस्पर बहुत ही विभिन्नता है इससे किसी शुद्ध और पुरानी-से पुरानी प्रतिकी खोजमें मैं लग गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि, छपी और हस्तलिखित सब मिलाकर इस समय ४६ प्रतियां मेरे पास उपस्थित हैं जिनका ब्योरा इस प्रकार है।

१ प्रति–जो सबसे पुरानी और प्रमोधगुरु बालापीरसाहबके समयकी लिखी हुई जान पडती है। क्योंकि, वंशावली लिखते हुए लिखनेवालेने वहीं तक नाम लिखा है और वह समय भी उन्हींका था।

२ प्रतियां–कवलनामसाहबकी लिखी हैं और इसकेअतिरिक्त

८ प्रतियां–और भी सं० १८६० से लेकर १९३० तककी लिखी हुई मुझे अपने पिताश्रीजीके पुस्तकालयसे प्राप्त हुई थीं।

१ प्रति–अमोलनाम साहबके समयकी लिखी है, जो गया जिलेके किसी सन्तकी लिखी हुई है।

१ प्रति–सुरतसनेही नाम साहबके समयकी लिखी है जो खास सिंघौडीमें बैठकर लिखी गयी है, जो मुकाम सहरावँ पो० कांथा जि. उन्नावके कबीरपथी सेवक आसादीन तँबोलीसे मिली है, जिसके वंशमें कई पीढीतक महंती चली आयी थी।
६ प्रतियां–पाकनामसाहबके समयकी लिखी हुई हैं।
८ प्रतियां–प्रकटनाम साहबके समयकी लिखी हैं जिसमें १ तो धीरजनाम साहबकी प्रधान धमपत्नी श्रीरानीसाहबाके हाथकी लिखी हुई है।
९ प्रतियां–प्रगट नाम साहबके पश्चात्‌की लिखी हैं। जिनमेंसे ४ प्रतियोंमें वंशावली, धीरजनाम साहबतक और शेष ५में पं० श्रीउग्रनाम साहबतक लिखी हैं। इसीमें एक प्रति वह भी है जो कबीरधर्मनगरके कबीरधर्मप्रकाशमें छपनेके लिये लिखायी गयी थी; किंतु छप नहीं सकी।
१ प्रति–बांधोगढ सिलौडी स्थानके वंशगुरु गोसाईं मधुकरनामसाहबके पुत्र श्रीगोपालदासजीके हाथकी लिखी है. जो मुकाम कसबा जि० पूर्नियाके महंत श्रीचरणदासजीसाहबने कृपा करके ग्रंथ छपते समय भेज दिया था।
२ प्रतियां–छपरा जिलेके बांधोगढके अनुयायी महंतोंकी लिखी हैं।
२ प्रतियां–जागूसाहबके घरानेवालोंकी लिखी हुई हैं और
१ प्रति काशीके अनुयायी किसी साधुने महंत रंगूदासजीके समय लिखी थी वह है। शेष–
५ प्रतियां–पांच स्थानोंकी छपी हुई प्रतियां हैं। इस प्रकारसे इस ग्रंथके संशोधन समय ४६ प्रतियां मेरे पास उपस्थित थीं। यदि इन प्रतियोंकी परस्पर विभिन्नताके विषयमें जो कुछ मैंने नोट कर रखा है उसे यहां लिखने लग जाऊँ तो एक अच्छी पुस्तक तय्यार हो जायगी। इसलिये मैंने

विचार किया है कि, "अनुरागसागरकी भूमिका" नामकी एक पुस्तक अलग ही बनाकर पाठकोंकी भेंट करूंगा।

तथापि इतना तो अवश्य कहे विना नहीं रहा जाता कि इन ४६ प्रतियोंकी परस्पर विभिन्नताके कारण एक एक विषयको देखनेके लिये कभी तो कुल ४६ प्रतियोंको उलटना पड़ता था, कभी एक विषयको जाननेके लिये समूचे ग्रंथको ही पढ़ जाना पड़ता था और भिन्न भिन्न शाखा (पन्थ) वालोंने अपनी बड़ाई जतानेके लिये एक दूसरेकी निन्दा और खण्डन मण्डन लिखे हुए हैं, ऐसे स्थानोंपर कई २ दिनोंतक विचार करना पड़ता था। जिसका विशेष वृत्तान्त जाननेके लिये उपर्युक्त भूमिकाको अवश्य देखना चाहिये। इस प्रकारसे कई महीनोंके कठिन परिश्रमसे सब ग्रन्थोंको मिलाकर मैंने यह ग्रंथ ठीक किया है।

यद्यपि मेरे परिश्रमका फल स्वरूप यह ग्रन्थ ऐसा सुन्दर और इतना बढ़ा हुआ है कि, आजतक किसी भी मठ मकान, स्थानके साधु, संत, महंत और आचार्य्यके पास इसके जोड़का ग्रन्थ मिलना असम्भव है। तथापि जिन ग्रन्थोंके द्वारा शुद्ध और मिलान करके यह ग्रन्थ छपाया गया है, उन ग्रन्थोंकी परस्पर विरोधताको देखकर मेरा मन परस्परके ऐसे स्वार्थसाधक खण्डनमण्डनवाले ग्रन्थोंसे घबरा उठा है, और मैं इस बातकी खोजमें हूं कि, इन प्रतियोंसे भी पुरानी प्रति मिले तो उससे फिर इसे शुद्ध करूं।

इसलिये सर्व सज्जन, निज धर्म उन्नति और सत्यके पक्षपाती कबीर-पंथी सन्त महंतोंसे सविनय निवेदन है कि, यदि उनके पास अनुरागसागरकी हस्तलिखित पुरानी प्रति हो तो कृपा कर मेरे पास रजिस्ट्री करके भेज दें जिसको पाकर मैं उन्हें रसीद भेज दूंगा और ग्रन्थकी अन्य आवृत्ति छपनेपर उनकी

हस्तलिखित प्रतिसहित छपी हुई एक प्रति भी भेज दूंगा और उसकी प्रस्तावनामें धन्यवादपूर्वक उनका नाम भी छापदूँगा।

शुभ स्थान कबीरधर्मनगरके कबीरधर्मप्रकाशमें ग्रन्थोंके छपनेका शीघ्र प्रबन्ध नहीं होनेसे श्री १०८ सिद्धि श्री पं० श्रीहजूर साहबकी आज्ञासे पुनः मैंने बम्बईमें ग्रन्थोंके छपवानेका प्रबन्ध किया है, जिस से कि बम्बईस्थ "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेसमें यह पुस्तक छपवाया है। अपने पास द्रव्याभावके कारण इसका लाभ भी उक्त प्रेसको ही मिलनेवाला है। यद्यपि मेरे कबीरपंथियोंमें धनपात्र महाशयोंकी कमी नहीं है तथापि काल भगवान्‌की कृपादृष्टिसे उन्हें इस ओर तनिकभी ध्यान नहीं है। यदि वे धर्मके नाते नहीं किंतु लाभके ही विचारसे भी इस ओर ध्यान देते तो उन्हें बहुत कुछ प्राप्त हो जाता। इस विषयका भी विशेष वृत्तान्त 'अनुरागसागरकी भूमिका' में देखना चाहिये।

इसके अतिरिक्त "कबीरकृष्णगीता" भी छपी है सुन्दर छापेदार सुनहली जिल्दके अतिरिक्त वह ग्रन्थ भी कबीर साहब पन्थी उग्र नामसाहब और पं० श्रीदयानामसाहबके चित्रोंद्वारा सुशोभित किया गया है। यद्यपि उस ग्रन्थकी प्राप्तिमें लोगोंको बहुतसा द्रव्य व्यय करके भी प्रायः निष्फलता ही मिला करती थी और जहां उसकी एक प्रति भी होती थी वहां दूर दूरसे लोग आकर अपने घरका सब काम काज छोड़के उसकी कथा सुनते थे। छत्तीसगढके कबीरपन्थियोंमें तो इसका वैसा ही आदर है जैसा सनातनधर्मावलम्बियों-पौराणिकोंमें भागवत महापुराणका।

इसके अतिरिक्त मैंने "श्रीवेंकटेश्वर" प्रेस द्वारा कबीरपन्थके छोटे बड़े सर्व ग्रन्थोंके छपवानेका प्रबन्ध कर लिया है और मेरे नामसे छपे आजतक जितने ग्रन्थ हैं वे सब भी पुनः शुद्ध करके छपाना आरम्भ कर दिया है. क्योंकि, उनमेंसे भी प्रत्येक ग्रन्थोंकी अनेक २ प्रतियां मैंने संग्रह कर लिया है

विशेष सूचना.

सुधार–पृष्ठ ४८ में जो हेडिंग लिखा है कि "गायत्रीके अद्याको शाप देनेका वृत्तान्त" और ४ पंक्तिमें जो गायत्रीने अद्याको शाप दिया है इस विषयका विरोध पृष्ठ ४१ के अद्याके शापसे और पृष्ठ४२ के निरञ्जनके शापसे होता है सो जानना चाहिये कि ४६ प्रतियोंमेंसे ६–७ प्रतियोंमें तो यह विषय है कि अद्याने गायत्रीको इस प्रकार शाप दिया है–

शाप्यो गायत्री तेहि बारा। होइ हैं तोर पांच भरतारा॥

इसके उत्तरमें गायत्रीने शाप दिया है।

हम जो पांच, पुरुषकी जोई। पांचोकी तू माता होई॥

जिसका भाव यह है कि, अद्याके शापसे गायत्री द्रौपदी हुई और गायत्रीके शापसे अद्या कुन्ती, किंतु पुराण और महाभारतादिकोंके प्रमाणसे यह सिद्ध है कि साक्षात् आदि-माया अद्याही द्रौपदी हुई है, इससे निरञ्जनका ही शाप देना ठीक जंचता है और मेरे पासकी संगृहीत ४० प्रतियोंमें भी यही बात है। इसलिये इसी बातको प्रधान रखते हुए भी भूलसे ये पृ०४८में रह गयी है सो पाठक अपनी इच्छानुसार सुधार लेंगे।

और जो कुछ इसमें शंका हो वह मेरे पास पत्र लिखकर पाठक पूछ सकते हैं।

भवदीय–

वंशप्रतापी हजूर महन्त युगलदास,

प्रसिद्ध-भारतपथिक स्वामी युगलानन्द विहारी,

तिथि वैशाख वद्य ८ संवत् १९७१ वि० तारीख १८—४—१९१४।

सत्यनाम

अथ अनुरागसागरकी विषयानुक्रमणिका ।

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

सद्गुरुस्तुति।

श्लोकाः।

सत्यं ज्ञानस्वरूपं विमलमधिगतं ब्रह्म साक्षान्नृरूपम्।
शीर्षन्यस्ताच्छरत्नद्युतिसितमुकुटं श्वेतवासोऽभिरामम्॥
भास्वन्मुक्तावलीभिः कृतरुचिरहृदयं दिव्यसिंहासनस्थम्।
भक्तानां पारिजातं विकसितवदनं सद्गुरुं नौम्यहं तम्॥ १॥

अर्थ-सत्य और ज्ञानके स्वरूप, विमल साक्षाद्ब्रह्मको प्राप्त मनुज-स्वरूप, मस्तक स्वच्छ रत्नोंसे प्रकाशित, श्वेत मुकुटसे युक्त श्वेतवस्त्रोंसे अलंकृत, देदीप्यमान मोतियोंकी मालाओंसे शोभित हृदय, दिव्य-सिंहासनपर विराजमान, भक्तलोगोंके लिये कल्पवृक्ष, प्रफुल्लित मुखार-विन्द है जिसका तिस सद्गुरुको मैं प्रणाम करता हूं॥ १॥

यदङ्घ्र्यनुध्यानविधूतमोहाः सन्तो महत्त्वं शमवाप्ययंति।
ब्रह्माऽद्वयं निर्गुणमाश्वनूहं तं सत्यनामानमहं नतोऽस्मि॥ २॥

अर्थ-जिसके चरणके ध्यान करनेसे संत लोग मोहपाशसे छूटकर महत्त्व और कल्याणको प्राप्त होते हैं, उस अद्वैत ब्रह्मस्वरूप सत्यनाम-को मैं नमस्कार करता हूं॥ २॥

यस्याऽमलेन यशसा विशदीकृतेऽस्मिँ-।
ल्लोके जनोऽज्ञतमसं तरसा विधूय॥

संतं पुमांसमधिगत्य शमेति तस्मिन्।
श्रीसत्यनामनि परे जगतो रतिः स्यात्॥ ३॥

अर्थ-जिसके स्वच्छ यशसे मनुष्य शीघ्रही इस परिमार्जित संसारमें अज्ञानांधकारको नाश कर,सत्पुरुषको प्राप्त होकर,कल्याणपदपर पहुंचता है उस श्रेष्ठ श्रीसत्यनाममें जगतकी प्रीति होवे॥ ३॥

अनुध्ययायस्यसदासिनाशांछित्वास्वगेहादिषुयोगिवन्द्याः।
विंदंत्यथाऽऽनन्दममन्दमेतेससत्यनामाविदधातुभूतिम्॥४॥

अर्थ-लोग जिसके ध्यानरूपी खड्गसे स्वगृहादिकोंमें जो आशा उसे छेदनकर,योगियोंसे वन्दनीय होते हैं और फिर विशेष आनन्दको पाते हैं वह सत्यनाम ऐश्वर्यको बढावे॥ ४॥

अकलितमहिमानं पूर्णकामं कृपालुं।
धृतमनुजशरीरं भक्तसन्तारणाय॥
सुरमुनिगणवन्द्यं दिव्यदेहाभिरामं।
हृदयतिमिरभानुं सत्कबीरं स्मरामः॥ ५॥

अर्थ-अगणितमहिमावाले,पूर्णकाम,दयायुक्त,भक्तलोगोंके उद्धार करनेके लिये मनुष्यशरीर धारण करनेवाले,देवता और मुनिगणोंसे वंदनीय,दिव्यदेह करके मनोहर,हृदयान्धकारको नाश करनेके लिये सूर्य ऐसे सत्कबीरको हम लोग स्मरण करते हैं॥५॥

श्लोकाः।

सर्वमंगलमांगल्य सर्वविघ्नविनाशनम् ।
अधमोद्धारणं देवं सद्गुरुं प्रणमाम्यहम् ॥ १ ॥
यं सर्वेश्वरदेवं हि स्तुवन्ति सततं सुराः।
ध्यायन्ति मुनयश्चापि तं गुरुं प्रणमाम्यहम् ॥ २ ॥
शश्वज्जन्मजरामयाधिनिधनैर्दुःखैः सदा पीडितान् ।
दृष्ट्वा प्राणभृतः कुशेशयदले स्वैरं च धृत्वा वपुः ॥
शास्त्राब्धिं प्रविगाह्य बीजकसुधाज्ञानं च तेभ्यो ददौ।
तं वन्दे शिरसा प्रणम्य चरणौ वीरं कबीरं गुरुम् ॥३॥
नित्यानन्दस्वरूपश्च मायातीतो महोदयः ।
सच्छास्त्रविषयः साक्षात्कबीरं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥ ४ ॥
नमः श्रीधर्मदासाद्यमहामुन्यन्तसत्तमान् ।
द्विचत्वारिंशदाचार्य्यान् भूतभव्यभविष्यतः ॥ ५ ॥

सत्यमुक्त, आदिअदली, अजर, अचिन्त, पुरुष,
मुनीन्द्र, करुणामयकबीर, सुरतियोगसंतायन,
धनीधर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम,
कुलपति नाम प्रमोध गुरुबालापीर, कवल
नाम, अमोलनाम, सुरतिसनेही नाम,
हक नाम, पाकनाम, प्रकट नाम,
धीरजनाम, उग्र नाम साहबकी
दया। वंशब्यालीसकी दया।

अथ अनुरागसागर प्रारम्भ ।
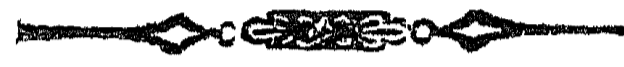
नमस्कार तथा वस्तुनिर्देशरूप मंगलाचरण ।

छंद हरिगीतिका ।

प्रथमवंदोसतगुरुचरणजिन, अगमगम्यलखाइया ॥
गुरुज्ञान दीपप्रकाशकरिपट, खोलिदरशदिखाइया ॥
जिहि कारणे सिद्धचापचे सो, गुरु कृपाते पाइया ॥
अकह मूरति अमिय सूरति,ताहिजाय समाइया ॥

गुरुदे पूर्ण है ।

सोरठा–कृपासिंधु गुरुदेव, दीनदयालु कृपालु है ॥
विरलेपावहिं भेव, जिन चीन्होपरगटतहां ॥१॥

अधिकारी कौन है ? छंद ।

कोइ बूझई जन जौहरी जो शब्दकी पारख करै ॥
चितलायसुनहिंसिखापनोहितजानके हिरदयधरै ॥
तममोह मो सम ज्ञान रवि जब प्रगटहोतबसूझई ॥
कहतहूं अनुरागसागर संत कोइ कोइ बूझई ॥२॥

विना अनुराग वस्तुको पा नहीं सकते ।

सोरठा–कोइइकसन्तसुजान, जोममशब्दबिचारई ॥
पावे पद निर्बान, बसत जासु अनुरागउर ॥२॥

धर्मदास बचन-अनुरागीके लक्षण विषय प्रश्न ।

हे सतगुरु बिनवौं कर जोरी । यह संशय मेटो प्रभु मोरी ॥
जाके चित अनुराग समाना । ताकर कहो कवन सहिदाना ॥
अनुरागी कैसे लखि परई । बिन अनुराग जीव नहिं तरई ॥
सोअनुरागप्रभुमोहि बताऊ । देइ दृष्टान्त भले समझाऊ ॥

सतगुरुबचन-अनुरागीके दृष्टान्त ।

धर्मदास परखहु चितलाई । अनुरागी लच्छ कहुँ समुझाई ॥

मृगाका दृष्टान्त ।

जैसे मृगा नाद सुनि धावै । मगन होय व्याधा ढिग आवै ॥
चित कछु संकन आवै ताही । देत सीस सो नाहिं डराही ॥
सुनि सुनि नाद सीस तिन दीन्हा।ऐसे अनुरागी कहँ चीन्हा ॥

पतंगका दृष्टान्त ।

औ पतंगको जैसो भाऊ । ऐसे अनुरागी उर आऊ ॥

सतीका दृष्टान्त ।

और लच्छ सुनियोधर्मदासा । सतगुरु शब्द करो परकाशा ॥
जरतनारि ज्योंमृतपतिसंगा । तनिकौ जरत न मोरत अंगा ॥
तजे सुगृह धन धाम सुहेली । पियविरहिनउठिचलैअकेली ॥
सुत लै लोगन आगे कीन्हा । बहुतमोह ताकहँपुनि दीन्हा ॥
बालकदुर्बलतोहिविनुमरिहै । घरभोसुन्नकाहिविधि करिहै ॥
बहु संपति तुमरे घर अहई । पलट चलहु गृहअससबकहई॥
ताके चित कछु व्यापे नाहीं । पिय अनुरागबसै हिय माहीं ॥

छंद ।

तेहिबहुतकहिसमुझाहिं नहिं नारिसमुझतसोधनी॥
नहिंकाम है धन धाम सो कछुमोहि तोऐसीबनी॥

जग जीवना दिन चारिहैकोइ नाहिं साथी अंतको॥
यह समुझि देख्यो ऐ सखीतातेगह्यो पद कंतको॥३॥
सोरठा–लिये किया करमाह,जाय सरा ऊपर चढी॥
गोद लियेनिज नाह,रामनाम कहते जरी३॥

तत्वानुरागीके लक्षण ।

धर्म ! यह अनुरागकी बानी । तुम तत देख कहूँ बिलछानी ॥
ऐसे जो नामहिं लौ लावे । कुलपरिवार सबहि बिसरावे॥
नारी सुतको मोह न आने । जीवन जनम सपन करिजाने ॥
जगमें जीवन थोरै भाई । अंत समय कोइ नाहिं सहाई ॥
बहुत पियारिनारिजग माहीं । मातु पिताहुजाहि सर नाहीं ॥
तेहि कारण नर सीस जु देही । अंत समय सो नाहिं सनेही ॥
निज स्वारथकहँ रोदन करई । तुरतहि नैहरको चित धरई ॥
सुत परिजनधन सपन सनेही।सत्यनाम गहु निजमति एही ॥
निजतनुसमप्रियऔरन आना । सोतन संगन चलत निदाना॥

कालसे कौन छुडा सकता है ?

ऐसा कोइ न दीखे भाई । अंत समयमें लेइ छुडाई ॥
अहै एक सो कहौं बखानी । जेहि अनुराग होय सो मानी ॥
सतगुरु आहि छुडावनहारा । निश्चय मानो कहा हमारा ॥

सद्गुरु क्या करता है ?

कालहिं जीति हंस लै जाहीं । अविचल देशपुरुष जहँआहीं ॥
जहां जाय सुख होय अपारा । बहुरि न आवै यहि संसारा ॥

अविचल देशको कौन पहुंच सकता है ? छंद ।

बिसवास कर मन बचनको तब, चढे सतकी राह हो॥
ज्यों सूरमा रनमें धँसे फिर,पाछ चितवत नाह हो॥

सती शूरा भाव निरखिके, संत सो मग धारिये॥
मृतक भाव बिचार गुरु गम,काल कष्ट निवारिये४॥

अधिकारीकी दुर्लभता ।

सोरठा–कोइकशूरा जीव, जोऐसी करनी करै॥
ताहि मिलैगो पीव,कहैं कबीर बिचारिके॥४॥

धर्मदास वचन-मृतक किसे कहते हैं ?

मृतक भाव प्रभु कहो बुझाई । जाते मनकी तपनि नसाई ॥
केहि विधिमरतकहोयसजीवन।कहोविलोयनाथ अमृत घन ॥

कबीरवचन–मृतकके दृष्टान्त ।

धर्मदास यह कठिन कहानी। गुरुगम ते कोइ विरले जानी ॥

भृंगीका दृष्टान्त ।

मृतक होयके खोजहिं सन्ता । शब्द विचारि गहैं मगु अंता ॥
जैसे भृंग कीटके पासा। कीटहिंगहि गुरुगमपरगासा ॥
शब्द घातकर महितिहि डारे । भृंगी शब्द कीट जो धारे ॥
तब लैगो भृंगी निज गेहा । स्वाती देइ कीन्हों समदेहा ॥
भृंगी शब्द कीट जो माना । वरण फेर आपन कर जाना ॥
बिरला कीट जोहोयसुखदाई । प्रथम अवाज गहे चितलाई ॥
कोइ दूजे कोइ तीजे मानै । तनमन रहित शब्दहितजानै ॥
भृंगी शब्द कीट ना गहई । तो पुनि कीट असारे रहई ॥
धर्मदास यह कीट को भेवा । यहि मति शिष्य गहेगुरुदेवा ॥

भृङ्गीभावकी प्राप्ति कैसे होती है? छंद ।

भृङ्गी मति दिढकै गहे तो, करौं निज समओहि हो॥
द्वितिया भाव न चित्त व्यापै,सो लहे जिव मोहि हो ॥

गुरु शब्दनिश्चय सत्यमाने, भृंगि मत तब पावई ॥
तजि सकल आसा शब्द वासा काग हंस कहावई॥

हंस कौन है ?

सोरठा-तजै कागकी चाल,सत्य शब्द गहि हंसहो॥
मुकुता चुगे रसाल,पुरुष पच्छ गुरु मग गवन ॥८॥

मृतकके और दृष्टान्त।

सुनहु संत यह मृतकसुभाऊ। विरला जीव पीव मग धाऊ ॥
औरै सुनहु मृतकका भेवा। मृतक होय सतगुरु पद सेवा ॥
मृतक छोह निभाव उर धारे। छोह निभावहि जीव उबारे ॥

पृथ्वीका दृष्टान्त।

जस पृथ्वीके गंजन होई। चित अनुमान गहे गुण सोई ॥
कोइ चंदन कोइ बिष्टा डारे। कोइ कोइ किरषी अनुसारे ॥
गुण औगुणतिनसमकरजाना। महाविरोधअधिकसुखमाना ॥

ऊखका दृष्टान्त।

और मृतक भाव सुनि लेहू। निरखि परखि गुरुमगुपगुदेहू॥
जैसे ऊख किसान बनावे। रती रती कर देह कटावे ॥
कोल्हू महँ पुनि आप पिरावे। पुनि कडाहमें आप उँटावे ॥
निज तनु दाहे गुड तब होई। बहुरि ताव दै खांड बिलोई ॥
ताहू माहिंताव पुनि दीन्हा। चीनी तबै कहावन लीन्हा ॥
चीनी होय बहुरि तन जारा। ताते मिसरी ह्वै अनुसारा ॥
मिसरीते जब कंद कहावा। कहे कबीर सबकेमन भावा ॥
याही बिधिते जो शिष सहई। गुरु कृपा सहजे भव तरई ॥

मृतकभाव कौन धारण कर सकता है? छन्द।

मिरतक भाव है कठिन धमनि,लहे बिरला शूर हो॥

कादर सुनत तेहि तन मन दहै, पाछेनचितवतकूरहो
ऐसेहि शिष्य आप सम्हारे,ताव सही गुरु ज्ञानको ॥
लहै भेदी भेद निश्चय, जाय दीप अमानको ॥६॥

मृतकही साधु होता है ।

सोरठा–मृतक होय सो साधु,सो सतगुरुको पावई॥
मेटे सकल उपाध,तासु देव आशाकरें ॥६॥

साधु किसे कहते हैं ?

साधू मार्ग कठिन धमदासा । रहनी रहे सो साधु सुवासा ॥
पांचों इन्द्री सम करि राखै । नाम अमीरसनिशिदिन चाखै॥

चक्षुवशीकरण ।

प्रथमहिं चक्षु इन्द्री कहँ साधे । गुरु गम पंथ नाम अवराधे ॥
सुन्दर रूप चक्षुकी पूजा । रूप कुरूप न भावे दूजा ॥
रूप कुरूपहिं सम कर जाने । दरस विदेहिं सदा सुख माने ॥

श्रवणवशीकरण ।

इन्द्री श्रवण वचन शुभ चाहै ।उत्कट वचन सुनत चित दाहै ॥
बोल कुबोल दोउ सम लेखै । हृदयशुद्ध गुरुज्ञान विशेखै ॥

नासिकावशीकरण ।

नासिका इन्द्री बास अधीना । यहि सम राखै संत प्रवीना ॥

जिह्वावशीकरण ।

जिभ्या इन्द्री चाहै स्वादा । खट्टा मीठा मधुर सवादा ॥
सहज भावमें जो कछु आवै । रूखा फीका नहिं बिलगावै॥
जो कोइ पंचामृत लैआवै । ताहि देखि नहिं हरष बढावै॥
तजे न रूखा साग अलूना । अधिक प्रेमसों पावै दूना ॥

शिश्नवशीकरण ।

इन्द्री दुष्ट महा अपराधी । कुटिलकामकोइविरलेसाधी ॥
कामिनि रूप कालकी खानी । तजहु तासु सँग हो गुरुज्ञानी॥

कामबशीकरण ।

जबही काम उमँगतन आवे । ताहि समयजो आप जुगावे ॥
शब्द विदेह सुरत लै राखे । गहि मन मौन नाम रस चाखे ॥
जब निहतत्त्वमें जाय समाई । तबही काम रहै मुरझाई ॥

कामदेव लुटेरा है । छंद ।

काम परबल अति भयंकर महा दारुण काल हो॥
सुर देव मुनिगणयक्षगंध्रवसबहिकीन्हबिहाल हो ॥
सबहि लूटे विरल छूटे ज्ञान गुण जिन दृढ गहे ॥
गुरु ज्ञान दीप समीप सतगुरु भेद मारग तिनलहे७

कामलुटेरेसे बचनेका उपाय ।

सोरठा–दीपक ज्ञान प्रकास, भवन उजेराकरिरहो
सतगुरु शब्द विलास,भाजै चोर अँजोर जब७॥

अनलपक्षका दृष्टान्त

गुरुकृपासों साधु कहावै । अनलपच्छ ह्वै लोक सिधावै॥
धर्मदास यह परखो बानी । अनलपच्छ गम कहौं बखानी॥
अनलपच्छ जो रहे अकाशा । निशिदिन रहै पवनकी आशा॥
दृष्टिभावतिनरतिविधिठानी । यहिविधिगरभ रहेतिहिजानी ॥
अंडप्रकाश कीन्हपुनितहँवा । निराधार आलंब हिं जहँवा ॥
मारग माहिं पुष्ट भो अंडा । मारग माहिं बिहर नौ खंडा ॥
मारग माहिं चक्षु तिन पावा । मारग माहिं पंख परभावा ॥
महिढिगआवासुधिभइताही । इहां मोर आश्रम नहिं आही ॥

सुरति सम्हारचलेपुनितहँवा । मात पिताको आश्रमजहँवा ॥
अनलपच्छतेहि लैन न आवै।उलट चीन्ह निज घरहि सिधावै॥
बहु पंछी जग माहिं रहावें । अनलपच्छ सम नाहिं कहावें॥
अनलपच्छजसपच्छिनमाहीं। अस विरले जिव नाम समाहीं॥
यहि विधि जोजिव चेते भाई।मेटि काल सतलोक सिधाई ॥

साधु अनलपक्ष समान कब होता है ? छंद ।

निरालंब अलंब सतगुरु एक आसा नामकी ॥
गुरुचरणलीनअधीननिशिदिनचाहनहिंधनधामकी
सुतनारि सकल विसारिविषया,चरणगुरुदृढकैगहे ॥

ऐसे साधुको गुरु क्या देते हैं ?

सतगरुकृपादुख दुसहनाशै,धाम अविचल सोलहे॥

अविचल धामकी प्राप्ति किससे होती है ?

सोरठा–मनवचक्रमगुरुध्यान, गुरु आज्ञानिरखतचले॥
देहि मुक्ति गुरु दान, नाम विदेह लखायकें ॥ ८ ॥

नामध्यानमाहात्म्य ।

जबलग ध्यानविदेह न आवे। तबलग जिव भव भटकाखावे॥
ध्यान विदेह औनामविदेहा। दोइ लख पावे मिटै संदेहा ॥
छन इक ध्यान विदेह समाई।ताकी महिमा वरणि न जाई ॥
काया नाम सबै गोहरावें। नाम विदेह विरले कोइ पावें॥
जोयुग चार रहे कोइ कासी। सार शब्द विन यमपुर वासी॥
नीमषार बद्री परधाना । गया द्वारिका प्राग अस्नाना॥
अडसठतीरथभूपरिकर्मा । सार शब्द विन मिटै न भर्मा ॥
कहँलग कहों नाम परभाऊ । जा सुमिरे जम त्रास नसाऊ ॥

नामपानेवालेको क्या मिलता है ?

सार नाम सतगुरुसों पावे। नाम डोर गहिलोक सिधावे॥
धर्मराय ताकों सिर नावे। जो हंसा निःतत्त्व समावे॥

सार शब्द क्या है ?

सार शब्द सु विदेह स्वरूपा। निःअच्छर वहि रूप अनूपा॥
तत्त्व प्रकृति प्रभाव सब देहा। सार शब्द निःतत्त्व विदेहा॥
कहन सुननको शब्द चौधारा। सार शब्दसों जीव उबारा॥
पुरुष सु नाम सार परवाना। सुमिरण पुरुष सार सहिदाना॥
बिन रसनाके जाप समाई। तासों काल रहे मुरझाई॥
सूच्छम सहज पंथ है पूरा। तापर चढो रहे जनसूरा॥
नहिं वहँ शब्दन सुमरन जापा। पूरन वस्तु काल दिख दापा॥
हंस भार तुम्हरे शिर दीना। तुमको कहों शब्दको चीन्हा॥
पदम अनंत पखुरी जाने। अजपा जाप डोर सो ताने॥
सुच्छम द्वार तहां तब दरसे। अगम अगोचर सत्पथ परसे॥
अंतरशून्यमहिं होय प्रकासा। तहँवाँ आहि पुरुषको बासा॥
ताहिं चीन्ह हंस तहँ जाई। आदि सुरत तहँ ले पहुँचाई॥
आदि सुरत पुरुषको आही। जीव सोहंगम बोलिये ताही॥
धर्मदास तुम संत सुजाना। परखो सारशब्द निरबाना॥

सारशब्द (नाम) जपनेकी विधि गुरुगमभेद। छंद।

जाप अजपा हो सहज धुन परखि गुरुगम धारिये॥
मनपवनथिर कर शब्दनिरखेकर्ममनमथमारिये॥
होत धुनु रसना बिना कर मालबिन निरवारिये॥
शब्दसार विदेह निरखतअमरलोकसिधारिये॥९॥

सोरठा—शोभा अगम अपार,कोटि भानुशशि रोमइक।
षोडश रवि छिटकार, एक हंस उजियार तनु॥९॥

धर्मदासका आनन्दोद्गार ।

हे प्रभु तव चरणन बलिहारी । किये सुखीसब कष्ट निवारी ॥
चक्षुहीन जिमि पावे नैना । तिमि मोहिंहरषसुनत तव वैना ॥

कबीरवचन ।

धर्मदास तुम अंश अंकूरी । मोहिं मिलेउ कीन्हें दुख दूरी ॥
जस तुम कीन्हें मोसन नेहा । तजि धन धाम रु सुतपितु गेहा॥
आगे शिष्यजो असविधिकरि हैं।गुरुचरणनमन निश्चलधरिहैं॥
गुरुके चरण प्रीतिचित धारै । तन मन धन सतगुरु पर वारै॥
सोजीव मोहिं अधिक प्रियहोई ।ताकहँ रोकि सके नहिं कोई ॥
शिष्य होयसरबस नहिं वारे । हृदय कपट मुख प्रीति उचारे ॥
सो जीव कैसेलोक सिधायी । बिन गुरु मिले मोहिं नहिंपाई ॥

धर्मदासकी अधीनता ।

यहसबतोप्रभुआपहि कीन्हा । नहिं तो हतो मैं परम मलीना ॥
करके दयाप्रभु आपहिं आये । पकडि बांह प्रभुकाल छुडाये ॥

सृष्टिउत्पत्तिविषयप्रश्न ।

अब साहब मोहिं देहु बतायी । अमरलोक सो कहां रहाई ॥
लोकदीपमोहिं बरनिसुनावहु । तृषावन्तकोअमी पियावहु ॥
कौने द्वीप हंसको बासा । कौने द्वीप पुरुष रहिवासा ॥
भोजन कौन हंस तहँ करई । औबानी कहँपुनितहँउच्चरई ॥
कैसे पुरुष लोक रचि राखा । द्वीपहि कर कैसे अभिलाखा॥
तीन लोक उत्पत्ती भाखो । वर्णहु सकलगोय जनि राखो॥
काल निरंजन केहिविधिभयऊ । कैसे षोडश सुत निर्मयऊ ॥

कैसे चार खानि बिस्तारी। कैसे जीव काल वश डारी ॥
कैसे कूर्म शेष उपराजा। कैसे मीन बराहहिं साजा ॥
त्रय देवा कौने विधि भयेऊ। कैसे महि अकाश निरमयऊ ॥
चंद्र सूर्य कहु कैसे भयऊ। कैसे तारागन सब ठयऊ ॥
किहिविधिभइशरीरकीरचना। भाषो साहेब उत्पति बचना॥
जाते संशय होय उछेदा। पाद भेद मन होय अखेदा॥

छंद।

आदि उत्पतिकहोसतगुरु, कृपाकरि निजदासको ॥
बचन सुधा सु प्रकाश कीजे,नाश हो यमत्रासको ॥
एक एक विलोय बर्णहु, दास मोहि निज जानिके॥
सत्य बक्ता सद्गुरु तुम,लेब निश्चय मैं मानिके॥१०
सोरठा–निश्चयबचनतुम्हार, मोहि अधिक प्रियताहिते ॥
लीला अगम अपार, धन्य भागदर्शन दिये ॥१०॥

कबीरवचन।

धरमदास अधिकारी पाया। ताते मैं कहि भेद सुनाया ॥
अबतुमसुनहु आदिकीबानी। भाषों उत्पति प्रलय निसानी॥

सृष्टिके आदिमें क्या था?

तबकी बात सुनहुधर्मदासा। जब नहिं महि पाताल अकासा॥
जब नहिं कूर्मबराह औ शेषा। जब नहिं शारद गौरि गणेशा ॥
जब नहिं हते निरंजन राया। जिनजीवनकहबांधिझुलाया ॥
तेतिस कोटि देवता नाहीं। और अनेक बताऊ काहीं ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर न तहिया।शास्त्र वेद कुरान न कहिया॥
तब सब रहे पुरुषके माहीं। ज्यों बटवृक्ष मध्य रह छाहीं॥

छंद ।

आदि उत्पति सुनहु धर्मनि, कोइनजानततािहहो ॥
सबहि भो विस्तार पाछे, साख देउँ मैं काहि हो ॥
वेद चारों नाहिं जानत, सत्य पुरुष कहानियां ॥
वेदको तब मूल नाहीं, अकथकथा बखानियां ॥ ११ ॥
सोरठा–निराकारते वेद, आदिभेदजानेनहीं ॥
पंडित करत उछेद, मते वेदके जग चले ॥ ११ ॥

सृष्टिकी उत्पत्ति सत्पुरुषकी रचना ।

सत्य पुरुष जब गुपत रहाये । कारण करण नहीं निरमाये ॥
समपुट कमल रह गुप्त सनेहा । पुहुप माहिं रह पुरुष विदेहा ॥
इच्छा कीन्ह अंश उपजाये । हंसन देखि हरष बहुपाये ॥
प्रथमहिं पुरुषशब्द परकाशा । दीपलोकरचिकीन्ह निवासा ॥
चारि करा सिंहासन कीन्हा । तापर पुहुप दीप करु चीन्हा ॥
पुरुष कला धरि बैठे जहिया । प्रगटी अगर बासना तहिया ॥
सहस अठासी दीपरचि राखा । पुरुष इच्छातैसबअभिलाखा ॥
सबै द्वीप रहु अगर समायी । अगरबासना बहुत सुहायी ॥

सोलह सुतका प्रकट होना ।

दूजे शब्द जु पुरुष परकाशा । निकसेकूर्मचरणगहि आशा ॥
तीजे शब्द सु पुरुष उच्चारा । ज्ञान नाम सुत उपजे सारा ॥
टेकी चरण सम्मुख ह्वै रहेऊ । आज्ञा पुरुषद्वीपतिन्ह दएऊ ॥
चौथे शब्द भय पुनि जबहीं । विवेकनाम सुतउपजे तबहीं ॥
आप पुरुषकियद्वीपनिवासा । पंचम शब्दसोतेज परकाशा ॥
पांचवे शब्द जब पुरुष उच्चारा । काल निरंजन भौ औतारा ॥

तेज अंगते कालहै आवा । ताते जीवन कह संतावा ॥
जीवरा अंस पुरुषका आहीं । आदि अंत कोइ जानत नाहीं ॥
छठे शब्द पूरुष मुख भाषा । प्रगटे सहज नाम अभिलाषा ॥
सतयें शब्द भयो संतोषा । दीन्हो द्वीप पुरुष परितोषा ॥
अठे शब्द पूरुष उच्चारा । सुरति सुभाव द्वीप बैठारा ॥
नवमें शब्द अनन्द अपारा । दशयें शब्द क्षमा अनुसारा ॥
ग्यारहें शब्द नाम निष्कामा । बारहें शब्द जलरंगी नामा ॥
तेरहें शब्द अचिंत सुत जानो । चौदहें शब्द सुत प्रेम बखानो ॥
पन्द्रहें शब्द सुत दीनदयाला । सोलहें शब्द भै धीर्य रसाला ॥
सत्रहवें शब्दसुतयोगसंतायन । एक नाल षोडश सुत पायन ॥
शब्दहिते भयो सुतनअकारा । शब्दते लोक द्वीप विस्तारा ॥
अग्र अमी दिय अंशअहारा । द्वीप द्वीप अंशन बैठारा ॥
अंशन शोभा कला कनंता । होत तहां सुख सदा वसन्ता ॥
अंसन सोभा अगम उपारा । कला अनन्त को वरणे पारा ॥
सब सुत करें पुरुषको ध्याना । अमी अहार सदा सुख माना ॥
याही बिधि सोलह सुत भेऊ । धर्मदास तुम चित धरि लेऊ ॥

छंद ।

द्वीप करी को अनंत शोभा, नाहिं बरणत सो बने ॥
अमित कला अपार अद्भुत, सुतन शोभाको गने ॥
पुरुषके उजियारसे सुन, सबै द्वीप अजोर हो ॥
सत पुरुषरोम प्रकाश एकहि, चन्द्र सूर्य करोर हो ॥
सोरठा—सतपुरआनँदधाम, शोगमोहदुखतहँनहीं ॥
हंसनको विश्राम, पुरुष दरश अँचवन सुधा ॥ १२ ॥

निरञ्जनकी तपस्या और मानसरोवर तथा शून्यकी प्राप्ति ।

यहि विधि बहुत दिवस गयो बीती । ता पीछे ऐसी भइ रीती ॥
धरमराय अस कीन्ह तमासा । सो चरित्र बूझहु धर्मदासा ॥
युग सत्तर सेवा तिन कीन्हा । इक पग ठाढ पुरुष चित दीन्हा ॥
सेवा कठिन भांति तिन कीन्हा । आदिपुरुष हर्षित होय चीन्हा ॥

पुरुषवचन निरञ्जनप्रति ।

पुरुष अवाज उठी तब वानी । कहा जानि तुम सेवा ठानी ॥

निरञ्जनवचन ।

कहै धरम तब सीस नवायी । देहु ठौर जहँ बैठों जायी ॥
आज्ञा किये जाहु सुत तहवाँ । मानसरोवर द्वीप है जहवाँ ॥
चल्यो धरम तब मानसरोवर । बहुत हरष चित करत कलोहर ॥
मानसरोवर आये जहिया । भये आनन्द धरम पुनि तहिया ॥
बहुरि ध्यान पुरुषको कीन्हा । सत्तर जुग सेवा चित दीन्हा ॥
यक पग ठाढे सेवा लायी । पुरुष दयालु दया उर आयी ॥

पुरुषवचन सहजप्रति ।

विकस्यो पुहुप उठ्यो जब बानी । बोलत वचन उठ्यो अघरानी ॥
जाहु सहज तुम धरमके पासा । अब कस ध्यान कीन्ह परकासा ॥
सेवा बहु कीन्हा धर्मराऊ । दियो ठौर वहि जहां रहाऊ ॥
तीनलोक तब पलमें दीन्हा । लखि सेवकाइ दया अस कीन्हा ॥
तीन लोक कर पायो राजू । भयो आनन्द धरम मन गाजू ॥
अब का चाहे पूछो जाई । जो कछु कहै सो देउ सुनाई ॥

सहजका निरञ्जनके पास जाना ।

चले सहज तब सीस नवाई । धरमराय पहँ पहुँचे जाई ॥
कहे सहज सुनु भ्राता मोरा । सेवा पुरुष मान लइ तोरा ॥
अब का मांगहु सो कह मोही । पुरुष अवाज दीन्ह यह तोही ॥

निरञ्जन वचन सहजप्रति।

अहो सहज तुम जेठ भाई। करो पुरुष सो विन्ती जाई॥
इतना ठाव न मोहि सुहाई। अबमोहिबकसिदेहु ठकुराई॥
मोरे चित अस भौअनुरागा। देउ देशमोहि करहु सभागा॥
कै मोहिदेहुलोक अधिकारा। कै मोहिदेहुदेस यक न्यारा॥

सहजवचन सत्पुरुषप्रति।

चले सहज सुनिधर्मकीबाता। जाय पुरुषसो कहेविख्याता॥
जो कछु धर्मराय अभिलाषी। तैसे सहज सुनाये भाषी॥

पुरुषवचन सहजप्रति छन्द।

सुन्यो सहजके वचन जबहीं, पुरुष बैन उचारेऊ॥
धरमसे सनतुष्ट हैं हम, वचन मम हिय धारेऊ॥
लोक तीनों ताहि दीन्हो, शून्य देश बसावहू॥
करहु रचना जाय तहँवा, सहज वचन सुनावहू १२
सोरठा-जाहुसहजतुम वेग, असकहिआवोधर्मसो॥
दियो शून्यकर थेग, रचना रचहु बनाइके १३

निरञ्जनको सृष्टिरचनाका साज मिलनेका वृत्तान्त।

सहज वचन निरञ्जन प्रति।

आयसहज तबवचनसुनावा। सत्य पुरुष जसकहिसमुझावा॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

सुनतहि बचन धर्म हर्षाना। कछुक हर्ष कछु विस्मय आना॥

निरंजन वचन सहज प्रति।

कहे धर्म सुनु सहज पियारा। कैसे रचौं करौं विस्तारा॥
पुरुष दयाल दीन्हमोहि राजू। जानु न भेद करों किमिकाजू॥
गम्य अगममोहे नहिं आई। करो दया सो युक्ति बतायी॥
विन्ती करौ पुरुषसों मोरी। अहो भ्रात बलिहारी तोरी॥

किहिविधिरचूं नौखंडबनाई । हे भ्राता सो आज्ञा पाई ॥
मो कहँ देहु साज प्रभु सोई । जाते रचना जगतकी होई ॥

सहजका लोकको जाना ।

तबही सहज लोक पगधारा । कीन्ह दंडवत बारम्बारा ॥

पुरुषवचन सहज प्रति ।

अहो सहज कस इहँवा आई । सो हमसों तुम शब्द सुनाई ॥

कबीर बचन धर्मदास प्रति ।

कहो सहज तव धर्मकी बाता । जो कछु धर्म कहीविख्याता ॥
धर्मराय जस विन्ती लायी । तैसे सहज सुनायउ जायी ॥

पुरुषकी आज्ञा सहजसे ।

आज्ञा पुरुष दीन्ह तेहि वारा । सुनो सहज तुम वचनहमारा ॥
कूर्मके उदर आदि सब साजा । सो ले धर्म करे निजकाजा ॥
विनती करे कूर्म सो जायी । मांगिलेहि तेहि माथ नवायी ॥

सहजका धर्मरायके निकट जाकर पुरुषकी आज्ञा सुनाना ।

गये सहज पुनि धर्मके पासा । आज्ञा पुरुष कीन्ह परकासा ॥
विनती करो कूमसो जाई । मांगि लेहु तेहु सीस नवाई ॥
जाय कूर्म ढिग सीस नवावहु । करिहैं कृपा बहुत तब पावहु ॥

निरञ्जनका कूर्मके पास साज लेनेको जाना।कबीर वचन धर्मदासप्रति।

चलिभो धरम हरष तब बाढो । मनहिंकीनजु मानअतिगाढो ॥
जाय कूर्मके सन्मुख भयऊ । दंड परनाम एक नहिं कियऊ ॥
अमी स्वरूप कूर्म सुखदाई।तपत न तनिको अतिशितलाई ॥
करिगुमानदेख्यो जबकाला । कूर्म धीर अति है बलवाला ॥
बारह पालँग कूर्म शरीरा । छै पालंग धरम बलवीरा ॥
धावे चहुँ दिश रहै रिसाई । किहि विधि लीजेउत्पति भाई ॥
कीन्हो रोष कोपि धर्म धीरा । जाय कूर्मसे सन्मुख भीरा ॥

कीन्हों काल सीस नख घाता। उदरते निकसे पवन अघाता॥
तीन सीसके तीनहु अंशा। ब्रह्मा विष्णु महेश्वर वंशा॥
पांच तत्त्व धरती आकाशा। चंद्र सूर्य उडगन रहिवासा॥
निसरयो नीर अग्नि शशिसूरा। निसरयोनभढाकनमहिथूरा॥
मीन शेष बराह महि थम्भन। पुनिपृथ्वीको भयो अरम्भन॥
छीना सीस कूर्मको जबही। चले प्रसेव ठांव पुनि तबही॥
जबही प्रसेव बुंद जल दीन्हा। उंचासकोट पृथ्वीको चीन्हा॥
क्षीर ताय जस परत मलाई। अस जलपर पृथ्वी ठहराई॥
बराह दंत रहु महिकर मूला। पवन प्रचंड मही अस्थूला॥
अण्ड स्वरूप अकाशको जानो। ताके बीच पृथ्वी अनुमानो॥
कूर्म उदर सुत कूर्म उत्पानो। तापर शेष बराहको थानो॥
शेष सीस या पृथ्वी जानो। ताके हेठ कूर्म बरियानो॥
किरतम कूर्म अण्डके मांही। कूर्म अंश सो भिन्न रहाही॥
आदि कूर्म रह लोक मंझारा। तिनपुनि पुरुषध्यानअनुसारा॥

कूर्मवचन सत्पुरुष प्रति।

निरंकार कीन्हो बरियाया। काल कला धरि मोपहँ आया॥
उदर विदारकीन्ह उन मोरा। आज्ञा जानि कीन्ह नहिं थोरा॥

पुरुषवचन कूर्म प्रति।

पुरुषअवाज कीन्हतेहिवारा। छोट बन्धु वह आहितुम्हारा॥
आही यही बडनकी रीती। औगुन ठावँ करहिं वह प्रीती॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

पुरुषवचनसुनि कूर्मअनन्दा। अमी सरूप सो आनन्दकन्दा॥
पुरुषध्यानपुनिकीन्हनिरञ्जन। जुग अनेक किय सेवा संजन॥
स्वार्थ जानि सेवा तिन लाई। करि रचना बैठे पछताई॥
धर्मराय तब कीन्ह विचारा। कहवालो त्रयपुर विस्तारा॥

स्वर्ग मृत्यु कीन्हों पाताला। विनाबीज किमिकीजे ख्याला॥
कौनभांतिकस करबउपाई। किहि विधि रचों शरीरबनाई॥
कर सेवा मांगों पुनि सोई। तिहुँ पुर जीवित मेरो होई॥
करिविचारअसहठतिनधारा। लाग्यो करने पुरुष विचारा॥
एक पांव तब सेवा कियऊ। चौंसठ युगलों ठाढे रहेऊ॥

बहुरि पुरुषका सहजको निरञ्जनके निकट भेजना। छंद।

दयानिधि सतपुरुष साहिब, बसभुसेवाके भये॥
बहुरि भाष्यो सहज सेती,कहा अब याचत नये॥
जाहु सहज निरंजनापहँ, देउ जो कुछ मांगई॥
करहि रचना पुरुष वचना,छल मता सब त्यागई १४

सहजका निरञ्जनके निकट पहुँचना।

सोरठा-सहज चले सिर नाय,जबहिं पुरुष आज्ञा कियो
तहँवांपहुँचे जाय, जहां निरंजन ठादरह १४

देखत सहज धर्म हरषाना। सेवा बस पुरुष तब जाना॥

सहजवचन।

कहै सहज सुनु धर्मराया। केहि कारण अब सेवा लाया॥

निरञ्जनवचन।

धर्म कहे तब सीस नवायी। देहु ठौर जहँ बैठौं जायी॥

सहजवचन।

तबसहज अस भाषे लीन्हा। सुनहु धर्म तोहिपुरुषसबदीन्हा॥
कूर्म उदर सोजो कछु आवा। सो तोहि देन पुरुष फरमावा॥
तीनो लोकराज तोहि दीन्हा। रचना रचहु होहु जनि भीना॥

निरञ्जनवचन।

तबै निरंजन विनती लायी। कैसे रचना रचूँ बनायी॥

पुरुषहिं कहौ जोरियुग पानी। मैंसेवक दुतिया नहिंजानी ॥
पुरुष सो विनती करो हमारा। दीजे खेत बीज निज सारा ॥
मैं सेवक दुतिया नहिं जानू। ध्यानपुरुषकोनिशिदिनआनू॥
पुरुषहिं कहो जाइ यह बानी। देहुबीज अम्मर सहिदानी ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति।

सहजकह्यो पुनिपुरुषहिं जाई। जस कछुकह्यो निरंजनराई ॥
गयो सहजनिज दीपसुखासन। जबहिंपुरुष दीन्हे अनुशासन॥
सेवावश सतपुरुष दयाला। गुणऔगुणनहिंचितकिरपाला॥

अद्याकी उत्पत्ति।

इच्छा कीन पुरुष तेहि बारा। अष्टंगी कन्या उपचारा ॥
अष्ट बाहु कन्या होय आई। बायें अंग सो ठाढ रहाई ॥

अद्यावचन।

माथ नाइ पुरुष सो कहई। अहो पुरुष आज्ञा कसअहई॥

पुरुषवचन अद्या प्रति। सत्यपुरुषका अद्याको मूलबीज देना।

तबहीं पुरुष वचन परगासा। पुत्री जाहु धरमके पासा ॥
देहुँ वस्तु सो लेहु सम्हारी। रचहु धर्म मिलिउतपतिबारी॥

कबिर वचन धर्मदास प्रति।

दीन्हो बीज जीव पुनि सोई। नाम सुहंग जीव कर होई ॥
जीव सोहंगम दूसर नाहीं। जीवसोअंश पुरुषको आही॥
शक्ति पुनितीन पुरुषउत्पाना। चेतनिउलंघनिअभयाजाना॥

छंद।

पुरुष सेवावश भये तब अष्टंगहि दीन्ह हो ॥
मानसरोवर जाहु कहिया देहु धर्महि चीन्ह हो ॥
अष्टंगी कन्या हती जेहि रूप शोभा अति बनी ॥
जाहु कन्यामानसरवर करहु रचना अति घनी १५

सोरठा–चौरासी लखजीव, मूलबीजतेहि संग दे ॥
रचना रचहुसजीव, कन्या चलि सिर नायके १५

यह सब दीन्हो आदि कुमारी । मान सरोवर चलि भइ नारी ॥
ततछिन पुरुष सहज टेरावा । धावत सहजपुरुष यहिं आवा॥

पुरुषवचन सहजप्रति ।

जाहि सहज धरम यह कहेहू । दीन्ही वस्तु जस तुम चहेहू ॥
मूल बीज तुम पहँ पठवावा । करहु सृष्टि जसतुव मनभावा॥
मान सरोवर जाहि रहाहू । तहँते होइ हैं सृष्टि उराहू ॥

पुनि सहजका निरञ्जनके ढिग जाना ।

चले सहज तहवाँ तब आये । धर्म धीर जहँ ठाढ रहाये ॥
कहेउ सु वचनपुरुषकोजबहीं । धर्मराय सिर नायो तबहीं ॥

निरञ्जनका मानसरोवरमें अद्याको पाकर मोहवश हो उसे निगल जाना और सत्पुरुषका शाप पाना ।

पुरुष वचन सुन तबही गाजा । मान सरोवर आन विराजा ॥
आवत कामिनि देख्योजबही । धर्मराय मन हरष्यो तबही ॥
कहा देखि अष्टंगी केरी । धर्मराय इतरान्यो हेरी ॥
कहा अनन्त अंत कछु नाहीं । काल मगन ह्वैनिरखत ताही॥
निरखत धर्म सु भयो अधीरा । अंग अंग सब निरख शरीरा॥
धर्मराय कन्या कह ग्रासा । काल स्वभावसुनो धर्मदासा॥
कीन्ही ग्रास काल अन्याई । तब कन्या चितविस्मय लाई॥
ततछण कन्या कीन्हपुकारा । काल निरञ्जन कीन्ह अहारा॥
तबही धर्म सहज लग आई । सहज शून्यतवलीन्ह छुडाई ॥
पुरुष ध्यान कूर्म अनुसारा । मोसनकालकीन्हँ अधिकारा॥
तीन शीशममभच्छण कीन्ह्यो । होसतपुरुष दया भल चीन्ह्यो॥
यही चरित्र पुरुष भल जानी । दीन्ह शापसोकहों बखानी ॥

पुरुषका शाप निरंजन प्रति ।

लच्छ जीव नितग्रासन करहू।सवा लच्छ नित प्रति बिस्तरहू॥

छंद ।

पुनि कीन्ह पुरुषतिवान तिहिकिमि मेटि डारो काल हो
कठिन काल कराल जीवन बहुत करइ बिहाल हो॥
यहि मेटत अब ना बनेमुहिंनालइक सुत षोडसा॥
एकमेटत सबै मिटिहैं वचनडोलअडोलसा ॥१६॥
सोरठा-डोलै बचन हमार, जोअबमेटों धरमका ॥
वचन करौं प्रतिपाल, देश मोर अबनालहैं १६

सत्पुरुषका जोगजीतजीका निरञ्जनके पास उसे मानसरोवरसे निकाल देनेकी आज्ञा देकर भेजना ।

जोगजीत कहँ पुरुषबुलावा । धर्म चरित सबकहि समुझावा॥

सत्पुरुषवचन जोगजीत प्रति ।

जोगजीत तुम बेगि सिधारो। धर्मरायको मारि निकारो ॥
मानसरोवर रहन न पावै । अब यहि देश काल नहिं आवै॥
जाकर रहो धर्म वहि देशा । स्वर्ग मृत्यु पाताल नरेशा ॥
धर्मके उदर माहिं है नारी । तासो कहो निज शब्द सम्हारी॥
उदर फारिके बाहर आवे । कूर्म उदर विदारि फल पावे ॥
धर्मरायसों कहो विलोई । वहै नारि अब तुम्हरी होई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

जोगजीत चल भे सिर नाई। मानसरोवर पहुँचे जाई ॥
जोगजीत कहँ देखा जबहीं । अति भो काल भयंकर तबहीं॥

निरञ्जनवचन जोगजीतप्रति ।

पूछा काल कौन तुम आई । कौन काज तुम यहाँ सिधाई ॥

जोगजीतवचन निरंजनप्रति ।

जोगजीत अस कहे पुकारी। अहो धर्म तुम ग्रासेहु नारी ॥
आज्ञा पुरुष दीन्ह यह मोही। इहिंते बेगि निकारों तोही ॥

जोगजीतवचन अद्याप्रति ।

जोगजीत कन्या सो कहिया । नारी काहे उदरमहँ रहिया ॥
उदर फारि अब आवहु बाहर । पुरुष तेज सुमिरोतेहि ठाहर॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

सुनिके धर्म क्रोध उरः जरेऊ। जोगजीत सो सन्मुख भिरेऊ॥
जोग जीत तब कीन्हे ध्याना । पुरुष प्रताप तेज उर आना॥
पुरुष आज्ञा भइ तेहि काला । मारहु माझ लिलार कराला॥
जोगजीत पुनि तैसो कीन्हा । जस आज्ञापुरुष तेहिदीन्हा ॥

छन्द ।

गहि भुजा फटकार दीन्हों, परेउ लोकत न्यारहो॥
भयो त्रासित पुरुष डरते, बहुरि उठेउ सम्हार हो ॥
निकसि कन्या उदरतेपुनि, देख धर्मंहिअति डरी॥
अब नाहिदेखोंदेसवह, कहौकौनविधि कहवां परी १७
सो०–कामिनिरहीसकाय, त्रसितकालके डर अधिक
रही सोसीस नवाय, आसपासचितवत खडी॥१७॥

निरञ्जनबचन अद्या प्रति ।

कहे धर्म सुनु आदि कुमारी । अब जनिडरपो त्रासहमारी ॥
पुरुष रचा तोहि हमरे काजा । इकमति होय करहुउपराजा ॥
हम हैं पुरुष तुमहि हो नारी । अब जनिडरपो त्रासहमारी ॥

अद्यावचन निरञ्जन प्रति ।

कहे कन्या कस बोलहु बानी। भ्राता जेठ प्रथम हम जानी॥

कन्या कहै सुनो हो ताता। ऐसीविधि जनि बोलहु बाता॥
अब मैं पुत्री भई तुम्हारी। ते उदर मांझ लियो डारी॥
जेठ बंधु प्रथमहिके नाता। अब तो अहो हमारे ताता॥
निरमल दृष्टिअबचितवहुमोही। नहिंतोपापहोय अब तोही॥
मंददृष्टिजनि चितवहु मोही। नातो पाप होय अब तोही॥

निरञ्जनवचन अद्यामति।

कहे निरंजन सुनो भवानी। यह मैं तोहि कहों सहिदानी॥
पाप पुन्य डर हम नहिं डरता। पाप पुन्यके हमहीं करता॥
पाप पुन्य हमहींसे होई। लेखा मोर न लहै कोई॥
पाप पुन्य हम करब पसारा। जो बाझे सो होय हमारा॥
ताते तोहि कहों समुझाई। सिख हमार लो सीस चढाई॥
पुरुषदीनतोहिहमकहँजानी। मानहु कहा हमार भवानी॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

विहँसी कन्यासुनअस बाता। इक मति होय दोइ रंगराता॥
रहस बचनबोली मृदु वानी। नारिनीचबुधिरतिविधिठानी॥
रहस बचन सुनिधरमहरषाना। भोग करनको मनमें आना॥

छंद।

भग नहिं कन्याके हती, असचरितकीन्ह निरंजना॥
नखघातकियेभगद्वारततछिण, घाट उत्पति गंजना॥
नख रेषशोनितचल्या, तिहुँकोसब खास आरंभनी॥
आदिउत्पतिसुनहुधर्मनि, कोउ नहिं जानत जम मनी॥
त्रियवार कीन्ही रति तबै, भयेब्रह्मा विष्णुमहेशहो॥

---

१ यह तो पुरानी प्रतियोंमें ऐसाही है किन्तु नवीनप्रतियोंमें उपर्युक्त दोनो पंक्ति इस प्रकार लिखे हैं, जो विचारपूर्वक प्रसंगोंको पढनेसे ठीक नहीं जान पडता॥

जेठ विधि विष्णु लघु तिहि, तीजे शम्भूशेषहो १८
सोरठा–उत्पतिआदिप्रकाश, यहिविधि तेहिप्रसंगभो ॥
कीन्हो भोगविलास, इकमतिकन्याकालहै १८

भवसागरकी रचना ।

तेहि पीछे ऐसो भो लेखा । धर्मदास तुम करो विवेका ॥

निरञ्जन वचन अद्या प्रति ।

अग्निपवन जलमहिआकाशा । कूर्म उदरते भयो प्रकाशा ॥
पांचो अंसताहि सनलीन्हा । गुण तीनो सीसनसो कीन्हा ॥
यहि विधिभयेतत्वगुणतीनों । धर्मराय तब रचना कीनो ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

गुणततसम करदेविहि दीन्हा । आपन अंश उत्पने कीन्हा ॥
बुन्द तीन कन्या भग डारा । तासँग तीनो अंस सुधारा ॥
पांच तत्त्व गुण तीनो दीन्हा । यहिविधिजगकीरचनाकीन्हा॥
प्रथम बुन्दते ब्रह्मा भयेऊ । रज गुण पंच तत्त्वतेहिदयेऊ ॥
दूजो बुन्द विष्णु जो भयेऊ । सत गुण पंच तत्त्व तिन पयऊ ॥
तीजे बुन्द रुद्र उत्पाने । तमगुण पंच तत्त्व तेहि साने ॥
पंच तत्त्व गुण तीन खमीरा । तीनों जनको रच्यो शरीरा ॥
ताते फिरि २ परलय होई । आदि भेद जाने नहिं कोई ॥
कहै धर्म कामिनिसुन बानी । जो मैं कहूँ लेहु सो मानी ॥
जीव बीज आहै तुव पासा । सो ले रचना करहु प्रकासा ॥
कहै निरंजनपुनि सुनुरानी । अब असकरहू आदिभवानी ॥
त्रय सुतसौंपतोहि कहँदीन्हा । अब हमपुरुषसेवचितलीन्हा ॥
राज करहु तुम लै तिहुँ वारा । भेद न कहियो काहु हमारा ॥
मोर दरश त्रय सुत नहिं पैहैं । जोमुहि खोजत जन्म सिरैहैं ॥

ऐसो मता दिढैहो जानी । पुरुष भेद नहिं पावै प्रानी ॥
त्रय सुतजबहिंहोहिंबुधिवाना । सिंधु मथन दे पठहु निदाना॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति । छंद ।

कहेउ बहुत बुझायदेविहि गुप्त भये तबआहिहो ॥
शून्य गुफहि निवास कीन्हों भेद लहकोताहिहो ॥
वह गुप्त भा पुनि संग सबके मन निरंजनजानिये ॥
मन पुरुष भेद उच्छेद देवे आपु प्रगटआनिये ॥
सोरठा–जीवभयेमतिहीन, परसि अगम सो काल को ॥
जनम जनम भये खीन,मुरुचा कर्म अकर्मको १९
जीव सतावेकाल, नाना कर्म लगायके ॥
आप चलावे चाल; कष्टदेय पुनिजीवको ॥२०॥

सिन्धुमथन और चौदह रत्न उत्पत्तिकी कथा ।

त्रय बालक जबभये सयाने । पठये जननी सिंधु मथाने ॥
बालक माते खेल खिलारी । सिंधुमथन नहिंगयेउखरारी ॥
तेहि अंतर इक भयो तमासा। सो चरित्र बूझो धर्मदासा ॥
धार्‍यो योग निरंजन राई । पवन अरंभ कीन्ह बहुताई ॥
त्यागोपवनरहित पुनि जबही। निकसेउवेदस्वाससंगतबही ॥
स्वास संग आयेउ सो वेदा । बिरलाजनकोइ जाने भेदा ॥
अस्तुति कीन्ह वेदपुनिताहां। आज्ञाकामोहिनिर्गुण नाहां ॥
कह्यो जाय करुसिंधुनिवासा। जेहि भेंटे जैहौ तिहि पासा ॥
उठी आवाज रूप नहिं देखा। जोतिअग दिखलावत भेषा ॥
चलेउ वेद पुनि तेज अपाने । तेज अन्न पुनिविष संधाने ॥
चले वेद तहँवा कहँ जाई । जहँवा सिंधु रचा धर्मराई ॥

पहुँचे वेद तब सिंधु मँझारा। धर्मराय तब युक्ति विचारा ॥
गुप्त ध्यान देविहि समुझावा। सिंधुमथनकहँकसबिलमावा ॥
पठवहु वेगि सिंधु त्रय वारा। दृढकै सोचहु वचन हमारा ॥
बहुरि आपपुनिसिंधुसमाना। देवी कीन्हमथनअनुमाना ॥
तिहुँबालककहकहँसमुझायी। आशिश दे पुनितहां पठायी ॥
पैहो वस्तु सिंधुके माहीं। जाहु बेगि तीनों सुत ताहीं ॥
चलिभौ ब्रह्मा मान सिखाही। दोइ लहुरा पुनिपाछे जाई ॥

छन्द।

त्रय सुत बालखलतचलेज्यों सुभग बाल मरालहो ॥
एकगहिछोडतमहीपुनि एककरगहिचलतलटपटचालहो
क्षणही धावतक्षणस्थिरखडेक्षणभुजहिगरलावहीं ॥
तेही समयकी शोभामलीनहिंवेदताकहँ गावहीं ॥
सोरठा—गये सिंधुके पास, भयेठाढ तीनो जने ॥
युक्ति मथनपरकास, एक एकको निरखहीं ॥२१॥

प्रथम वार सिन्धुमथन।

तीनों कीन्ह मथन तब जाई। तीन वस्तु तीनौ जन पाई ॥
ब्रह्मा वेद तेज तेहि छोटा। लहुरा तासु मिलेविषखोटा ॥
भेंटि वस्तुत्रय तीनों भाई। चलिभये हषकहत जहँ माई ॥
मातापहँ आये त्रय बारा। निज२वस्तु प्रगट अनुसारा ॥
माता आज्ञा कीन्ह प्रकाशा। राखु वस्तुतुम निज२पासा ॥

द्वितीय वार सिंधुमथन।

पुनि तुममथहुसिंधु कहँ जाई। जो जिहि मिलेलेहुसो भाई ॥
कीन्हचरितअसआदिभवानी। कन्या तीन कीन्हउत्पानी ॥
कन्या तीन उत्पान्यो जबहीं। अंस वारिमहँनायो सबहीं ॥

सब माताके आगे कीन्हा । माताबांटितिन्हनकहँदीन्हा ॥
पठयो सिंधुमाहिं पुनि ताहीं । त्रय सुत मर्मसोजानतनाहीं ॥
पुनितिन मथनसिंधुकोकीन्हा । भेंट्योकन्याहर्षितह्वै लीन्हा ॥
कन्या तीनहु लीन्हें साथा । आ जननी कहँनायउमाथा॥
माता कहे सुनहु सुत मोरा । यह तो काज भयेसब तोरा॥
एकएकबांटितीनहुको दीन्हा । करहुभोगअसआज्ञाकीन्हा ॥
सावित्री ब्रह्मा तुम लेऊ । है लक्ष्मी..विष्णु कहँ देऊ ॥
पारवती शंकर कहँ दीन्ही । ऐसी माता आज्ञा कीन्ही ॥
तीनउ जन लीन्ही सिर नाई । दीन्ह अद्या जसभाग लगाई॥
पाई कामिनि भये अनंदा । जस चकोर पाये निशिचंदा॥
काम बसी भए तीनो भाई । देव दैत दोनों उपजाई ॥
धर्मदास परखो यह बाता । नारी भयी हती सो माता॥
माता बहुरि कहे समझायी । अब फिर सिंधु मथो तुम जाई॥
जो जेहि मिलै लेहु सो जाई । अब जनिकरो विलंब तुम भाई॥

तृतीय वार सिन्धुमथन।

त्रयसुतचले तबमाथनिवायी । जो कछुकहेउ करबहमजायी॥
मथ्योसिंधुकछुविलंब न कीन्हा । मिलावेदसो ब्रह्मै लीन्हा ॥
चौदह रतनकी निकसी खानी । ले माता पहँ पहुँचे आनी॥
तीनहु बन्धु हरषित ह्वै लीन्हा।विष्णुसुधापायउहरविषदीन्हा॥

अद्याका तीनों पुत्रोंको सृष्टि रचनेकी आज्ञा देना और सब मिलकर पांच खानकी उत्पत्ति करना।

पुनि माता अस वचन उचारा।रचहु सृष्टि तुम तीनों वारा ॥
अंडज उत्पति कीन्हीं माता । पिंडज ब्रह्मा कर उत्पाता ॥
ऊष्मजखानि विष्णु व्यवहारा।शिव अस्थावर कीन्हपसारा ॥
चौरासीलखयोनिन कीन्हा । आधाजल आधाथलदीन्हा ॥

एक तत्त्वअस्थावर जाना। दोय तत्त्व ऊष्मज परवाना॥
तीन तत्त्व अंडज निर्मायी। चार तत्त्व पिंडज उपजायी॥
पांच तत्त्व मानुष विस्तारा। तीनों गुण तेहि माहिं सवाँरा॥

ब्रह्माका वेद पढकर निराकारका पता पाना।

ब्रह्मावेद पढन तब लागा। पढत वेद तब भा अनुरागा॥
कहे वेद पुरुष इक आही। है निरंकार रूप न ताही॥
शून्यमाहिं वहि जोत दिखावे। चितवत देह दृष्टि नहिं आवे॥
स्वर्ग सीस पग आहि पाताला तेहि मत ब्रह्मा भौ मतवाला॥
चतुरानन कहे विष्णु बुझावा। आहि पुरुष मोहि वेद लखावा॥
पुनि ब्रह्मा शिवसों असकहई। वेद मथन पुरुष एक अहई॥

ब्रह्मावचन विष्णु प्रति।

अहै पुरुष इक वेद बतावा। वेद कहे हम भेद न पावा॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

तब ब्रह्मा माता पहँ आवा। करि प्रणाम तब टेके पांवा॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति।

हे माता मोहि वेद लखावा। सिरजनहार और बतलावा॥

छंद।

ब्रह्मा कहे जननी सुनो केहहु कहा कंत तुम्हार है॥
कीजै कृपा जनि मोहि दुरावो कहां पिताहमार है॥

अद्यावचन ब्रह्माप्रति।

कहे जननी सुनहुब्रह्माकोउ नहिं जनक तुम्हारहो॥
हमहिते भई सब उतपति हमहि सब कीन सम्हार हो२१

ब्रह्मावचन अद्या प्रति।

सोरठा-ब्रह्मा कहे पुकार,सुनु जननी तैं चित्त दे।
कहत वेद निरुवार, पुरुषएक सोगुप्तहै२२॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति।

कहे अद्या सुनु ब्रह्मकुमारा। मोसे नाहिं कोउ स्रष्टा न्यारा॥
स्वर्ग मृत्यु पाताल बनाई। सात समुन्दर हम निरमाई॥

ब्रह्मावचन अद्या प्रति।

मानोवचनतुमहिसबकीन्हा। प्रथम गुप्ततुमकस रख लीन्हा॥
जबै वेद मुहि कहै बुझाई। अलख निरञ्जन पुरुष बताई॥
अबतुमआपबनो करतारा। प्रथम काहे न किया विचारा॥
जोतुमवेदआप कथिराखा। तोकसतुमअलखनिरञ्जनभाखा॥
आपे आप आप निरमाई। काहे न कथन कीन तुम भाई॥
अब मोसन छल जनि करहू। सांचे सांच सब कहि उच्चरहू॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

जब ब्रह्मायहिविधिहठ ठाना। तब अद्या मन कीन्ह तिवाना॥
केहि विधि यहिकहूँ समझाई। विधि नहिं मानत मोरबडाई॥
जो यहिकहौं निरञ्जन बाता। केहिविधिसमझेयहविख्याता॥
प्रथम कह्यो निरञ्जन राई। मोर दरश काहू नहिं पाई॥
अबैजोयहीअलखलखावों। केहिविधिवहिताकोदिखलाओं॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति।

असविचारपुनिब्रह्मैसमझावा। अलखनिरञ्जननहिंदरसदिखावा।

ब्रह्मावचन अद्या प्रति।

ब्रह्मा कहे मोहिं ठौर बताओ। आगापीछा जनितुमलाओ॥
मैं नहिं मानो तुम्हरी बाता। ऐसी बात न मोहि सुहाता॥
प्रथम तुम मुहिदीन भुलावा। अब तुम कहो न दरसदिखावा॥
तासु दरस न पैहो पूता। ऐसी बात कहो अजगूता॥

छंद।

दरस दिखाय तत्कालदीजे, मोहिनभरोस तुम्हारहो
संशयनिवार यहिकाल दीजे, कीजे न बिलंब लगार हो

अष्टावचन ब्रह्मा प्रति ।

कहे जननी सुनो ब्रह्मा कहौं तोसों सत्तही ॥
मात स्वर्गहै माथ ताकोचरण पताल समही ॥२२॥
सोरठा-लेहुपुष्पतुम हाथ,जोइच्छा तेहि दरशकी॥
जायनवाओमाथ, ब्रह्माचलेशिर नाइकै ॥२३॥
जननी गुन्यो वचन चितमाहीं।मोरिकहीयहमानति नाहीं ॥
या कहँ वेद दीन्ह उपदेशा । पै दरस ते नहिं पावे भेशा ॥
कह अष्टंगि सुनोरे बारा । अलख निरंजन पिता तुम्हारा॥
तासु दरश नहिं पैहो पूता । यह मैं वचन कहौं निजगूता ॥
ब्रह्मा सुनिव्याकुलह्वैधावा । परसन सीस ध्यानहिय लावा॥
ब्रह्मा चले जननि सिर नाई । सीस परसि आवे तोहि ठाई ॥
तुरतहि ब्रह्मा दीन्ह रिंगायी । उत्तर दिशा बेगि चलि जायी ॥
आज्ञामांगिविष्णुचलेबाला । पिता दरशको चले पाताला॥
इत उतचितयमहेश न डोला।सेवा करत कछू नहिं बोला ॥
तेहिशिवमन असचित अभावा।सेवा करन जननि चित लावा॥
यहिविधिबहुतदिवसचलिगयेऊ।माता सोचपुत्रकहकियेऊ ॥

विष्णुका पिताके खोजसे लौटकर पिताके चरण तक न पहुँचनेका वृत्तान्त कहना ।

प्रथमविष्णुजननीढिग आये । अपनी कथा कहि समुझाये॥
भेंटयो नाहिमोहिमगु ताता । विषज्वालास्यामल भौगाता॥
व्याकुलभयउतबैफिरिआवा । पिता पगु दरस मैं नहिं पावा॥
सुनि हरषितभइआदिकुमारी।लीन्हविष्णुकहँनिकटदुलारी ॥
चूमेउ बदनसीसदियो हाथा। सत्य सत्य बोलेउसुत बाता॥

धर्मदासवचन कबीर प्रति ।

कहेधरमनि यहसंशयबीती । साहब कहहु ब्रह्माकी रीती ॥
पितासीसतिनपरसनकीन्हा।कि होय निरास पीछेपगदीन्हा॥

छंद।

गयउ ब्रह्मा सीस परसन कथा ता दिनकी कहो॥
भयो दिष्ट मेराव कि नहिं तासु दरसन तिनलहो॥
यह बरनि सब कहोसतगुर एक एक विलोयके॥
निजदासजानिपरगासकीजेधरहु निजजनि गोयके२३

सोरठा-प्रभु हम हैं तुव दास,जन्मकृतारथ मोर करि॥
करहु वचन परगास, तेहि पीछेजो चरितभो॥२४॥

पिताके खोजमें गये हुए ब्रह्माकी कथा। कबीरवचन धर्मदास प्रति।

धरमदासमुहिअतिप्रियअहहू। कहों सँदेस परखि दृढ गहहू॥
चलत ब्रह्मा तब वार न लावा। पितादासकहँ अति मनभावा॥
तेहि स्थान पहुँचि गे जाई। नहिंतहँरबिशशि शून्यरहाई॥
बहुविधि अस्तुतिकरेबनायी। ज्योति प्रभाव ध्यान तहँलाई॥
ऐसे बहु दिन गये बितायी। नहिं पायो ब्रह्मादरश पितायी॥
शून्यध्यानयुग चार गमावा। पिता दरस अजहूँ नहिं पावा॥

ब्रह्माके लिये अद्याकी चिन्ता।

ब्रह्मा तात दरश नहिं पाई। शून्य ध्यानमहँ जुग बहु जाई॥
माता चिंता करत मन माहीं। जेठ पुत्र ब्रह्मा रहु काहाँ॥
किहिविधिरचनारचहुँ बनाई। ब्रह्मा आवे कौन उपाई॥

गायत्री उत्पत्ति।

उबटि शरीर मैल गहि काढी। पुत्री रूप कीन्ह रचि ठाढी॥
शक्तिअंशनिज ताहिमिलावा। नाम गायत्री ताहि धरावा॥
गायत्री मातहि सिर नावा। चरनचूमि निजसीसचढावा॥

गायत्रीवचन अद्याप्रति।

गायत्री विनवै कर जोरी। सुनु जननी इकविनतीमोरी॥
कोन काज मो कहँ निर्माई। कहो वचन लेउँ सीस चढाई॥

अद्यावचन गायत्री प्रति ।

कहे अद्या पुत्री सुनु बाता । ब्रह्मा आहिजेठहि तुवभ्राता ॥
पिता दरशकहँ गयो अकाशा।आनौ ताहि वचन परकाशा ॥
दरश तातकर वह नहिं पावे । खोजत खोजत जन्म गमावे ॥
जौने विधिते इहँवा आई । करो जाय तुम तौन उपाई ॥

गायत्रीका ब्रह्माके खोजमें जाना । कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

चलि गायत्री मारग आई । जननी वचन प्रीतिचितलाई ॥
चलत भई मारग सुकुमारी । जननीबचन ध्यान उरधारी ॥

छंद ।

जाय देख्योचतुरमुख कहँ नाहि पलक उघारई ॥
कछुक दिन सो रही तहँवा बहुरी युक्ति विचारई ॥
कौन विधि यह जागिहैअबकरोंकौनउपाय हो ॥
मन गुनितसोचबहुतविधि ध्यानजननी लाय हो २४

ब्रह्माको जगानेके लिये अद्याका गायत्रीको युक्ति बताना ।

सोरठा–अद्या आयसुपाइ, गायत्री तवध्यानमहँ ॥
निज कर परसेहु जाइ, ब्रह्मा तबहीं जागिहैं ॥

गायत्री पुनि कीन्ही तैसी । माता युक्ति बतायी जैसी ॥
गायत्री तव चित्त लगाई । चरणकमल कहँ परसेउ जायी॥

ब्रह्माका जागकर गायत्रीपर क्रोध करना ।

ब्रह्मा जागध्यान मन डोला।व्याकुलभयौ बचन तब बोला॥
कवन अहै पापिन अपराधी । कहा छुडायहु मोरि समाधी॥
शाप देहुँ तोकहँ मैं जानी । पिताध्यानमोहिखंडयोआनी॥

गायत्रीवचन ब्रह्मा प्रति ।

कहि गायत्री मोहि न पापा । बूझि लेहु तब देहहु शापा ।

कहों तोहिसो सांची बाता। तोहि लेन पठयी तुव माता ॥
चलहु बेगि जनि लावहु बारे। तुम विन रचना को बिस्तारे ॥

ब्रह्मावचन गायत्री प्रति।

ब्रह्मा कहे कौन विधि जाऊं। पिता दरस अजहूँ नहिं पाऊं ॥

गायत्रीवचन।

गायत्री कह दरस न पैहो। बेगिचलहु नहिं तो पछतैहो ॥

ब्रह्माका गायत्रीको झूठी साक्षी देनेको कहना और गायत्रीका ब्रह्मासे रति करनेकी बात कहना।

ब्रह्मा कहे देहु तुम साखी। परस्यो सीस देख मैं आंखी ॥
ऐसे कहो मातु समुझायी। तो तुम्हरे सँग हमचलि जायी॥

गायत्री वचन।

कह गायत्री सुन श्रुति धारी। हम नहिं मिथ्या बचन उचारी॥
जो मम स्वारथ पुरवहु भाई। तो हम मिथ्या कहब बनाई ॥

ब्रह्मावचन।

कह ब्रह्मा नहिं लखी कहानी। कहौं बुझाय प्रगटकी बानी॥

गायत्रीवचन।

कह गायत्री देहु रति मोही। तो कह झूठ जिताऊं तोही ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

गायत्रि कहे है यह स्वारथ। जानि कहो मैं पुन परमारथ ॥
सुनि ब्रह्मा चित करै बिचारा। अब का यत्नकरहुँ इहि बारा॥

छंद।

जो विमुख या कह करों अब तो नहीं बन आवई॥
साखि तो यह देय नाहीं जननि मोहि लजावई ॥
यहाँ नाहीं पिता पायो भयो न एको काज हो ॥
पाप सोचत नहिं बनै अब करौं रति विधिसाजहो२५

सोरठा–कियो भोग रति रंग, विसरयोसो मन दरशको
दोउ कहँ बढयोउमंग, छल मति बुद्धि प्रकाश किये२६

सावित्रीउत्पत्तिकी कथा ।

कह ब्रह्मा चल जननी पासा । तब गायत्री वचन प्रकाशा ॥
औरौ करौ युक्ति इक ठानी । दूसरि साखि लेहु उत्पानी ॥
ब्रह्मा कहे भली है बाता । करहु सोइ जेहि मानै माता ॥
तब गायत्री यतन बिचारा । देह मैल गहि कीन्ह नियारा ॥
कन्या रचि निजअंशमिलावा। नाम सावित्री तासु धरावा ॥
गायत्री तिहि कह समुझावा । कहियो दरश ब्रह्मा पितु पावा॥
कह सावित्री हम नहिं जानी। झूठ साखि दै आपनि हानी ॥
यह पुनिदोउकहँचिंताव्यापा । यह तो भयो कठिन संतापा ॥
गायत्री बहु विधि समझायी । सावित्रीके मन नहिं आयी ॥
पुनि गायत्री कहा बुझाई । तब सावित्री बचन सुनाई ॥
ब्रह्मा कर मोसों रति साजा । तो मैं झूठ कहों यहिकाजा ॥
गायत्री ब्रह्महि समुझावा । दै रति या कहँ काज बनावा ॥
ब्रह्मा रति सावित्रिहि दीन्हा । पाप मोट आपन शिर लीन्हा॥
सावित्री कर दूसर नाऊं । कहि पुहपावति वचनसुनाऊं ॥
तीनों मिलिके चलि भे तहवाँ। कन्या आदि कुमारी जहवाँ ॥

ब्रह्माका गायत्री और सावित्रीके साथ माताके पास पहुँचना और सबका शाप पाना ।

करि प्रणाम सन्मुख रहे जाई । माता सब पूछी कुशलाई ॥

अद्यावचन ब्रह्मा प्रति ।

कहु ब्रह्मा पितु दरशन पाय । दूसरि नारि कहांसे लाये ॥

ब्रह्मावचन ।

कह ब्रह्मा दोउ हैं साखी । परस्यो सीस देख इन आंखी ॥

अद्यावचन गायत्री प्रति ।

तब माता बूझे अनुसारी । कहु गायत्री वचन विचारी ॥
तुम देखा इन दर्शन पावा । कहो सत्य दर्शन परभावा ॥

गायत्रीवचन ।

तब गायत्री बचन सुनावा । ब्रह्मा दर्श सीस पितु पावा ॥
मैं देखा इन परसेउ शीशा । ब्रह्महि मिले देव जगदीशा ॥

छंद ।

लेइपुहुपपरसेउ शीश पितु इन दृष्टिमैं देखत रही ॥
जल ढार पुहुप चढाय दीन्ह हे जननि यहहैसही ॥
पुहुपते पुहुपावती भयी प्रगट ताही ठामते ॥
इनहु दर्शन लह्यो पितुको पूछहू इहि वामते ॥२६॥
हो[1] जननी यह है सही तुम पूछि लो पुहुपावती ॥
सबहि साँच मैं तोसो कहूँ नहिं झूठ है एको रती ॥

अद्यावचन पुहुपावती प्रति ।

माता कहै पुहुपावतीसो कहो सत्यहि मो सना ॥
जो चढेसीसहिपिताकेतुमबचन बोलहुततखना २७
सोरठा—कहुपुहुपावति मोहि,दरशकथानिरवारके ॥
यह मैंपूछों तोहि, किमि ब्रह्मा दरशनकिये २७

सावित्रीवचन ।

पुहुपावती[2] वचन तब बोली । माता सत्य वचन नहिं डोली ॥
दर्शन सीस लह्यो चतुरानन । चढे सीस यह धर निश्चयमन ॥

---

१ यह छन्द पुरानी प्रतियोंमें नहीं है ।

२ पुराने ग्रन्थोंमें यह चौपाई इस प्रकार है ।

सावित्री अस बचन उचारी * मानो निश्चल बचन हमारी ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

साख सुनत अद्याअकुलानी । भाअचरज यह मर्म न जानी ॥

अद्याकी चिन्ता ।

अलख निरंजनअसप्रण भाखी । मोकहँ कोउ न देखै आंखी ॥
ये तीनहुँ कस कहहिं लबारी । अलख निरंजनकहहुसम्हारी॥
ध्यान कीन्ह अष्टंगीतिहि क्षण । ध्यानमाहिंअसकह्योनिरंजन॥

निरञ्जनवचन ।

ब्रह्मा मोर दरश नहिं पाया । झूठि साखिइनआनदिवाया ॥
तीनो मिथ्या कहा बनाई । जनि मानहु यह है लबराई ॥

अद्याका ब्रह्माको शापदेना ।

यह सुनि माता कीन्हें दापा । ब्रह्मा कहँ तब दीन्हो शापा ॥
पूजा तोरि करै कोइ नाहीं । जो मिथ्या बोलेउ मम पाहीं ॥
इकमिथ्याअरुअकरमकीन्हा । नरक मोट अपने शिर लीन्हा॥
आगे है जो शाख तुम्हारी । मिथ्या पाप करहिं बहु भारी॥
प्रगट करहिं बहु नेम अचारा । अंतर मैल पाप विस्तारा ॥
विष्णु भक्तसों करहिं हँकारा । ताते परिहैं नरक मँझारा ॥
कथा पुराण और हिं समुझैहैं । चाल बिहून आपन दुख पैहें॥
उनसे और सुनैं जो ज्ञाना । करि सो भक्ति कहों परमाना ॥
और देवको अंश लखैहैं । औरन निंदि काल मुख जैहैं ॥
देवन पूजा बहु विधि लैहैं । दछिना कारण गला कटै हैं ॥
जा कह शिष्य करैं पुनि जायी । परमारथतिहि नाहिं लखायी॥
परमारथके निकट न जैहैं । स्वारथ अर्थ सबै समुझैहैं ॥
आप स्वार्थी ज्ञान सुनैहै । आपनि पूजा जगत दृढैहैं ॥
आपन पूजा जगहि दिढायी । परमारथके निकट न जायी॥
आप ऊंच औरहि कहँ छोटा । ब्रह्मा तोर सखा होइ खोटा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

जबमाताअस कीन्ह प्रहारा। ब्रह्मा मूर्छि मही कर धारा॥

अब्याका गायत्रीको शाप देना।

गायत्री जान्यो तिहि वारा। हुइ है तोर पंच भरतारा॥
गायत्री तोरहोइवृषभ भतारा। सात पांच और बहुत पसारा॥
धरऔतारअखजतुम खायी। बहुत झूठ तुम वचन सुनायी॥
निजस्वारथतुममिथ्याभाखी। कहाजानि यह दीन्हीं साखी॥
मानि शाप गायत्री लीन्ही। सावित्रिहितबचितवनकीन्ही॥

अब्याका सावित्रीको शाप देना।

पुहुपावतिनिजनामधरायेहु। मिथ्याकहनिजजन्मनशायेहु॥
सुनहुपुष्पावतितुम्हरोविश्वासा।नहिंपुजिहैंतुम्हसेकछुआशा॥
होय कुगंध ठौर तव बासा। भुगतहु नरककामगहि आसा॥
जो तोहि सींचलगावे जानी।ताकर होय वंशकी हानी॥
अब तुमजाय धरो औतारा। क्योडा केतकि नाम तुम्हारा॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति। छंद।

भये शापवशतीनोंविकलमतिहीनछीन कुकर्मते।
यह काल कला प्रचंडकामिनिडस्योसब कहँचर्मते
ब्रह्मादिशिवसनकादिनारदकोउन बचि भागि हो॥
सुनुधरमनिविरल बाचे शब्द सतसोलगि हो २८॥
सोरठा-सत्य शब्द परताप,कालकला व्यापे नहीं॥
निकट न आवै पाप,मन वच कर्म जो पद गहे२८

शाप देनेपर अब्याका पश्चात्ताप और निरञ्जनके डरसे डरना।

शाप तीनौको दैलियो मनमाहि तब पछतावई॥
कस करहिमोहि निरञ्जनापल छमा मोहि न आवई

निरञ्जनका अद्याको शाप देना ।

अकाशबानी तबै भयीयहु कहाकीन्ह भवानिया ॥
उत्पत्तिकारणतोहिपठायी कहा चरित यह ठानिया
सोरठा–नीचहि ऊंच सिताय,बदल मोहि सोपावई
द्वापर युग जब आय,तुमहिं पंच भर्तार हो॥ २९ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति अद्याका निडर होना ।

शापओयलजबसुनेउभवानी । मनसनगुने कहा नहिं बानी ॥
ओयलप्रभावशाप हम पाया । अबकहाकरबनिरंजनराया ॥
तोरे वस परी हम आई । जस चाहो तस करो उपाई॥

विष्णुका गौरसे श्याम होनेका कारण ।

अद्यावचन विष्णु प्रति ।

पुनिमाता विष्णु दुलारा । सुनहु पुत्र इक वचन हमारा ॥
सत्य सत्य तुम कहो बुझाई । पितुपद परसन जब गै भाई ॥
प्रथम हुतो तुव गौर शरीरा । कारण कौन श्याम भए धीरा ॥

विष्णुवचन अद्या प्रति ।

आज्ञा पाय हम तत्काला । पितु पद परसनचलेपताला ॥
अक्षत पुहुप लीन्ह करमाहीं । चले पताल पंथ मग जाहीं ॥
पहुँचि शेषनाग पहँ गयऊ । विषक तेज हम अलसयऊ ॥
भयो श्यामविषतेजसमावा । भइ अवाजअसवचनसुनावा ॥
अहोविष्णु माता पहँ जाई। बचन सत्य कहियो समझाई ॥
सतयुग त्रेता जैहै जबही । द्वापर है चौथा पद तबही ॥
तब तुम होहु कृष्ण अवतारा। लैहो ओयलसोकहीबिचारा ॥
नाथहु नाग कलिंद्री जाई । अब तुम जाहु विलम्ब न लाई॥
ऊंच होइके नीच सतावे। ताकर ओएलमोहि सो पावे ॥

जो जिव देइ पीर पुनिकाहू । हम पुनि ओएलदिवावैताहू ॥
पहुँचे हम तब तुव पासा । कीन्हेउ सत्यवचन परकासा॥
भेटेउ नाहिं मोहिपद ताता । विष ज्वाला साँवल भोगाता॥
व्याकुलभयोतबैफिरि आयो । पितु पद दर्शन मैं नहिं पायो॥

अद्याका विष्णुको ज्योतिका दर्शन कराना ।

इतना सुनिहरषितभइ भाई । लीन्ह विष्णु कहँ गोद उठाई॥
पुनिअसकहेउआदिभवानी । अब सुनहुपुत्रप्रिय ममबानी ॥
देखपुत्रतोहिंपिता भिटावों । तोरे मन कर धोख मिटावों ॥
प्रथमहिं ज्ञान दृष्टिसों देखो । मोर बचन निज हृदय परेखो॥
मनस्वरूप करता कहँ जानो । मनते दूजा और न मानो ॥
स्वर्ग पताल दौर मन केरा । मन अस्थिरमनअहै अनेरा ॥
क्षणमहँ कलाअनंतदिखावे । मनकहँ देख कोइ नहिं पावे॥
निराकार मनहीको कहिये । मनकी आशदिवसनिशिरहिये॥
देखहुपलटिशून्यमहँ जोती । जहवाँ झिलमिलझालर होती॥
फेरहु श्वासगगन कहँ धाओ।मार्ग अकाशहिध्यान लगाओ ॥
जैसे माता कहि समुझावा । तैसे विष्णु ध्यान मन लावा ॥

छंद ।

पैठि गुफा ध्यान कीन्हो श्वास संयम लायके ॥
पवन धूँका दियो जबते गँगन गरज्यो आयके ॥
बाजासुनत तब मगनभा पुनिकीन्ह मन कसख्यालहो
शून्य स्वेतपीतसब्जलाल दिखायरंगजंगालहो ३०
सोरठा–तेहि पीछेधर्मदास, मन पुनि आपदिखायऊ॥
कीन्ह ज्योति परकास, देखिविष्णु हर्षितभये ३०

मातहि नायो शीश, बहु अधीन पुनि विष्णु भा॥
मैं देखा जगदीश, हे जननी परसाद तुव ॥ ३१ ॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास गहि टेके पाया । हे साहिब इक संशय आया ॥
कन्या मनकोध्यान बतावा । सो यह सकल जीव भरमावा॥

सद्गुरुवचन ।

धर्मदास यहकाल स्वभाऊ । पुरुष भेद विष्णु नहिं पाऊ ॥
कामिनिकी यह देखहु बाजी । अमृत गोय दियोविषसाजी ॥
जोत काल दूजाजनि जानहु । निरखिधर्मसत्यहिंउरआनहु ॥
प्रगट सु तोहिं कहों समुझाई । धर्मदास परखहु चितलायी ॥
जस परगट तस गुप्त सुभाऊ । जोरह हृदयसों बाहर आऊ ॥
जब दीपक बारै नर लोई । देखहु ज्योति सुभावविलोई ॥
देखतज्योति पतंग हुलासा । प्रीति जान आवै तिहिपासा॥
परसत होवे भसम पतंगा । अन जाने जरि मरहिमतंगा॥
ज्योतिस्वरूपकालअसआही।कठिन कालवह छाडतनाहीं ॥
कोटि विष्णुऔतारहि खाया।ब्रह्मा रुद्रहि खाय नचाया ॥
कौन विपति जीवनकीकहऊं।परखिवचननिजसहजहिरहऊं ॥
लाख जीव वह नित्यहि खाई।अस विकरालसोकालकसाई ॥

धर्मदास बचन ।

धर्मदास कह सुनहु गुसांई । मोरे चित्त संशय अस आई॥
अष्टंगीहि पुरुष उत्पानी । जिहिविधिउपजीसोमैंजानी ॥
पुनि वहिग्रास लीन्हधर्मराई । पुरुष प्रताप सु बाहर आई ॥
सो अष्टंगीअस छल कीन्हा । गोइसि पुरुष प्रगटयमकीन्हा॥
पुरुष भेद नहिं सुनतबतावा । काल निरंजन ध्यान करावा॥
यह कस चरितकीन्ह अष्टंगी । तजापुरुष भई कालकि संगी ॥

सद्गुरुवचन ।

धर्म सुनहु जन नारि सुभाऊ । अब तुहिप्रगट वरणिसमझाऊ ॥
होय पुत्री जेहि घर माहीं । अनेक जतन परितोष ताही ॥
वस्त्र भक्ष सुख सेज निवासा । घर बाहर सबतिहि विश्वासा ॥
यज्ञ कराय देय पितु माता । बिदाकीन्ह हित प्रीतिसोंताता ॥
गयी सुता जब स्वामी गेहा । रात्यो तासु संग गुण नेहा ॥
माता पिता सबै बिसरावा । धर्मदास अस नारिस्वभावा ॥
ताते अद्या भई विगानी । कालअंग ह्वै रही भवानी ॥
ताते पुरुष प्रगटने लायी । काल रूपविष्णुहिदिखलायी ॥

धर्मदासवचन कबीर प्रति ।

हे साहब यह जान्यो भेदा । अब आगेका करहु उछेदा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

पुनि माता कहिविष्णुदुलारा । मरदयो मान जेठ निजबारा ॥
अहो विष्णु तुम लेहु अशीशा । सब देवनमें तुमहीं ईशा ॥
जो इच्छा तुम चितमें धरि हौ । सो सब तोर काजमैं करिहौं ॥

मायाका विष्णुको सर्वप्रधान बनाना ।

प्रथम पुत्र ब्रह्मा दुरि गयऊ । अकरम झूठ ताहि प्रिय भयऊ ॥
देवन श्रेष्ठ तुमहिं कहँ मानहिं । तुम्हरी पूजा सब कोइ ठानहिं ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

कृपा बचन अस मातै भाखा । सबते श्रेष्ठ विष्णु कहँ राखा ॥
माता गयी रुद्रके पासा । देख रुद्र अति भये हुलासा ॥

अद्याका महेशको वरदान देना ।

पुनि लहुरा कहँ पूछे माता । तुम शिवकहो हृदयकीबाता ॥
माँगहु जो तुम्हरे चित भावे । सो तोंहि देउँ माता फुरमावे ॥
दोइ पुत्रन कहँ मता दृढावा । माँग महेश जोइ मन भावा ॥

महेशवचन ।

जोरि पानि शिव कहबे लीन्हा। देहु जननि जो आज्ञा कीन्हा॥
कबहिं न विनसे मेरी देही। हे माता माँगों वर एही ॥
हे जननी यह कीजे दाया। कबहुँ न विनशै मेरी काया॥

अष्टावचन ।

कह अष्टंगी अस नहिं होई। दूसर अमर भयो नहिं कोई ॥
करहु योग तप पवन सनेहा। रहे चार युग तुम्हरी देहा ॥
जौलौं पृथ्वि अकाश सनेही। कबहुँ न बिनशे तुम्हरी देही॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास विनती चितलाई। ज्ञानी मोहि कहो समुझाई॥
यह तो सकल भेद हम पायी। अब ब्रह्माको कहो उथायी ॥
अष्टा शाप ताहि कहँ दीन्हा। तेहि पीछे ब्रह्मा कस कीन्हा॥

कबीरवचन ।

विशुन महेश जबै वर पाये। भये आनन्द अतिहि हरषाये॥
दोनों जने हरष मन कीना। ब्रह्मा भयो मान मद हीना ॥
धर्मदास मैं सब कुछ जानों। भिन्न २ कर प्रगटबखानों ॥

शाप पानेक कारण दुःखित हो ब्रह्माका विष्णुके पास जाकर
अपना दुःख कहना और विष्णुका उसे आश्वासन देना ।

ब्रह्मा मनमें भयो उदासा। तब चलि गयो विष्णुके पासा॥

ब्रह्मावचन विष्णु प्रति ।

जाय विष्णुसे विनती ठाना। तुम हो बंधु देव परधाना॥
तुमपर माता भई दयाला। शापविवश हम भये बिहाला॥
निज करनी फल पायेउ भाई। किहि विधि दोष लगाऊं माई॥
अब अस जतन करोहोभ्राता। चले परिवार वचन रहे माता॥

विष्णुवचन ।

कहे विष्णु छोडो मन भंगा। मैं करिहौं सेवकाई संगा ॥

तुम जेठे हम लहुरे भाई। चित संशय सब देहु बहाई॥
जो कोइ होवे भक्त हमारा। सो सेवै तुम्हरो परिवारा॥

छंद।

जग माहि ऐसदिढाइ हौं फलपुन्यआशाजोयहो॥
यज्ञ धर्म रु करे पूजा द्विजबिनानहिं होय हो॥
जो करे सेवाद्विजनकी तेहि महापुन्य प्रभाव हो॥
सो जीव मोकहँ अधिक प्यारे राखिहौंनिजठावहो३१

कबीर वचन धर्मदास प्रति।

सोरठा–ब्रह्मा भये आनंद; जबहिविष्णुअसभासेऊ॥
मेटेउ चितकर द्वंद; सखा मोरसबसुखीभौ॥३२॥

कालप्रपंच।

देखहु धर्मनि काल पसारा। इन ठग ठग्यो सकल संसारा॥
आशा दै जीवन बिलमावे। जन्म जन्म पुनि ताहि सतावै॥
बलि हरिचंद बेनु बइरोचन। कुंती सुतऔरो महि सोचन॥
ये सब त्यागी दानि नरेशा। इन कहँ लै राखे केहि देशा॥
जस गंजन इन सबकीकीन्हा। सो जग जाने काल अधीना॥
जानत है जग होय न शुद्धी। कालअमरबलसबकीहरबुद्धी॥
मन तरंगमें जीव भुलाना॥निज घर उलटि न चीन्ह अजाना॥

धर्मदासवचन।

धर्मदास कह सुनो गुसाई। तबकी कथा मोहि समझाई॥
तुम प्रसाद जमको छल चीन्हा। निश्चयतुम्हरेपदचितदीन्हा॥
भव बूडत तुमही गहि राखा। शब्द सुधारस मोसन भाखा॥
अब वह कथा कहो समुझाई। शाप अन्त किय कौन उपाई॥

कबीरवचन धर्मदासप्रति। गायत्रीके अद्याको शाप देनेका वृत्तान्त।

धर्मनितुम सन कहों बखानी। भाषों ज्ञान अगमकीबानी॥
मातु शाप गायत्री लीन्हा। उलटिशापपुनिमातहिंदीन्हा॥
हम जो पांच पुरुषकी जोई। पांचोंकी तुम माता होई॥
बिना पुरुष तू जनि है बारा। सो जानही सकल सनसारा॥
दुहुँन शाप फल पायो भाई। उगरह भयो देह धरि आई॥

जगत्की रचनाका विशेष वृत्तान्त।

यह सब द्वंद बाद है गयऊ। तब पुनि जगकीरचनाभयऊ॥
चौरासी लख योनिन भाऊ। चार खानिचारिहु निर्माऊ॥
छंद-प्रथम अंडजरच्यो जननी चतुर मुख पिंडज कियो
विष्णु ऊष्मज रच्यो तबही रुद्रअस्थावरलियो॥
लीन्ह रचि जेहि खानि चारो जीव बंधनदीन्हहो॥
होन लागी कृषीकारण करणकर्ताचीन्ह हो॥२२॥
सोरठा-यहिविधिचारोंखानि, चारहुदिशिविस्तार किये।
धर्मदास चित जानि, वाणी चारिउ चारको॥२३॥

धर्मदास वचन कबीर प्रति।

धर्मनि कहें जोरि युगपानी। तुम सतगुरुयह कह्यो बखानी॥
चार खानिकी उत्पति भाऊ। भिन्न भिन्न मुहि वरणिसुनाऊ॥
चौरासी लख योनिन धारा। कौन योनि केतिकबिस्तारा॥

चार खानिकी गिनती। कबीरवचन धर्मदास प्रति।

कह कबीरसुन धर्मनि वानी। योनि भावतोहि कहौंबखानी॥
भिन्न भिन्न सब कहु समझाऊँ। तुमसेअंत न कछू दुराऊँ॥
तुम जिन शंका मानहु भाई। वचनहमारगहोचितलाई॥

चौरासी लाख योनिकी गिनती ।

नौ लख जलके जीव बखानी । चौदह लाख पक्षी परवानी ॥
किरम कीट सत्ताइस लाखा । तीस लाख अस्थावरभाखा ॥
चतुर लक्ष मानुष परमाना । मानुष देह परम पद जाना ॥
और योनि परिचय नहिं पावे । कर्म बंध भव भटका खावे ॥

धर्मदासवचन । मनुष्य खानि सबसे अधिक क्यों है ?

धर्मदास नायो पद शीशा । यह समुझाय कहो जगदीशा ॥
सकेल योनि जिव एक समाना।किमिकारणनहिंइकसमज्ञाना॥
सो चरित्र मुहि कहौ बुझाई । जाते चित संशय मिटजाई ॥

सद्गुरुवचन ।

सुनु धर्मनि निज अश अभूषण । तोहि बुझाय कहों यह दूषण॥
चार खानि जिव एकै आहीं । तत्त्व विशेष अहैं सुन ताहीं॥
सो अब तुमसों कहों बखानी । तत्त्व एक अस्थावर जानी ॥
ऊष्मज दोय तत्त्व परमाना । अंडज तीन तत्त्व गुण जाना॥
पिंडज चार तत्त्व गुण कहिये।पांच तत्त्व मानुष तन लहिये ॥
तासों होय ज्ञान अधिकारी । नरकी देह भक्ति अनुसारी ॥

किन२खानिमें कौन२तत्त्व हैं । धर्मदासवचन कबीरप्रति ।

हे साहिब मुहि कहु समझाई । कौन कौन तत्त्व इन सबपाई॥
अंडज अरु पिंडजके संगा ।ऊष्मज और अस्थावर अंगा॥
सो साहिब मोहि वरणि सुनाओ।करोदयाजनिमोहिदुराओ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति । छंद ।

सतगुरु कहैं सुन दास धर्मनि तत्त्व खानि निबेरनो॥
जाहि खानि जो तत्त्व दीन्हों कहों तुम सो टेरनो

---

१ प्रस्तावनामें इसका विशेष वृत्तान्त देखो । २ इस पदको कई प्रतियोंमें इस प्रकार लिखा है । सकल जीवन जीव एक समाना * नर सम औरनको नहिं ज्ञाना ॥

खानि अंडज तीन तत्त्वहैं अप वायु अरु तेजहो ॥
अचल खानी एक तत्वहि,तत्व जलका थेग हो ॥
सोरठा–ऊष्मज तत हैं दोय,वायु तेज समजानिये॥
पिंडज चारहिं सोय,पृथ्वी तेज अपवायु सम ॥
पिंडजनर परधान, पांच तत्व तेहि संग है ॥
कह कबीर परमान, धरमदास लेहु परखिके ३५

पिंडज नरकी देह सँवारा । तामें पांच तत्व विस्तारा ॥
ताते ज्ञान होय अधिकाई । गहे नाम सत लोकहिं जाई ॥

सब मनुष्योंका ज्ञान एक समान क्यों नहीं है? धर्मदासवचन ।

धर्मदास कह सुन बदीछोरा । इक संशय मेटो प्रभु मोरा ॥
सब नर नारि तत्त्व सम आहीं।इक सम ज्ञान सबनको नाहीं ॥
दया शील संतोष क्षमा गुनन। कोईशून्य कोइ होयसम्पूरन ॥
कोई मनुष्य होय अपराधी । कोइ शीतलकोइकाल उपाधी॥
कोइ मारि तन करे अहारा । कोई जीव दया उर धारा ॥
कोई ज्ञान सुनत सुख माने । कोई काल गुणवाद बखाने ॥
नाना गुण किहि कारण होई । साहिब वरणि सुनाओ सोई ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

धर्मदास परखो चित लाई । नर नारी गुण कहूँ बुझाई ॥
जाते नर ह्वै ज्ञानि अज्ञानी । सो सबतोहि कहों सहिदानी॥
नाहर सर्प औ स्वान सियारा।काग गिद्ध सूकरमंजारा ॥
और अनेक जोंइन अघखानी।खाहि अखज अधम गुणजानी॥
इन जो इनते जे जिव आवा । नरकी जोन जनम जिनपावा॥
पीछे जो इन सुभावन छूटे । कर्म प्रधान महापुन छूटे ॥
ताते सब चले कागके लेखे । नरकी देह परगट तेहि देखे ॥

जिहि जोइनते जो नर आऊ। ताको तैसो आहि सुभाऊ ॥
अघकरमी घातक विष पूजा। जो इन प्रभाव होयनहिंदूजा॥

योनिप्रभाव मेटनेका उपाय।

सतगुरु मिले तो ज्ञान लखावै। काग दसा तब सब बिसरावै ॥
मुरचा जो इन छुटै तब भाई। ज्ञान मसकला फिरै बनाई ॥
जब धोबी वस्तर कहँ धोवै। जल साबुन मिलिउज्वलहोवै॥
थोर मैल कर वस्तर भाई। थोडे परिश्रम मैल नसाई ॥
निपटमलिनजेवस्तरआही। ताकहँअधिकअधिक श्रमचाही ॥
जसे मैल वस्तर कर भाऊ। ऐसे जीवन करे सुभाऊ ॥
कोइ कोइ जो अंकुरी होई। स्वल्प ज्ञान सो गहे विलोई ॥

धर्मदास वचन।

यह तो स्वल्पजोनिकर लेखा। खानि भाव अब कहूँ विशेषा॥
चारि खानिको जिव जोई। मनुष्य खानमहँ आवे सोई ॥
ताकरलच्छनमोहिबताओ । विलगविलगकरिमुहिसमझावो॥
जेहि परखी मुहहिं महँ चेतू। कर अब साहब यहिबडहेतू ॥

चारि खानिके लक्षणोंकी पारख। कबीरवचन।

धर्मदास परखहु चित लायी । चारिखानिगुणकहुँसमझायी ॥
चारों खानि जीव भरमाया। तब ले नरकी देह धराया ॥
देह धरे छोड जस खाना। तैसे ता कहँ ज्ञान बखाना ॥
लच्छन औ अपलच्छण भेदा। सो सब तुमसों कहों निषेदा॥

अण्डजखानसे मनुष्यदेहमें आये हुए जीवकी पारख।

प्रथम कहों अंडजकी बानी। एकहि एक कहों बिलछानी ॥
आलस निद्रा जा कहँ होई। काम क्रोध दालिद्री सोई ॥
चोरी चचल अधिक सुहाई। तृष्णाा माया अधिक बढाई॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो।

चोरी चुगली निंदा भावे । घर बन झाडी अगिन लगावे ॥
रोवे कूदे मंगल गावे । दूत भूत सेवा मन भावे ॥
देखत देत और पुनि काहू । मन मन झंखे बहु पछताहू ॥
वाद विवाद सबैसों ठाने । ज्ञानध्यानकछुमनहिंनआने ॥
गुरु सतगुरु चीन्हें नहिं भाई । वेद शास्त्र सब देइ उठाई ॥
आपन नीच ऊंच मन होई । हम समसरि दूसर ना कोई ॥
मैले बस्तर नहीं नहाई । आखकीचमुख लार बहाई ॥
पांसा जुवा चित्त मन आने । गुरुचरणनिशिदिननहिंजाने ॥
कुबरा मूड ताहिका होई । लंबा होय पाव पुनि सोई ॥

छंद ।

यहि भांतिलक्षणमैंकहा,तुमसुनहु धर्मनिनागरू ॥
अंडज खानि नगोयराखौं, कह्यो भेद उजागरू ॥
यह खानि वर्णन कहोंतासों, कछुनाहिंछिपायऊ ॥
सो समुझवानीजीवथिरकै,धोखसकल मिटायऊ ॥

ऊष्मज खानिसे मनुष्यदेहमें आये हुए जीवकी पारख।

सोरठा-दूजीखानि बताय,ताहिलक्षतोसों कहो ॥
उषमज तेजियआय,नर देही जिनपाइय॥६३॥

कहें कबीर सुनो धर्मदासा । उषमज भेद कहौं परगासा ॥
जाइ शिकार जीव बहु मारे । बहुते अनंद होय तेहि वारे ॥
मारिजीवजबघरकहँ आयी । बहु विधिरांधताहि कहँखाई ॥
निंदे नाम ज्ञान कहँ भाई । गुरु कहँ मेटि करे अधिकाई ॥
निंदे शब्द और गुरु देवा । निंदे चौका नरियर भेवा ॥
बहुत बात बहुते नरि आयी । कथे ज्ञान बहुते समुझाई ॥
झूठे वचन सभामें कहई । टेढी पाग छोर उरमहई ॥

दया धरम मनहीं नहिं आवे । करें पुन्य तेहि हांसी लावे ॥
माल तिलक अरु चंदन करई। हाट बजार चिकन पट फिरई॥
अन्तर पापी ऊपर दाया । सो जिव यमके हाथबिकाया॥
लंब दांत रु वदन भयावन । पीरे नेत्र ऊंच अति पावन ॥

छंद।

कहे सतगुरु सुनहु धर्मनि, भेद भल तुम पाइया ॥
सतगुरु बिना नहिं भेद पावे, भलीविधि तोहिदरसाइया॥
भेंटिया तुम मोहि को, कछु नाहितोहि दुराइहौं ॥
जो बूझि हो तुम मोहिसो, सकलभेदबताइहौं ॥३५॥

स्थावर खानिसे मनुष्य शरीरमें आये हुए जीवकी पारख ।

सोरठा-तीजीखानिसुभाव, अचलखानि कहत जेही ॥
नर देहीतिन पाव, ताकरलक्षण अबकहों ॥ ३७ ॥

अचल खानिको कहों सँदेसा । देह धरे जस होवे भेसा ॥
छनिक बुद्धि होवे जिव केरी । पलटत बुद्धि न लागे बेरी ॥
झंगा फेंटा सिर पर पागा । राज द्वार सेवा भल लागा ॥
घोडा पर होवे असवारा । तीर खरग औ कमर कटारा॥
इत उत चितै सैन जो मरई । पर नारी करि सैन बुलावई ॥
रससों बात कहें मुख जानी । काम बान लागे उर आनी ॥
पर घर ताकइ चोरी जायी । पकर बांधि राजा पहँ लायी॥
हांसी करें सकल पुनिजबहूं । लाज शर्म उपजै नहिं तबहूं ॥
छिन इक मन महँ पूजाकरई । छिन इक मन सेवा चित धरई॥
छिन इक महँ बिसरें देवा । छिन इक मन महँ कीजेसेवा॥
छिन इक ज्ञानी पोथीवांचा । छिनइकमाहिं सबनघरनाचा॥

छिन इक मनमें सूर कहोई । छिन इकमें कादर हो सोई ॥
छिन इक मनमें साहु कहाई । छिन इक मनमें चोरी लाई ॥
छिन इक मनमेंकरेजु धर्म्मा । छिन इक मनमें करे अकर्म्मा॥
भोजनकरत माथ खजुआई । बांह जाँघ पुनि मींजत भाई ॥
भोजन करतसोय पुनिजाई । जो जगाय तिहि मारन धाई॥
आंखेंलाल होहिं पुनिजाकी। कहँलग भेद कहों मैं ताकी ॥

छंद ।

अचल खानीभेद धर्मनिछिनक बुद्धिसोहोय हो ॥
छिन माहिं करके मेट डारे, कहों तुमसोंसोयहो ॥
मिले सतगुरु सत्य जा कहँ, खान बुधिसबमेटही ॥
गुरु चरण लीन अधीनहोवै, लोकसोहँसापैठही३६

पिंडज खानिसे मनुष्य शरीरमें आये हुए जीवकी पारख ।

सोरठा–सुनहुहो धरमदास, पिंडज लक्षण गुणकहों
कहों तुम्हारेपास, चौथी खानिकी युक्तिसो ३८

पिंडजखानिकेलच्छ सुनाऊँ । गुण औगुणको भेद बताऊँ ॥
बैरागी उनमुनि मति धारी । करे धर्म पुनि वेद बिचारी ॥
तीरथ औ पुनि योगसमाधी। गुरुके चरण चित्त भल बांधी॥
वेद पुराण कथे बहु ज्ञाना । सभा बैठि बाते भल ठाना ॥
राजयोग कामिनि सुख माने।मन शंका कबहूँ नहिं आने ॥
धन संपति सुखबहुतसुहायी । सेज सुपेद पलंग बिछायी ॥
उत्तम भोजन बहुत सुहायी। लौंग सुपारी बीरा खायी ॥
खरचे दाम पुण्य महँ सोई। हिरदे सुधि ताकर पुनि होई ॥
चच्छु तेज जाकर पुनिजानी । पराक्रम देही बल ठानी ॥
देखो स्वर्ग सदा तेहि हाथा। देख प्रतिमा नावे माथा ॥

छंद।

बहुत लीन अधीन धर्मनि, ताहि जिवकहँ जानिहो॥
सतगुरु चरणनिशिदिन गहे, सतशब्द निश्चयमानिहो॥
एक एक बिलोय धर्मनि, कह्यो सत मैं तोहिसों॥
चार खानी लक्ष भाषेउँ, सुनो आगे मोहिसों॥३७॥

मनुष्यशरीरसे मनुष्यदेहमें आनेवाले जीवकी पारख।

सोरठा-छूटे नरकी देह, जन्म धरे फिर आयके॥
ताका कहों संदेह, धर्मदास सुन कानदे॥३९॥

धर्मदासवचन।

हे स्वामी इक संशय आयी। सो पुनिमोहि कहो समझाई॥
चौरासी योनिन भरमावे। तब मानुषकी देही पावे॥
यह विधि मोसनकह्योबुझायी।अब कैसे यह संधि लखायी॥
सो चरित्र गुरु मोहि लखाऊ।धर्मदास गहि टेके पाऊ॥
मानुष जन्म धरे पुनि आयी। लक्षण तासु कहो समुझायी॥

कबीरवचन।

धर्मदासतुमभलिविधिजानो। होय चरित सो भले बखानो॥

आयु रहतेभी मृत्यु होती है।

आइ अछत जो नर मर जाई। जन्म धरे मानुषको आई॥
जो पुनि मूरख ना पतियाई। दीपक बाती देख जराई॥
बहु विधितेल भरेपुनि ताही। लागै वायु तबैं बुझ जाही॥
अग्नि लायके ताहि लैसावे। यहि विधि जीवहुदेह धरावे॥
ताको लक्षण सुनहु सुजाना। तुमसों गोय न राखूँ ज्ञाना॥
शूरा होवे नरके माहीं। भय डर ताके निकट न जाहीं॥
माया मोह ममता नहिं व्यापे। दुश्मन ताहि देखि डर काँपे॥

सत्यशब्द प्रतीति कर माने । निंदा रूप न कबहीं जाने ॥
सतगुरु चरण सदा चितराखे । प्रेम प्रीति सो दीनता भाखे॥
ज्ञान अज्ञान दोइ कहँ बूझे । सत्य नाम परिचय नित सूझे॥
जो मानुष अस लक्षण होई । धर्मदास लखि राखो सोई ॥

छंद ।

जनम जनमको मैल छूटै, पुरुष शब्द जो पावई ॥
नाम भाव सुमिरण गहे सो, जीव लोक सिधावई ॥
गुरु शब्दनिश्चय दृढगहे सो जीवअमियअमोलहो
सतनाम बल निज घर चले,करे हंस कलोलहो३८

सोरठा–सत्य नामपरताप, काल न रोके जीवकहँ ॥
देखि वंशको छाप, काल रहे सिर नायके ॥ ४० ॥

धर्मदासवचन चौरासी धार क्यों बनी ।

चार खानिके बूझेउ भाऊ । अब बूझों सो मोहि बताऊ ॥
चौरासी योनिनकी धारा । किहकारणयहकीन्हपसारा ॥
नर कारण यह सृष्टि बनाई । कै कोइ और जीवभुगताई ॥
हे साहिबजनिमोहि दुराओ । कीजै कृपा विलंबजनिलाओ॥

सद्गुरुवचन । मनुष्यके लियेही चौरासी बनी है ।

धर्मनि नर देही सुख दायी । नर देही गुरु ज्ञान समायी ॥
सो तनु पाय आप जहँ जावे । सतगुरुभक्ति विना दुख पावे॥
नर तनु काज कीन्ह चौरासी । शब्द न गहे मूढ मति नाशी ॥
चौरासीकी चाल न छाडे । सत्य नाम सो नेह न माडे ॥
लै डारे चौरासी माहीं । परचै ज्ञान जहाँ कछु नाहीं ॥
पुनिपुनिदौडिकालमुखजाहीं । ताहूते जिव चेतत नाहीं ॥

बहुत भांतिते कहि समुझावा । जीवन विपतिजानगुहरावा ॥
यह तनु पाय गये सतनामा । नाम प्रतापलहे निज धामा ॥

छंद ।

आदि नाम बिदेह अस्थिर, परखिजो जियरागहे॥
पाय बीरा सार सुमिरण, गुरु कृपा मारग लहे ॥
तजिकागचाल मराल पथ गहि, नीरक्षीर निवारिके
ज्ञान दृष्टि सो अदृष्टिदेखे, क्षर अक्षर सुविचारके॥
सोरठा-निह अक्षर है सार, अक्षरते लखि पावई ॥
धर्मनि करो विचार, निह अक्षर निह तत्व है॥४१॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास कहे शुभ दिन मोरा । हे प्रभु दर्शन पायउ तोरा ॥
मुहि किंकर पर दाया कीजे । दासजानिमुहिंयह वर दीजे॥
निशिदिन रहोंचरण लौलीना । पल इक चित्त न होवे भीना॥
तुव पद पंकज रुचिर सुहावन । पद परागबहुपतितन पावन॥
कृपासिंधु करुणामय स्वामी । दयाकीन्हमोहि अंतरयामी॥
हे साहिब मैं तव बलिहारी । आगल कथा कहो निरवारी॥
चारखानिरचिपुनिकसकीन्हा । सो सब मोहिबतावो चीन्हा॥

जीवोंके लिये कालका फन्दा रचना । कबीरवचन ।

सुनु धर्मनि यह है यमबाजी । जेहिनहिंचीन्हें पंडित काजी॥
जो यम ताहि गोसइयाभाखे । तजे सुधानर विषकहँ चाखे॥
चारिहु मिलियहरचनाकीन्हा । कच्चा रंग सु जीवहिदीन्हा ॥
पांच तत्त्व तीनों गुण जानो । चौदह यम ता संग पिछानो॥
यहिविधिकीन्हीनरकीकाया । मारे खाय बहुरि उपजाया ॥
ओङ्कार है वेदको मूला । ओङ्कारमें सब जग भूला ॥

है ओङ्कार निरंजन जानो। पुरुष नाम सो गुप्त अमानो॥
सहस अठासी ब्रह्मा जाया। भा विस्तार कालकी छाया॥
ब्रह्माते जिव उपजे बारा। तिन पुनि कथे बहुत विस्तारा॥
स्मृति शास्त्र पुराण बखाना। तामें सकल जीव उरझाना॥
जीवनको ब्रह्मा भटकावा। अलखनिरंजनध्यान दृढावा॥
वेद मते सब जिव भरमाने। सत्य पुरुषको मर्म न जाने॥
निरंकार कस कीन्ह तमासा। सो चरित्र बूझो धर्मदासा॥

छंद।

असुर ह्वै जीवनसतावे, देव ऋषि मुनि कारकं॥
पुनि धरि औतार रक्षक, असुर करै संहारकं॥
जीवकोदिखलाय लीला, आपनी महिमा घनी॥
यहि जानजीवन बांधि आशा यही है रक्षक धनी॥
सोरठा-रक्षककलादिखाय, अंत काल भक्षणकरै॥
पीछेजिवपछताय, जबहि कालकेमुखपरे॥४३॥

अडसट तीरथ ब्रह्मा थापा। अकरम करमपुण्य औरपापा॥
बारह राशि नखत सत्ताइस। सात वार पंद्रहतिथि लाइस॥
चारों युग तब बांधे तानी। घडी दंड स्वासा अनुमानी॥
कार्तिकमाघपुन्यकहिदीन्हा। यम बाजी कोइविरले चीन्हा॥
तीरथ धामकी बांधि महातम। तजे न भरमन चीन्हें आतम॥
पाप पुण्य महँ सब फँदावा। यहि विधिजीव सबैउरझावा॥
सत्य शब्द विनु बांचे नाहीं। सारशब्दबिन यममुख जाहीं॥
त्रास जानिजिव पुण्यकमावे। किंचितफलतेहि छुधानजावे॥
जबलगपुरुष डोर नहिं गहई। तब लग योनिनफिर२लहई॥
अमित कला जमजीवलगावे। पुरुष भेद जीव नहिं पावे॥

लाभ लोभ जिव लागे धायी। आशा बंध काल धर खायी॥
यम बाजी कोइ चीन न पावे। आशा दे यम जीव नचावे॥
प्रथमै सतयुगको व्यवहारा। जीवहि यम लै करे अहारा॥
लच्छु जीवयम नित प्रतिखाई। महा अपरबल काल कसाई॥
तप्त शिलानिशिदिनतहँ जरई। तापर लै जीवन कहँ धरई॥
जीवहि जारे कष्ट दिखावे। तब फिर लै चौरासी नावे॥
ता पीछे योनिन भरमावे।यहि विधि नाना कष्ट दिखावे॥
बहुविधिजीवन कीन्हपुकारा। काल देत है कष्ट अपारा॥

तप्तशिलापर कष्ट पाकर जीवोंका गुहार करना और कबीर साहबका सतपुरुषकी आज्ञासे जाकर उन्हें छुडाना।

यम करकष्टसह्यो नहिं जाई। हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई॥

छंद।

जब देखि जीवनकोविकल, अति दया पुरुष जनाइया॥
दयानिधि सत पुरुषसाहिब, तबै मोहि बुलाइया॥
कहे मुहिं समझाय बहुविधि, जीव जाय चितावहू॥
तुव दरशतेहो जीव शीतल, जाय तपन बुझावहू ४२
सोरठा–आज्ञा लीन्ही मान, पुरुष सिखापन सीसधरि
ततक्षण कीन्ह पयान, सीस नाय सतपुरुष कहँ४२

आये जहँ यम जीव सतावे। काल निरंजन जीव नचावे॥
चटपट करे जीव तहँ भाई। ठाढे भये तहां पुनि जाई॥
मोहि देखजिव कीन्हपुकारा। हे साहिब मुहि लेहु उबारा॥
तब हम सत्य शब्द गुहरावा। पुरुष शब्दते जीव जुडावा॥

जीवोंका स्तुति करना।

सकल जीवतब अस्तुतिलाये। धन्य पुरुष भल तपनबुझाये॥
यमते छोर लेव तुम स्वामी। दया करो प्रभु अन्तरयामी॥

कबीर वचन जीवों प्रति ।

तब मैं कहा जीव समुझायी । जोर करो तो वचन नसायी ॥
जबतुम जाय धरौ जग देहा । तब तुम कारहो शब्दसनेहा ॥
पुरुषनामसुमिरण सहिदाना । बीरा सार कहों परवाना ॥
देह धरी सत शब्द समाई । तब हंसा सत्य लोकै जाई ॥

जहां आशा तहां बासा ।

जहँ आशा तहँ बासा होई । मन वच करम सुमिर जोकोई ॥
देह धारिकीन्हेउजिहिआसा । अंत आय लीन्हेउ तहँ बासा ॥
जबतुम देहधरो जग जायी । बिसरयोपुरुषकाल धरिखाई ॥

जविवचन कबीरप्रति ।

कहे जीव सुनु पुरुष पुराना । देह धरी बिसरयो यह ज्ञाना ॥
पुरुष जान सुमेरउ यमराई । वेद पुराण कहे समुझाई ॥
वेद पुराण कहे मति एहा । निराकार ते कीजे नेहा ॥
सुर नर मुनि तेतीस करोरी । बांधे सबै निरंजन डोरी ॥
ताके मते कीन्ह मैं आसा । अब मोहिंचीन्हपरेयमफांसा ॥

कबीरवचन जीवोंप्रति ।

सुनो जीवयहछल यम केरा । यह यम फंदा कीन्ह घनेरा ॥

छंद ।

काल कला अनेक कीन्हो जीव कारण ठाट हो ॥
तीरथ व्रत जग योग फन्दे कोइ न पावत बाट हो ॥

---

१ यह छंद कई ग्रंथोंमें कई प्रकारसे लिखा है । दूसरे प्रकारसे जो दो सौ वर्षसे भी अधिकके लिखे पुराने ग्रंथमें इस प्रकार है ॥ छन्द ॥ काल कन्या अनेक कीन्हे जीव कारन जाल हों । वेद शास्त्र पुरान स्मृति ते, रुधे काल करालहो ॥ देह धारि नर परगट हो फिरि ताहि आशा कीन्हेऊ । भरमत इत उत कल बसि, बहु पन्थमें चित्त दीन्हेऊ ॥

आप तन धरि प्रगट ह्वैके, सिफत आपन कीन्हेऊ॥
नानागुण मन कर्मकीन्हे,जीव बंधन दीन्हेऊ॥४३॥
सोरठा-काल कराल प्रचण्ड,जीव परे वश ताहिके॥
जनम जनमभ दण्ड,सत्य नाम चीन्हें विना ॥४४॥

कवीर वचन धर्मदासप्रति।

छन इक जीवन कहँ सुख दयऊ। जीव प्रबोध पुरुष पहँ गयऊ॥
छन इकजीवन कहँ सुख दीन्हा। जीवन कह्योज्ञानकोचीन्हा॥
जब तुम देह धरो जग जाई। तब हमशब्द कहबगोहराई॥
जो गहिहोसत नामकी डोरी। तब आनबहमजमसे छोरी॥
जीव परमोधि पुरुषपहँ गयऊ। जीवनकोदुखवरनिसुनयऊ॥
पुरुषदयालदयानिधि स्वामी। जिवके मूलअमानअकामी॥
कह्यो मोहि बहुविधि समझाई। जीवन आनो शब्द चेताई॥

धर्मदासवचन।

धर्मदास अस विनती लायी। ज्ञानी मोहि कहो समझायी॥
जोकछु पुरुष शब्दमुख भाखो। सोसाहिबमोहिगोयनराखो॥
कौन शब्दते जीव उबारा। सोसाहिबसबकहो विचारा॥

सतगुरुवचन।

पुरुष मोहि जैसो फुरमायी। सो सब तुमसों संधि लखायी॥
कहेउमोहिबहुविधिसमझायी। जीवहि आनोशब्दचितायी॥
गुप्त वस्तु प्रभु मो कहँ दीन्हा। नाम विदेह मुक्ति कर चीन्हा॥
दीन्ह पान परवाना हाथा। संधि छाप मोहि सौंप्यो नाथा॥
विनु रसनाते सो धुनि होई। गुरुगमते लखि पावे कोई॥
पंच अमीय मुक्तिका मूला। जातें मिटे गर्भ अस्थूला॥

१ यह आधी चौपाई पुराने किसीभी ग्रन्थमें नहीं है प्रस्तावनामें देखो।

यहि विधि नाम गहे जो हंसा। तारों तासु इकोतर बंसा ॥
नाम डोरि गहि लोकहिजायी। धर्म राय तिहि देखि डरायी ॥
ज्ञानी करो शिष्य जेहि जाई। तिनका तोरो जल अँचवाई ॥
जिहि विधि दीन्हतुमहिमैंपाना। तेहिविधिदेहुशिष्य सहिदानाँ

गुरुमहिमा।

गुरुमुख शब्द सदा उर राखे। निशि दिन नामसुधारसचाखे॥
पिया नेहजिमिकामिनि लागे।तिमि गुरुरूपशिष्य अनुरागे ॥
पल पलनिरखे गुरुमुख कान्ती।शिष्य चकोरगुरू शशिशांती ॥
पतिव्रता ज्यों पतिव्रत ठाने। द्वितीय पुरुष सपने नहिं जाने॥
पतिव्रता दोउ कुलहिं उजागर। यह गुण गहे संत मति आगर ॥
ज्यों पतिव्रता पिया मन लावे। गुरु आज्ञा अस शिष्य जुगावे॥
गुरुते अधिक और कोइ नाहीं। धर्मदास परखहु हियमाहीं ॥
गुरु दयाल अस है सुखदाई। देहिं मुक्तिको पंथ लखाई ॥
गुरुते अधिक कोइ नहिं दूजा।[1] भर्म तजै करि सतगुरु पूजा ॥
तीर्थ धाम देवल अरु देवा। शीश अर्पि जो लावें सेवा ॥
तौ नहिं वचन कहें हितकारी। भूले भरमें यह संसारी ॥

छंद।

गुरु भक्ति अटल अमान धर्मनि,यहि सरस दूजा नहीं॥
जप योग तप व्रत दानपूजातृणसदृशयह जग कहीं ॥
सतगुरुदया।जिहिसंतपरतिहिहृदय इहि विधि आवई ॥
ममगिरा परखे हरषिके हिय,तिमिर मोह नशावई
सोरठा—दीपक सतगुरु ज्ञान,निरखेहु संत अंजोर तेहि॥
पावे मुक्ति अमान, सत्य गुरु जेहि दायाकर ॥ ४५॥

---

१ पुरानी प्रतियोंमें यह चौपाई नहीं है।प्रस्तावनामें देखो ।

शुकदेवकी कथा ।

शुकदेव भये गरभ जोगेशर । उनसमाननहिं थाप्यो दोसर ॥
तपके तेजगये हरि धामा । गुरु बिन नाहिं लहे विश्रामा ॥
विष्णु कहे ऋषि कहँवा आये । गुरु बिहीनतप तेज भुलाये ॥
गुरु बिहीन नर मोहि न भावे। फिर २ जो इन संकट आवे ॥
जाहु पलटिकरहु गुरुसयाना । तब पैहो यहँवा अस्थाना ॥
सुनिमुनिशुकदेववेगिसिधाये । गुरु बिहीनतहँरहन न पाये ॥
जनक बिदेह कीन्हगुरुजानी । हरषिमिले तब सारंगपानी ॥
नारद ब्रह्मा सुत बड़ ज्ञानी । यह सबकथा जगतमेंजानी ॥
और देव ऋषि मुनिवर जेते। जिनगुरु कीन्ह उतर सो तेते ॥
जो गुरु मिले तो पंथ बतावे। सार असार परख दिखलावे॥
गुरु सोई जो सत्य बतावे । और गुरू कोइ काम न आवे॥
सत्य पुरुषके कहे संदेशा । जन्म जन्मका मिटै अंदेशा॥
पाप पुन्यकी आशा नाहीं। बैठे अक्षय वृक्षकी छांही ॥
भ्रगी मत होवे जिहि पासा । सोइ गुरुसत्य सुनोधर्मदासा ॥

छन्द ।

जो रहित घर बतलावई, सो गुरू सांचा मानिये ॥
तीन तजि मिलि जायचौथे, तासुबचन परमानिये॥
पांच तीन अधीन काया, न्यार शब्द विदेह है ॥
देह माहिं विदेह दरशै,गुरुमतानिज एहहैं ॥ ४५ ॥

सोरठा–ध्यान विदेह समाय, देह धरेका फलयह ।
नहिं आवे नहिं जाय,मिलइदेह विदेहहोइ॥४६॥
असगुरुकरे बनाय, बहुरि न जग देही धरे॥
नहिंआवे नहिं जाय,जिहि सतगुरु दायाकरे ॥

धर्मदासवचन ।

हे प्रभु मोहि कृतारथ कीन्हा । पूरणभाग्य दरशमुहि दीन्हा ॥
तुव गुण मोसनवरणि न जाई । मो अचेत कहलीन्ह जगाई ॥
सुधा बचन तुव मोहिं प्रियलागे।सुनतहिवचनमोहमदभागे॥
अब वह कथा कहो समझायी । जिहिविधिजगमेंप्रथमैंआयी

कबीरसाहबका सत्पुरुषकी आज्ञा पाकर जीवोंको चितानेके लिये चलना निरञ्जनसे भेट होना और उससे बात चीत करके आगे बढना ।

कबीरवचन ।

धर्मदास जो पूछ्यो मोही । युग युग कथा कहौं मैं तोही॥
जबहिं पुरुष आज्ञा कीन्हा । जीवन काजपृथ्वीपग दीन्हा॥
करि प्रणाम तबहीं पगु धारा । पहुँचे आय धर्म दरबारा ॥
प्रथमै चलेउ जीवके काजा । पुरुष प्रताप शीशपर छाजा ॥
तेहि युग नाजअचिन्तकहाये । आज्ञा पुरुष जीव पहँआये ॥
आवत मिल्यो धर्म अन्याई । तिन पुनि हमसो रार बढाई॥
मो कहँ देखि धर्म ढिगआवा । महा क्रोध बोले अतुरावा ॥
योगजीत इहँवा कस आवो । सो तुम हमसों वचनसुनावो॥
कै तुम हमको मारन आओ । पुरुषबचन सो मोहिसुनाओ॥

जोगजीत वचन ।

तासों कह्यो सुनो धर्म राई । जीव काज संसार सिधाई ॥
बहुरि कह्यो सुनु अन्याई । तुम बहु कीन्ह कपटचतुराई ॥
जीवन कहँ तुमबहुत भुलावा । बार बार जीवन संतावा ॥
पुरुष भेद तुम गोपित राखा । आपन महिमापरगटभाखा ॥
तप्त शिलापर जीव जरावहु । जारिबारिनिजस्वादकरावहु ॥
तुमअस कष्टजीव कहँदीन्हा । तबहिपुरुषमोहिआज्ञाकीन्हा॥

जीव चिताय लोक लै जाऊँ। काल कष्टतें जीव बचाऊँ ॥
ताते हम संसारहि जायब। दे परवाना लोक पठायब ॥

धर्मरायवचन।

यहसुनिकाल भयंकर भयऊ। हम कह त्रासदिखावन लयऊ ॥
सत्तर युग हम सेवा कीन्ही। राज बडाइ पुरुष मुहिं दीन्ही ॥
फिर चौंसठ युग सेवा ठयऊ। अष्ट खंड पुरुष मुहिं दयऊ ॥
तब तुम मारि निकारे मोही। योगजीत नहिं छांडों तोही ॥
अब हम जान भली विधि पावा। मारों तोहि लेउँ अब दावा ॥

योगजीतवचन।

तब हम कहा सुनो धर्मराया। हम तुम्हरे डर नाहिंडराया ॥
हम कहँ तेज पुरुष बल आही। अरे काल तुव डर मोहि नाहीं ॥
पुरुष प्रताप सुमिरितिहि बारा। शब्द अंगते कालहि मारा ॥
ततछण दृष्टि ताहि पर हेरा। स्याम ललाटभयोतिहिकेरा ॥
पंख घात जस होय पखेरू। ऐसे काल मोहि पहँ हेरू ॥
करै क्रोध कछु नाहिं बसाई। तब पुनि परेउ चरण तर आई

धर्मराय वचन। छंद।

कह निरंजन सुनो ज्ञानी, करो विनती तोहि सों ॥
जान बंधु विरोध कीन्हो, घाट भयी अब मोहि सों ॥
पुरुष सम अब तोहि जानों, नाहिं दूजी भावना ॥
तुम बडे सर्वज्ञ साहिब, क्षमा छत्र तनावना ॥ ४९ ॥
सो०—तुमहु करो बखशीश, पुरुष दीन्हजसराजमुहिं
षोडश महँ तुम ईश, ज्ञानी पुरुष सु एक सम ॥ ४८

ज्ञानीवचन।

कह ज्ञानी सुनु राय निरंजन। तुम तो भये वंशमें अंजन ॥

जीवन कहँ मैं आनब जाई । सत्य शब्द सत नाम दृढाई ॥
पुरुष आज्ञाते हम चलि आये । भौसागरते जीव मुक्ताये ॥
पुरुष अवाज टारु यहि बारा । छन महँ तो कहँ देउँ निकारा॥

धर्मरायवचन ।

धर्मराय अस विनती ठानी । मैं सेवक द्वितिया नहिंजानी॥
ज्ञानी विनती एक हमारा । सो न करहु जिहि मोरबिगारा॥
पुरुष दीन्ह जस मो कहँ राजू । तुमहूँ देहु तो होवे काजू ॥
अब हम वचन तुम्हारो मानी । लीजो हंसा हम सो ज्ञानी ॥
विनती एक करों तुहि ताता । दृढ कर मानो हमरी बाता ॥
कहा तुम्हार जीव नहिं मानिहिं । हमरीदिशिह्वै बादबखानिहिं॥
दृढ फन्दा मैं रचा बनायी । जामें जीव रहें उरझाई ॥
वेद शास्त्र सुमिरिति गुण नाना । पुत्र तीन देवन परधाना ॥
तिनहू बहु बाजी रचि राखा । हमरी डोरि ज्ञानमुखिभाखा ॥
देवल देव पखान पुजाई । तीरथ व्रत जप तप मन लाई॥
पूजा विश्व बलि देव अराधी । यहि मति जीवन राख्योबांधी॥
जग्य होम अरु नेम अचारा । और अनेक फन्द मैं डारा ॥
जो ज्ञानी जैहो संसारा । जीव न माने कहा तुम्हारा ॥

ज्ञानीवचन ।

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई । काटों फन्द जीव लै जाई ॥
जेतिकफन्दतुमरचेविचारी । सत्य शब्दते सबै बिडारी ॥
जौन जीव हम शब्द दृढावे । फंद तुम्हार सकल मुक्तावे ॥
जब जिवचिन्हिहेंशब्दहमारा।तजहि भरम सबतोर पसारा ॥
सत्य नाम जीवन समझायब । हंस उबार लोक लै जायब ॥

---

१ पुरानी पुस्तकमें यहांसे लेकर कई चौपाई नहीं हैं इसका विशेष वृत्तान्त प्रस्तावनामें देखो ।

छन्द ।

देहुँ सत्य शब्द दिढायहंसहि, दया शीलक्षमा घनी ॥
सहज शीलसन्तोष सारा, आत्मपूजा गुन धनी ॥
पुरुष सुमिरन सार वीरा, नाम अविचल गाइ हौं ॥
सीस तुम्हरे पाव देके, हंसहि लोकपठाइहौं ॥४६॥
सोरठा–अमी नाम विस्तार; हंसहि देहचिताइहौं॥
मरदहिं मात्र तुम्हार; धर्मदासपुनु चित्तदे ॥४९

चौका करि परवाना पाई। पुरुष नाम तिहि देउँ चिन्हाई॥
ताके निकट कालनहिं आवे। संधि देख ताकहँ शिर नावे॥

धर्मरायवचन ।

इतना सुनतै काल सकाना। हाथ जोरिके विनती ठाना॥
दयावन्त तुम साहिब दाता। एतिक कृपा करो हो ताता॥
पुरुषशापसोकहँअस दीन्हा। लच्छजीवनितग्रासनकीन्हा॥
जो जिवसकललोक तुव आवे। कैसे क्षुधा सो मोरिबुतावे॥
पुनि पुरुष मोपर दाया कीन्हा। भौसागर कहँ राजमुहिदीन्हा॥
तुमहू कृपा मोपर करहू। मांगो सो वर मुहि उच्चरहू॥
सतयुग त्रेता द्वापर माहीं। तीनहु युग जिव थोरे जाहीं॥
चौथा युग जब कलियुग आवे। तब तुवशरण जीव बहु जावे॥
ऐसा वचन हार मुहिं दीजे। तब संसार गवन तुम कीजे॥

ज्ञानीवचन ।

अरे काल परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख डारा॥
बिनती तोरि लीन्ह मैं जानी। मोकहँ ठग काल अभिमानी॥
जस विनती तू मोसन कीन्ही।सो अब बकसि तोहिकहँदीन्ही॥
चौथा युग जब कलियुग आये। तब हम आपन अंश पठाये॥

छंद ।

सुरति आठों अंशसुकृत, प्रगटि हैं जग जासके ॥
ता पीछे पुनि सुरत नौतम, जायग्रह धर्मदासके ॥
अंश व्यालिस पुरुषके वे, जीव कारण आवई ॥
कलि पंथ प्रगट पसारिके, वहजीव लोक पठावई ४९॥
सोरठा-सत्य शब्द दे हाथ, जिहिपरवाना देइहै ॥
सदा ताहि हम साथ, सोजिवयम नहिं पाय है ५०

धर्मराय वचन ।

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ । जीव उबार लोक लै जाऊ ॥
वंश छाप देखों जेहि हाथा । ताहि हंस हम नाउब माथा ॥
पुरुष अवाज लीन्ह मैंमानी । विनतीएक करों तुहि ज्ञानी ॥

कालका अपना बारह पन्थ चलानेकी बात कबीरसाहेबसे कहना ।

पंथ एक तुम आप चलाऊ । जीवन लै सत लोक पठाऊ ॥
द्वादश पंथ करों मैं साजा । नाम तुम्हार लेकरों अवाजा ॥
द्वादश यम संसार पठैहों । नाम तुम्हारा पंथ चलैहों ॥
मृतु अंधा इक दूत हमारा । सकृत ग्रह लै है अवतारा ॥
प्रथम दूत मम प्रगटे जायी । पीछे अंश तुम्हारा आयी ॥
यहि विधि जीवनकोभरमाऊँ । पुरुष नामजीवन समझाऊँ ॥
द्वादश पंथजीव जो एहैं । सो हमरे मुख आन समै हैं ॥
एतिक विनती करो बनाई । कीजे कृपा देउ बगसाई ॥

कालका कबीरसाहबसे जगन्नाथ स्थापनाका वरदान मांगना ।

कलियुगप्रथमचरण जब आयब । तबहम बौद्धशरीरबनायब॥
राजा इन्द्रदवन पहँ जायब । जगन्नाथ हमनाम धरायब॥

१ प्रस्तावनामें देखो.

राजा मंडप मोर बनै है। सागर नीर खसावत जैहै ॥
पुत्र हमार विष्णु तहँ आही। सागरओइल सात तेहि पाही ॥
ताते मंडप बचन न पाई। उमँगे सागर लेइ डुबाई ॥
ज्ञानी एक मता निर्माऊ। प्रथमै सागर तीर सिधाऊ ॥
तुमकहँसागर लांघि न जाई। देखत उदधि रहे मुरझाई ॥
यहिबिधि मोकहँ थापिहुजायी। पीछे आपन अंश पठायी ॥
भवसागर तुम पंथ चलाओ। पुरुष नामते जीव बचाओ ॥
संधि छाप मोहि देहु बतायी। पुरुषनाम मोहिदेहुसुझायी ॥
विना सन्धि जो उतरै घाटा। सो हंसा नहिं पावे बाटा ॥

ज्ञानीवचन छंद।

धर्म जस तुममांगहूसो, चरितहम भलचीन्हिया ॥
पंथ द्वादश तुमकहेउसो, अमी घोरविष दीन्हिया ॥
जो मेटिडारों तोहिको अब, पलटिकलादिखावऊं ॥
लै जीवबंद छुडाय यमसो, अमर लोकसिधावऊं ४८
सोरठा–पुरुषवचनअसनाहिं, यहैसोचचित कीन्हेऊ ॥
लै पहुँचावहुँ ताहि, सत्य शब्द जो दृढ गहे॥५१॥

द्वादश पंथ कहेउ अन्याई। सो हम तोहि दीन्ह बगसाई ॥
पहिले प्रगटे दूत तुम्हारा। पीछे लेहि अंश औतारा ॥
उदधितीरकहँ मैं चलिजायब। जगन्नाथको माड मडायब ॥
ता पाछे हम पंथ चलायब। जीवन कहँ सत लोक पठायब॥

धर्मरायका कबीरसाहबको धोखा देकर उनके गुप्त भेदका पूछना।

धर्मरायवचन।

संधि छाप मोहि दीजे ज्ञानी। जस देहौं हंसहि सहिदानी ॥
जो जीव मो कहँसंधि बतावे। ताके निकट काल नहिंआवे॥

नाम निसानी मोकहँ दीजे । हे साहिब यह दाया कीजे ॥

ज्ञानीवचन ।

जो तोहि देहुँ संधि लखाई । जीवन काज होइहो दुखदाई॥
तुम परपंच जान हम पावा । काल चलै नहिं तुम्हरो दावा॥
धर्मराय तेहि परगट भाखा । गुप्त अंक बीरा हम राखा ॥
जो कोइ लेई नाम हमारा । ताहिछोडि तुमहोहु नियारा ॥
जो तुम हंसहि रोको जायी । तो तुम कालरहन नहिंपायी ॥

धर्मरायवचन ।

कहैं धर्म जाओ संसारा । आनहु जीव नाम आधारा॥
जो हंसा तुम्हरो गुण गाये । ताहि निकट तो हमनहिंजाये॥
जो कोइ जैहैं शरण तुम्हारा । हम सिर पग दै होवै पारा ॥
हम तो तुमसनकीन्ह ढिठाई । पिता जान कीन्ही लरिकाई ॥
कोटिन औगुणबालक करई । पिता एक हिरदय नहिंधरई ॥
जो पितु बालक देइ निकारी । तब को रक्षा करे हमारी ॥
धर्म राय उठ सीस नवायो । तब ज्ञानी संसार सिधायो ॥

कबीरवचन धर्मदासे प्रति ।

जब हम देखा धर्म सकाना । तब तहँवाते कीन्ह पयाना ॥
कह कबीर सुनुधर्मनि नागर । तबमैं चलि आयउँ भौसागर॥

कबीरसाहबकी ब्रह्मास भेंट ।

आया चतुराननके पासा । तासों कीन्ह शब्द परकाशा ॥
ब्रह्मा चित दै सुनवे लीन्हा । पूछ्योबहुत पुरुषको चीन्हा ॥
तबहिं निरंजन कीन्ह उपाई। जेष्ठ पुत्र ब्रह्मा मोर जाई ॥
निरंजन मन घंट विराजै। ब्रह्मा बुद्धि फेरि उपराजै॥

ब्रह्मावचन ।

निरंकार निर्गुण अविनाशी । ज्योति स्वरूपशून्यकेवासी ॥
ताहि पुरुष कहँ वेद बखाने। आज्ञा वेद ताहि हम जाने ॥

कबीरसाहबका विष्णुके पास पहुँचना ।

जब देखा तेहि काल दृढायो। तहँते उठे विष्णु पहँ आयो॥
विष्णुहि कह्यो पुरुष उपदेशा । काल वशिनहिं गहे संदेशा ॥

विष्णुवचन ।

कहे विष्णु मोसम कोआही । चार पदारथ हमरे पाही ॥
काम मोक्ष धर्मारथ माही । चाहे जौन देउँ मैं ताही ॥

ज्ञानीवचन ।

सुनहु सोविष्णु मोक्षकसतोही । मोक्ष अक्षर परले तर होही॥
तुम नाहीं थिरथीरकसकरहू । मिथ्यासाखिकवनगुणभरहू ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

रहे सकुच सुननिर्भय बानी । निजहियविष्णुआपडरमानी॥
तबपुनिनागलोकचलिगयऊ । तासेकछुकछु कहिबे लयऊ॥
पुरुषभेद कोउ जानत नाहीं । लागे सभे कालकी छाहीं ॥
राखनहार कहँ चीन्हों भाई । यम सोंको तुहिं लेइ छुडाई॥
ब्रह्मा विष्णुरुद्र जिहिध्यावैं।वेदजासु गुण निशिदिन गावैं ॥
सोइ पुरुष नहिं राखनहारा । सोइ तुमहि लै करि है गारा ॥
राखनिहार और कोउ आही । करु विश्वासमिलाऊंताही ॥
शेष खानि विष तेज सुभाऊ । वचन प्रतीतहृदय नहिं आऊ ॥
सुनहु सुलक्षण धर्मनिनागर । तब मैं आयउँ या भवसागर ॥
आये जब मृत्युमंडल माहीं । पुरुषजीवकोउ देख्योनाहीं ॥
काकहँ कहिय पुरुष उपदेशा । सो तो अधिक यमको भेषा ॥
जो घातक ताको विश्वासा । जो रक्षकतेहि बोल उदासा ॥
जाहि जपै सोई धर खाई। तब ममशब्दचेत चित आई॥
जीव मोहवश चीन्हे नाहीं । तब असभावउपजीहियमाहीं॥

छंद

मेटि डारो काल शाखा,प्रगट काल दिखावऊँ ॥
लेऊँ जीवन छोरि यम सो, अमर लोक पठावऊँ ॥
जाहि कारण रटत डोलों, सो न मोकहँ चीन्हई ॥
कालकेबश परे जिव सब, तजिसुधा विष लीन्हई ॥
सोरठा–पुरुष वचन असनाहिं, यही सोच चित कीन्हेऊ
लेपहुँचायो ताहि, शब्द परख दृढकेगहे ॥५२॥

पुनिजस चरितभयोधर्मदासा। सो सबवरनि कहोंतुवपासा॥
ब्रह्मा विष्णु शम्भुसनकादी। सबमिलिकीन्हीशून्यसमाधी॥
कवन नाम सुमिरो करतारा। कवनहिंनामध्यान अनुसारा॥
सब हिंशून्यमहँध्यान लगाये। स्वातिसनेह सीप ज्यों लाये॥
तबहि निरंजन जतन विचारा। शून्य गुफातेशब्द उचारा॥
ररांसु शब्द उठा बहु बारा। मा अक्षर माया संचारा॥
दोउ अक्षर कहँ सम कै राखा। रामनामसबहिनअभिलाखा॥
रामनाम लै जगहि दृढायो। कालफन्दकोइ चीन्हनपायो॥
यहि विधि राम नाम उत्पानी। धर्मनि परखलेहु यहवानी॥

धर्मदासबचन।

धर्मदास कहे सतगुरु पूरा। छूटेउ तिमिर ज्ञानतुव सूरा॥
माया मोह घोर अंधियारा। तामहँ जीव परे बिकरारा॥
जब तुव ज्ञानप्रगट ह्वैभाना। छूटे मोह शब्द परखाना॥
धन्य भाग हम तुमकहँ पायी। मोहिअधमकहँलीन्हजगायी॥
अब वह कथा कहों समुझाई। सतयुग कौन जीव मुकताई॥

सत्ययुगमें सत सुकृत (कवीरसाहब) के पृथ्वी पर आनेकी कथा

सतगुरुवचन ।

धर्मदास सुनु सतयुग भाऊ । जिन जीवनको नाम सुनाऊ॥
सतयुग सत सुकृत मम नाऊँ । आज्ञा पुरुष जीव चेताऊँ ॥

धोंधल राजाका वृत्तान्त ।

नृप धोंधल पहँ मैं चलि जाई । सत्य शब्द सोताहि सुनाई ॥
सत्य शब्द तिन हमरो माना । तिन कह दीन्ह पान परवाना ॥

छंद ।

राय धोंधल संत सज्जन, शब्द मम दृढके गह्यो ॥
सारसीत प्रसाद लीन्हों, चरण परसत जल लह्यो ॥
प्रेमसे गदगद भयो सब, तजेउ भर्म विभाय हो ॥
सार शब्दहिं चीन्ह लीनो; चरण ध्यान लगायहो॥

खेमसरीका वृत्तान्त ।

सोरठा–धोंधलशब्दचिताय, तब आयउमथुरानगर ॥
खेमसरि आयो धाय, नारि वृद्ध गो बालिसों ॥५३॥

कहे खेमसरि पुरुष पुराना । कहँवाते तुम कीन्ह पयाना ॥
तासों कहेउ शब्द उपदेशा । पुरुष भाव अरु यमको भेषा ॥
सुना खेमसरि उपजा भाऊ । जब चीन्हा सब यमका दाऊ॥

खेमसरीको लोकका दर्शन कराना ।

पै धोखा इक ताहि रहाई । देखे लोक तब मन पतियाई॥
राखेउ देह हंस लै धावा । पल इकमाहिं लोक पहुँचावा॥
लोक दिखाय हंस ले आयो । देह पाय खेमसरी पछतायो ॥
हे साहब लै चलु वहि देशा । यहां बहुत है काल कलेशा ॥
तासों कहेउ सुनो यह बानी । जो मैं कहूँ लेहु सो मानी ॥

टीका पूरनेपरही लोककी प्राप्ति होती है।

जबलौं टीका पूर न भाई । तब लग रहो नाम लौ लाई
तुम तो देखा लोक हमारा । जीवनको उपदेशहु सारा ॥

जीवोंको उपदेश करनेका फल।

एकहु जीव शरणागत आवे । सो जीव सत्यपुरुषको भावे॥
जैसे गऊ बाघ मुख जायी।सोकपिलहिकोइआयछुडायी॥
ता नरको सब सुयश बखाने । गऊ छुडाय बाघते आने ॥
जस कपिला कहँ केहरि त्रासा । ऐसे काल जीव कहँ ग्रासा ॥
एक जीव जो भक्ति दृढावे । कोटिक गऊ पुण्य सो पावे॥

खेमसरीवचन ।

खेमसरि परे चरण पर आयी । हे साहिब मोहि लेहुबचायी॥
मो पर दाया करहु प्रकाशा । अब नहीं परों कालकेफांसा॥

सुकृतवचन ।

सुन खेमसरि यह यमकोदेशा । बिना नाम नहिं मिटै अंदेशा॥
पान प्रवान पुरुषकी डोरी । लेहि जीव यम तिनकातोरी॥
पुरुष नाम बीरा जो पावे । फिरके भवसागर नहिं आवे॥

खेमसरीवचन ।

कह खेमसरि परवाना दीजे । यमसों छोरि अपन करि लीजै॥
और जीव हमरे गृह आही । नाम पान प्रभु दीजै ताही ॥
मोरे गृह अब धारिय पाऊ । मुक्ति संदेश जीवन समझाऊ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

भयेउँ तासु ग्रह भाव समागम। परेउचरणतरनारिसुधासम ॥
खेमसरी सब कहि समझायी। जन्म सुफल करु रे सबभायी॥

खेमचरीवचन परिवार प्रति ।

जीवन मुक्ति चाहु जो भाई। सतगुरु शब्द गहो सो आई ॥
यमसो येहि छुडावन हारे । निश्चय मानो कहा हमारे ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

सब जीवन परतीत दृढावा। खेमसरीसँगसब जीवआवा ॥

सब मिलकर विनय करते हैं।

आय गहे सब चरण हमारा। साहिब मोर करो निस्तारा॥
जाते यम नहिं मोहि सताये। जन्म २ दुख दुसह नसाये॥

कबीरवचन धर्मदासप्रति।

अति अधीन देखेउनरनारी। तासों हम अस वचनउचारी॥
जो कोइ मनि है शब्द हमारा। ताकहँ कोइ न रोकनहारा ॥
जो जिय माने मम उपदेशा। मेटों ताकर काल कलेशा ॥
पुरुष नाम परवाना पावे।यमराजा तिहिनिकट न जावे॥

सुकृतवचन खेमसरी प्रति।

आनहु साज आरती केरा। काल कष्ट मेटों जिय केरा ॥

खेमसरीवचन।

कहखेमसरिप्रभु कहोविलोई। कवन बस्तु लै आरति होई ॥

सुकृतवचन-आरतीका साज। छंद।

भाव आरती खेमसरि सुन, तोहि कहूँ समुझायके॥
मिष्टान पान कर्पूर केरा, अष्ट मेवा लायके ॥
पांच बासन श्वेत वस्तर, कदलि पत्र अच्छन्दना॥
नारियल अरु पुहुपश्वेतहि, श्वेतचौकाचंदना ५१॥
सोरठा-यहआरतिअनुमानि, आनु खेमसरिसाजसब
पुंगीफल परमान, शब्द अंगचौका करे॥४५॥
और वस्तु आनहु सुठिपावन। गो घृत उत्तम श्वेतसुहावन ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

खेमसरि सुनिसिखावन माना।ततक्षणसबविस्तारसोआना ॥
सेत चंदेवा दीन्हों तानी।आरति करनयुक्ति विधिठानी ॥

पंच साधु तबइच्छाउपराजा । भक्ति भजनगुरुज्ञान बिराजा ॥
हम चौका पर बैठकलयऊ । भजन अखंड शब्द धुनभयऊ ॥
भजनअखण्डशब्द ध्वनिहोई । दुनिया चांप सके नहिं कोई ॥
सत्य समय लेचौका साजा । ज्योतिप्रकाश अखंड विराजा ॥
शब्द अंग चौका अनुमाना । मोरत नरियर काल पराना ॥
जबभयोनरियरशिलासंयोगा।कालशीश पुनिचम्पैरोगा ॥
नरियल मोरतबासउडायी । सत्य पुरुष कहजानिजनायी ॥
पांचशब्दकहितबदल फेरा । पुरुष नाम लीन्हो तिहि बेरा ॥
छनएक बैठेपुरुषतहँमायी । सकल सभा उठिआरतिलायी ॥
तबपुनिआरतिदीन्हमँडाई । तिनका तोरे जल अचवाई ॥
प्रथम खेमसरि लीन्हों पाना । पाछे और जीव समाना ॥
दीन्हेउ ध्यान अंग समुझाई । ध्यान नामते हंस बचाई ॥
रहनिगहनि सबदीन्ह दृढाई । सुमिरत नाम हंस घर जाई ॥

छंद ।

हंस द्वादश[1] बोधि सतयुग; गयउ सुखसागर करी ॥
सतपुरुषचरण सरोज परसेउ, विहँसिके अंकमभरी ॥
बूझि कुशल प्रसन्न बहु विधि,मूल जीवनके धनी ॥
बंधुहर्षित सकल शोभा मिलि, अति सुन्दर बनी ॥
सोरठा–शोभा बरणिनजाय, धर्मनिहंसन कान्तिकर
रवि षोडश शशिकाय,एक हंसउजियार जौ ॥५५॥

कछुदिन कीन्हों लोकनिवासा । देखेउआयबहुरिनिजदासा ॥
निशिदिनरहोंगुप्त जगमाहीं । मो कहँ कोइजिवचीन्हतनाहीं

१ किसी किसी प्रतिमें द्वादशके स्थानमें त्रयोदश लिखा है । और किसी किसीमें द्वादश त्रयोदश कुछभी न लिखकर " दिनदश बांधि " लिखा है । पाठकको जो अच्छा लगे जिसमें भावहो वही पढें अर्थमें कुछ भेद नहीं पडता ।

जो जीवन परबोध्यो जायी। तिनकहँ दीन्हो लोक पठायी॥
सत्य लोक हसन सुखबासा। सदा वसन्त पुरुषके पासा॥
सो देखे जो पहुँचे जाई। जिनयहि रचा सोकहाचिताई॥

त्रेतायुगमें मुनींद्र (कबीरसाहब) के पृथ्वीपर आनेकी कथा।

सतयुगगयो त्रेतायुग आवा। नाम मुनींद्र जीव समुझावा॥
जब आयेउ जीवन उपदेशा। धर्मराय चित भयउ अँदेशा॥
इन भवसागर मोर उजारा। जिव लै जाहि पुरुष दरबारा॥
केतो छल बल करे उपाई। ज्ञानी डर तिहि नाहिं डराई॥
पुरुष प्रताप ज्ञानिके पासा। ताते मोर न लागे फांसा॥
इनते काल कछु पावै नाहीं। नाम प्रताप हंस घर जाहीं॥

छंद।

सत्यनाम प्रताप धर्मनि, हंस घर निज कै चलै॥
जिमि देख केहरि त्रास गज, हिय कंप करधरनी रलै
पुरुष नाम प्रताप केहरि, काल गज सम जानिये॥
नाम गहि सत लोक पहुँचे, गिराममफुरमानिये५३॥

सोरठा—सतगुरु शब्द समाय, गुरु आज्ञा निरखत रहे॥
रहे नाम लौ लाय, कर्म भर्म मनमति तजे॥ ५६॥

त्रेतायुग जबही पगु धारा। मृत्यु लोक कीन्हों पैसारा॥
जीव अनेकन पूछा जाई। यमसे को तुहि लेहिछुडाई॥
कहे भर्म वश जीव अयाना। हमरा करता पुरुष पुराना॥
विष्णु सदा हमरे रखवारा। यमते मोहि छुडावनहारा॥
कोइ महेशकी आश लगावें। कोइ चण्डी देवी कहँ गावें॥
कहाकहोंजिव भयो बिगाना। तजेउखसम कहजारविकाना॥
भर्म कोठरी सब दिन डारा। फंदा दे सब जीवन मारा॥

सत्य पुरुषकी आयसु पाऊं। कालहि मेटि छोर जिवलाऊं॥
जोर करों तो वचन नसायी। सहजहिं जीवन लेउं चितायी॥
जो ग्रासे जिव सेवैं ताही। अनचीन्हे यमके मुख जाहीं॥

विचित्र भाटकी कथा लंकामें।

चहुँदिश फिरिआयेउँगढलंका।भाटविचित्रमिल्योनिःशका॥
तिन पुनि पूछेउमुक्ति संदेशा। तासों कह्यो ज्ञान उपदेशा॥
सुनाविचित्रतबहिभ्रम भागा। अति अधीन ह्वै चरणन लागा
कहे शरण मुहि दीजै स्वामी। तुम सबपुरुष सदासुखधामी॥
कीजे मोहि कृतारथ आजू। मोरे जिवकर कीजे काजू॥
कह्यो ताहिआरतिको लेखा। खेमसरिहि जस भाषेउ रेखा॥
आनेहु भाव सहितसबसाजा। आरतकीन्ह शब्दधुनिगाजा॥
तृण तोरा बीरा तिहि दीन्हा। ताके ग्रहमें काहु न चीन्हा॥
सुमिरणध्यान ताहिसो भाखा। पुरुष डोरि गोय नहिंराखा॥

छंद।

विचित्र वनिता गयी नृप ढिग, जायरानीसो कही॥
इक योगी सुन्दर है महामुनि, तासुमहिमाकाकही॥
श्वेत कला अपार उत्तम, और नहिं अस देखेऊं॥
पति हमारे शरण गहितिहि,जन्मशुभकरिलेखेऊं५४

मंदोदरीका वृत्तान्त।

सोरठा–सुनत मंदोदरिचाव, दरश लेनअकुलानेऊ॥
वृषलीसंगलेआव, कनक रतन लै पगुधरयो५७
चरण टेकिके नायो शीशा।तबमुनीन्द्रपुनिदीन्हअशीशा॥

मन्दोदरीवचन।

कहे मँदोदरिशुभदिन मोरी। विनती करों दोइ कर जोरी॥

ऐसा तपसी कबहुँ न देखा । श्वेत अंग सब श्वेतहि भेखा ॥
जिव कारज मम हो जिहि भांती।सो मोहि कहो तजो कुलजाती
हे समरथ मोहि करहु सनाथा । भव बूडत गहि राखो हाथा ॥
अब अति प्रिय मोहि तुम लागे।तुम दयाल सकलहु भ्रम भागे॥

मुनींद्रवचन मंदोदरी प्रति ।

सुनहु वधू प्रिय रावण केरी । नाम प्रताप कटे यम बेरी ॥
ज्ञान दृष्टिसों परखहु भाई।खरा खोट तोहि देउँ चिन्हाई॥
पुरुष अमानअजरमनिसारा । सो तो तीन लोकते न्यारा ॥
तेहि साहिब कहँ सुमिरै कोई । आवा गमन रहित सो होई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सुनतहि शब्द तासु भ्रम भागा।गह्यो शब्द शुचिमन अनुरागा॥
हे साहिब मोहि लीजे शरणा । मेटहु मोर जन्म अरु मरणा॥
दीन्हों ताहि पान परवाना । पुरुष डोर सौंप्यो सहिदाना ॥
गदगद भई पाय घर डोरी । मिलिरंकहिंजिमिद्रव्यकरोरी ॥
रानी टेकेउ चरण हमारा । ता पाछे महलन पगु धारा ॥

विचित्र वधूका वृत्तान्त ।

विचित्र वधू रानी समुझावा । गहो शरण जीवन मुकतावा ॥
विचित्रनारिगहिरानिसिखापन।लीन्हेसिपानतजिभ्रमआपन ॥

मुनींद्रका रावणके पास जाना[1] ।

तब मैं रावणपहँ चलि आयो । द्वारपालसों वचन सुनायो ॥

मुनींद्रवचन द्वारपाल प्रति ।

तासों एक बात समुझाई । राजा कहँ तुम आव लिवाई ॥

द्वारपालवचन ।

तब पौरिया विनय यह लाई । महा प्रचंड है रावण राई ॥

---

१ यह रावणवाली कथाभी पुरानी पुस्तकोंमें नहीं है प्रस्तावनामें देखो ॥

शिव बल हृदय शंक नहिं आने।काहूकेर वचन नहिं माने ॥
महा गर्व अरु क्रोध अपारा । कहों जाय मोहि पलमें मारा ॥

मुनींद्रवचन द्वारपाल प्रति ।

मानहु वचन जाव यहि बारा। रोम बंक नहिं होय तुम्हारा॥
सत्य वचन तुम हमरो मानो । रावण जाय तुरत तुम आनो॥

प्रतिहारवचन ।

ततक्षण गा प्रतिहार जनायी । द्वै कर जोरे ठाढ रहाई ॥
सिद्ध एक तो हम पहँ आई । ते कह राजहि लाव बुलाई ॥

रावणका क्रोध प्रतिहार प्रति ।

सुन नृप क्रोध कीन्ह तेहि बारा।तैं मतिहीन आहि प्रतिहारा ॥
यह मति ज्ञान हरो किन तोरा । जो तैं मोहि बुलावन दौरा ॥
दर्श मोर शिव सुत नहिंपावत। मो कह भिक्षुक कहा बुलावत॥
हे प्रतिहार सुनहु मम वानी । सिद्ध रूप कहोमोहि बखानी॥
वर्णनहै कौन कौनतिहि भेषा । मो सन कहो दृष्टि जस देखा॥

प्रतिहारवचन ।

अहो रावण तेहि श्वेतस्वरूपा। श्वेतहि माला तिलक अनूपा॥
शशि समान है रूप विराजा। श्वेत वसन सब श्वेतहिसाजा॥

मन्दोदरी वचन ।

कहे मँदोदरि रावण राजा। ऐसो रूप पुरुषको छाजा ॥
वेगे जाय गहो तुम पाई । तो तुव राज अटल होय जाई ॥
छोडहु राजा मान बडाई । चरण टेकि जो सीस नवाई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

रावण सुनत क्रोध अति कीन्हा।जरत हुताशन मनु घृत दीन्हा॥
रावण चला शस्त्र लै हाथा । तुरत जाय तिहि काटोंमाथा ॥
मारों ताहि सीस खसि परयी । देखों भिक्षुक मोरका करयी ॥

जहँ मुनींद्र तहँ रावण राई। सत्तर वार अस्त्र कर लाई ॥
लीन्ह मुनींद्र तृण कर ओटा। अति बल रावण मारै चोटा ॥

छन्द।

तृण ओट यहि कारणे है, गर्व धारी राय हो ॥
तेहि कारणे यह युक्ति कीन्ही, लाज रावण आयहो ॥

मन्दोदरीवचन।

कहै मंदोदरि सुनहु राजा, गर्व छोडो लाज हो ॥
पांव टेकहु पुरुषके गहि, अटल होवै राज हो ॥५५॥

रावणवचन।

सो०–सेवाकरौंशिवजाय, जिनमोहि राज अटल दिये
ताकर टेकों पांय, पल दँडवत क्षण ताहिको ॥५८॥

मुनींद्रवचन।

सुन अस वचन मुनींद्र पुकारी। तुम हो रावण गर्व अहारी ॥
भेद हमारा तुव नहिं जाना। वचन एक तोहि कहों निशाना॥
रामचन्द्र मारैं तुहि आयी। मांस तुम्हार श्वान नहिं खायी॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

रावणको कीन्हों अपमाना। अवधनगर पुनि कीन्ह पयाना॥

मधुकरकी कथा। छंद।

रावणको[1] अपमान करी, तब अवधनगरहि आयऊ॥
विप्र मधुकर मिलेउ मारग; दरश तिन मम पायऊ॥
मिलेउ मोकहँ चरण गहि, तबसीसनायअधीनता ॥
करिविनयबहु लेगयोमंदिर, कीन्हबहुबिधिदीनता॥

---

१ छन्दकी इस पंक्तिके बदले पुराने ग्रन्थोंमें ऐसा लिखा है "तीन जीव परमोधि लंका तब अवध नगरहि आयऊ ॥" प्रस्तावनामें देखो।

सोरठा–रंक विप्र थिर ज्ञान,बहुत प्रेम मोसों कियो
शब्द ज्ञान सहिदान; सुधासरितविहँसतवदन ५९

देख्यो ताहि बहुत लवलीन्हा।तासों कह्यो ज्ञानको चीन्हा ॥
पुरुष सँदेश कहेउ तिहि पासा।सुनतबचन जियभयउहुलासा॥
जिमि अंकुर तपै विन वारी।पूर्ण उदक जो मिले खरारी ॥
अम्बु मिलत अंकुर सुख माना।तैसहि मधुकर शब्दहिजाना॥

मधुकरवचन ।

पुरुष भाव सुन तेहि हरषंता । मोकहँ लोक दिखावहु संता ॥

मुनींद्रवचन ।

चलहुतोहिलैलोक दिखावों।लोक दिखाय बहुरि लै आवों॥

कबीरवचन धमदास प्रति ।

राख्यो देह हंस लै धाये।अमर लोक लै तिहि पहुँचाये॥
शोभा लोक देख हरषाना।तब मधुकरको मन पतियाना॥

मधुकरवचन ।

परयो चरण मधुकर अकुलाई।हे साहिब अब तृषा बुझाई ॥
अब मोहि लेइचलोजगमाहीं ।और जीव उपदेशो ताहीं ॥
और जीव गृहमाहि जौ आई। तिन कहँ हम उपदेश बजाई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

हंसहि लै आये संसारा । पैठ देह जाग्यो द्विजबारा ॥
मधुकर घर षोडश जिव रहई । पुरुष संदेश सबनसों कहई ॥
गहहु चरण समरथके जाई । यही लेहिं जमसों मुकताई॥
मधुकरवचन सबन मिलिमाना । मुक्ति जान लीन्होंपरवाना ॥

मधुकरवचन ।

कह मधुकर विनती सुन लीजै।लोक निवास सबन कहँ दीजै॥
यह यम देश बहुत दुख होई । जीव अम्बु बूझै नहिं कोई ॥

मोहि सब जीवनलै चलुस्वामी। कृपा करहु प्रभु अंतरयामी ॥

छंद।

यहि देश है यम महा परबल जीव सकल सतावई ॥
कष्ट नाना भांति व्यापे मरण जीवन लावई ॥
काम क्रोध कठोर तृष्णा लोभ माया अति बली॥
देव मुनिगण सबहिंव्यापेकोट जीवन दलमली५७
सो०--तिहुपुर यमको देश, जीवन कहँ सुखछनकनहिं
मेटहु काल कलेश, लेइ चलहु निज देशकहँ॥६०॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

बहुत अधीन ताहि हम जाना। करचौकातब दीन्ह परवाना॥
षोडश जिव परवाना पाये। तिन कहँ लै सतलोक पठाये॥
यमके दूत देख सब ठाडे। चितवहिंजेजनऊर्द्ध अखाडे ॥
पहुँचे जाय पुरुष दरबारा। अंशन हंसन हर्ष अपारा ॥
परसे चरण पुरुषके हंसा। जन्म मरणको मेटेउ संसा ॥
सकल हंस पूछी कुशलाई। कहुद्विजकुशलभयेअब आई ॥
धर्मदास यह अचरज बानी। गुप्त प्रगट चीन्हें सोइ ज्ञानी ॥
हंसन अमर चीर पहिराये। देह हिरम्मर लखि सुख पाये॥
षोडश भानु हंस उजियारा। अमृत भोजन करे अहारा॥
अगर वासना तृप्त शरीरा। पुरुष दरश गदगद मति धीरा॥
यहि विधि त्रेतायुगको भावा। हंस मुक्त भये नाम प्रभावा॥

द्वापरयुगमें करुणामय(कबीरसाहब)के पृथ्वीपर आनेकी कथा

त्रेता गत द्वापर युग आवा। तब पुनि भयो काल परभावा॥
द्वापर युग प्रवेश भा जबही। पुरुषअवाजकीन्हपुनितबही ॥

पुरुषवचन।

ज्ञानी वेगि जाहु संसारा। यमसों जीवन करहु उबारा ॥

काल देत जीवन कहँ त्रासा । काटो जाय तिनहिंको फांसा ॥
कालहि मेटि जीव लै आवो । बार बार का जगहिसिधावो ॥

ज्ञानीवचन ।

तब हम कहा पुरुषसों बानी । आज्ञा करहु शब्द परवानी ॥

पुरुषवचन ।

कहा पुरुष सुन योग सँतायन । शब्द चिताय जीव मुक्तायन ॥
जो अब काल कीन्हअन्याई । हो सुत तुम मम वचन नशाई ॥
अबतो परे जीव यम फंदा । जुगुतहि आनहु परम अनंदा ॥
काल चरित परगट ह्वै जाई । तब सब जीव चरण गहेआई ॥
ज्ञान अज्ञान चीन्हनहिं जायी । जाय प्रगटह्वैजिवनचितायी ॥
सहज भाव जग प्रगटहु जाई । देखहु भाव जिवनको भाई ॥
तोहि गहे सो जिव मुहिं पैहै । तनु प्रतीत बिरले यम खैहै ॥
जाई करहु जीव कडिहारी । तोपर है परताप हमारी ॥
हमसों तुमसों अंतर नाहीं । जिमि तरंग जलमांहिसमाहीं ॥
हमहिं तुमहिं जो दुइकर जाना । ता घट यम सबकरिहै थाना ॥
जाहु वेगि तुम वा संसारा । जीवन खेइ उतारहु पारा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

चले ज्ञानी तब माथ नवायी । पुरुषआज्ञाजगमांहिसिधायी ॥
पुरुष अवाज चल्यो संसारा । चरण टेकु मम धर्म लवारा ॥

निरञ्जनवचन छंद ।

तुहे धर्मराय अधीन है, बहु भांति विनती कीन्हेऊ
किहि कारणे अब जग सिधारेहु ,मोहि सोमतिदीन्हेऊ
असकरहुजनिसबजगचितावहु इहै विनतीमैं करौं ॥
तुम बंधु जेठे छोट मैं कर जोर तुम पांयन परौं ५८

ज्ञानीवचन।

सो०-कह्यो धर्मसुनबात, विरलजीवमोहि चीन्हिहैं॥
शब्दन को पतियाय, तुम अस कै जीवन ठगे॥१॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

अस कह मृत्यु लोक पगु धारा। पुनि परमारथ शब्दपुकारा॥
छोड्यो लोक लोककी काया। नरकीदेह धारि तब आया॥
मृत्युलोकमें हम पगु धारा। जीवन सो सतशब्दपुकारा॥
करुणामय तब नाम धराया। द्वापर युगजबमहिमें आया॥
कोइ न बूझें हेला मेरी। बांधेकाल विषम भ्रम बेरी॥

रानीइन्द्रमतीकी कथा।

गढ गिरनार तबहि चलिआये। चंद्रविजय नृप तहां रहाये॥
तेहि नृप ग्रह रह नारि सयानी। पूजै साधु महातम जानी॥
चढी अटारी वाट निहारे। सत दरश कहँ कायागारे॥
रानी प्रीति बहुत हम जाना। तेहि मारग कहँ कीन्ह पयाना॥
मोहि पहँ दृष्टि परी जब रानी। वृषली[1] रसना कहयह बानी॥

इन्द्रमतीवचन।

मारग बेगि जाहु तुम धाई। देखहु साधु आनु गहि पांई॥

दासीवचन।

वृषली आय चरण लपटानी। नृपवनिता मुख भास सयानी॥
कहीवृषली रानिअस भाषा। तुव दर्शन कहँ बहु अभिलाषा॥
देहु दरश मोहि दीनदयाला। तुम्हरे दरश मिटे सब साला॥

करुणामयवचन दासी प्रति।[2]

तब ज्ञानी कहि वचन सुनावें। राज राव घर हम नहिं जावें॥
राज काज है मान बडाई। हम साधू नृप गृह नहिं जाई॥

१ दासी, लौंडी। २ इस हेडिंगके नीचेकी ६ पंक्तियां पुरानी प्रतियोंमें नहीं हैं।

दासीवचन रानी प्रति ।

चलि वृषली रानीपहँ आयी । द्वै कर जोरे विनय सुनायी ॥
साधु न आवे मौर बुलाई । राज राव घर हम नहिं जाई॥
यह सुन इन्द्रमती उठि धाई । कीन्ह दंडवत टेके पांई ॥

इन्द्रमती वचन ।

हे साहिब मोपर करु दाया । मोरे गृह अब धारिये पाया ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति ।

प्रीति देख हम भवन सिधारे । राजा घर तबहीं पग धारे ॥
कहे रानी चलुमन्दिर मोरे । भयो सुखी दर्शन लिये तोरे॥
प्रीति देखि तेहि भवनसिधाये । दीन्ह सिंहासन चरणखटाये॥
दीन्ह सिंहासन चरण पखारी । चरणपरछालन अंगोछाधारी॥
चरण धोय पुनि राखेसिरानी । पट पद पोंछजन्मशुभजानी ॥

इन्द्रमतीवचन ।

पुनि प्रसादको आज्ञा मांगी । हेप्रभु मोकहँ करहु सुभागी ॥
जूठन परै मोर गृहमाहीं । सीतप्रसाद लै हमहूँ खाहीं ॥

करुणामयवचन ।

सुनरानी मोहि क्षुधा न होई । पंचतत्त्व पावे जेहि सोई ॥
अमृत नाम अहार है मोरा । सुनु रानी यह भाष्यो थोरा ॥
देह हमारि तत्त्व गुण न्यारी । तत्त्व प्रकृतिहिंकालरचिवारी ॥
असी पंच किहुकाल समीरा । पंचतत्त्वकी देह खमीरा ॥
तामह आदि पवन इक आही । जीव सोहंग बोलिये ताही ॥
यह जिव अहै पुरुषको अंशा । रोकसि काल ताहिदसंशा ॥
नानाफन्द रचि जीवगरासै । देइ लोभ तब जीवहिफांसै ॥
जिवतारन हमयहि जग आये । जोजीवचीन्ह ताहि मुक्ताये ॥
धर्मराय अस बाजी कीन्हा । धोक अनेक जीव कहँ दीन्हा॥

नीर पवनकृत्रिम किहुकाला। विनशिजायबहु करैबिहाला ॥
तनहमार यहिसाज तेन्यारा। ममतननहिंसिरज्योकरतारा ॥
शब्द अमान देह है मोरा। परखिगहहु भाष्यो कछुथोरा॥

कबीरवचन धमदास प्रति।

सुनि वचन अचल भौ भारी। तब रानी अस वचन उचारी॥

रानी इन्द्रमतीवचन।

हे प्रभु अचरज यह होई। अस सुभाव दूजा नहिं कोई ॥

छंद।

इन्द्रमति आधीन है कहै, कृपा करहुदयानिधी ॥
एक एक बिलोय वरणहु, मोहिते सकलहु विधी ॥
विष्णु सम दूजा नहीं कोइ, रुद्र चतुरानन मुनी ॥
पंचतत्व खमीरतन तिहि, तत्वके वश गुण गुणी ॥

सोरठा-तुमप्रभुअगम अपार, वरनो मोतेकितभये॥
मटहुतृषा हमार, अपनोपरिचय मोहि कहु ६२

हे प्रभुअस अचरज मोहि होई। अस सभाव दूजा नहिंकोई॥
कौन आहु कहँवाते आये। तनअचिंतप्रभु कहँवा पाये ॥
कौन नाम तुम्हरो गुरु देवा। यहसब वरणकहोमोहि भेवा॥
हम का जानहिं भेद तुम्हारा। ताते पूछों यह व्यवहारा ॥

करुणामयवचन।

इन्द्रमती सुनु कथा सुहावन। तोहिसमुझायकहोंगुणपावन ॥
देश हमार न्यार तिहुँ पुरते। अहिपुर नरपुरअरु सुरपुरते ॥
तहां नहीं यम केर प्रवेशा। आदि पुरुषको जहवा देशा॥
सत्य लोकतेहि देश सुहेला। सत्य नाम गहि कीजे मेला॥
अद्भुतज्योतिपुरुषकी काया। हंसन शोभा अधिक सुहाया॥

आदिपुरुषशोभाअधिकारा । पटतर कहा देहुँ संसारा ॥
द्वीपकरी शोभा उजियारी । पटतर देहुँ काहि संसारी ॥
यहितीनोंपुरअस नहिं कोई । जाकर पटतर दीजै सोई ॥
चन्द्र सूर यहि देश मँझारा । इन सम और नहीं उजियारा ॥
सत्य लोककी ऐसी बाता । कोटिकशशिइकरोमलजाता ॥
एक रोमकी शोभा ऐसी । और वदनकी वरणो कैसी ॥
ऐसे पुरुष कान्ति उजियारा । हंसन शोभा कहों बिचारा ॥
एक हंस जस षोडश भाना । अग्र वासना हंस अघाना ॥
तहँ कबहूँ यामिनि नहिं होई । सदा अजोर पुरुष तन सोई ॥
कहा कहों कछु कहत नआवे । धन्य भाग जे हंस सिधावे ॥
ताहि देशते हम चलि आये । करुणामय निज नामधराये ॥
सतयुग त्रेता द्वापर नामा । तोसनवचन कहों सुखधामा ॥
युगन युगनमें मैं चलि आवों । जो चेते तेहि लोक पठावों ॥

इन्द्रमती वचन ।

हे प्रभु औरो युग तुम आये । कौन नाम उन युगन धराये ॥

करुणामयवचन ।

सतयुगमें सतनाम कहाये । त्रेता नाम मुनीन्द्र धराये ॥
युगन युगन हम नाम धरावा । जोचीन्हा तिहिलोकपठावा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

धर्मदास तेहि कह्यो बुझायी । सतयुग त्रेता कथा सुनायी ॥
सोसुनिअधिकचाहतिनकीन्हा। और बातसूपूछन लीन्हा ॥
उत्पति प्रलय और बहु भाऊ । यमचरित्रसबवरनि सुनाऊ ॥
जेहिविधि षोडशसुत प्रगटाना। सोसब भाष सुनायो ज्ञाना ॥
कूर्म विदार देवी उत्पानी । सो सबताहिकहासहिदानी ॥
ग्रास अष्टंगी और निकासा । जेहिविधिभयेमहिआकाशा ॥

सिन्धु मथन त्रय सुत उत्पानी। सबही कहे उपाछिल सहिदानी
जेहि विधि जीवन जम ठगिराखा। सो सबताहि सुनायउ भाषा
सुनत ज्ञान पाछिल भ्रम भागा। हरषिसो चरण गहे अनुरागा॥

इन्द्रमती वचन।

जोरिपाणि बोली बिलखायी। हे प्रभु यमते लेहु छुडाई॥
राज पाट सब तुम प वारों। धन सम्पतियहसबतजिडारों॥
देहु शरण मुहिंदीनदयाला। बंदिछोरमुहिं करहु निहाला॥

करुणामयवचन।

इन्द्मती सुनु वचन हमारा। छोरों निश्चय बन्दि तुम्हारा॥
चीन्हेउ मोहि परतीत दृढाना। अब देहुँ तोहि नाम परवाना॥
करहु आरती लेवहु परवाना। भागे यम तब दूर पयाना॥
चीन्हों मोहि करौ परतीती। लेहु पान चलु भौ जल जीती॥
आनहुजो कछु आरति साजा। राज पाट कर मोहि न काजा॥
धनसम्पति कछु मोहि न भावा। जीव चितावन यहिजगआवा॥
धन संपति तुम यहँवा लायी। करहु सन्त सन्मान बनायी॥
सकल जीव हैं साहिब केरा। मोहविवश जिव परे अंधेरा॥
सब घटपुरुषअंश कियो वासा। कहीं प्रगट कहिंगुप्त निवासा॥

छंद।

सब जीवहै सतपुरुषको वश, मोह मर्म विगानहो॥
यमराजकोयह चरित सब,भ्रमजालजगपरधानहो॥
जिवकालवश ह्वै लरत मोसे, भ्रम वश मोहि न चीन्हई
तजि सुधा कीन्हो नेह विषसें, छोडि घृतअँचवे मही ६०
सो०–कोइइकविरला जीव,परखि शब्द मोहि चीन्हई
धाय मिले निज पीव, तजे जारको आसरो॥६२॥

इंन्द्रमतीवचन ।

इन्द्रमती सुनि वचन अमानी । बोली मधुर ज्ञान गुण बानी ॥
मोहि अधमको तुमसुखदीन्हा । तुव प्रसाद आगमगमचीन्हा ॥
हे प्रभुचीन्ह तोहि अव पाहू । निश्चय सत्य पुरुष तुमआहू ॥
सत्य पुरुष जिन लोकसँवारा । करेहु कृपा सो मोहि उदारा ॥
आपन हृदय असहमजाना । तुमते अधिक और नहिंआना ॥
अब भाषहुप्रभु आरति भाऊ । जो चाहिय सो मोहि बताऊ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

हे धर्मनि सो ताहि सुनावा । जस खेमसरि सोभाषेउभावा ॥
चौका कर लेवहु परवाना । पाछे कहों अपन सहिदाना ॥
आनेउ सकल साज तब रानी। चौका बैठिशब्द ध्वनि ठानी ॥
आरति कर दीन्हा परवाना । पुरुषध्यान सुमिरणसहिदाना ॥
उठि रानी तब माथ नवायी । ले आज्ञा परवाना पायी ॥
पुनि रानी राजहि समुझावा । हे प्रभु बहुरि न ऐसो दावा ॥
गहो शरण जो कारज चाहो । इतना वचन मोर निरवाहो ॥

राजा चन्द्रविजयवचन ।

तुम रानी अरधंगी सोई । हम तुम भक्त होंय नहिं दोई ॥
तोरि भक्ति कर देखो भाऊ । किहि विधिमोहि लेहुमुक्ताऊ ॥
देखो तोरि भक्ति परतापा । पहुंचो लोक मिटै संतापा ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

रानी बहुरि मोहि पहँ मायी । हम तिहिकालचरित्र लखायी ॥
रानी आइ हमारे पासा । तासो किया वचन परकासा ॥

करुणामयवचन ।

सुनु रानी एक वचन हमारा । कालहुकला करे छल धारा ॥
काल व्यालह्वै तो पहँ आयी । डसे तोहि सो देउँ बतायी ॥

तो कहँशिष्य कीन्ह मैं जानी। डसे काल तक्षक है आनी ॥
तब हम तो कहँ मंत्र लखायी। काल गरल तब दूर परायी ॥
दीहों शब्द विरहुली[1] ताही। काल गरलजेहिव्यापेनाहीं ॥
पुनि यमदूसरछल तोहिठानी। सो चरित्र मैं कहों बखानी ॥
छल कर यम आहै तुम पासा। सो तुहि भेद कहों परगासा ॥
हंसवर्ण वह रूप बनायी। हम सम ज्ञान तोहि समझायी॥
तुम सन कहे चीन्ह मुहिंरानी। मरदन काल नाम ममज्ञानी॥
यहि विधिकालठगेतोहिआयी।काल रेख सब देउँ बतायी ॥
मस्तक छोटा काल कर जानू। चक्षु गुंजनको रंग बखानू ॥
काल लक्ष मैं तोहि बतायी। और अंग सब सेत रहायी ॥

इन्द्रमतीवचन।

रानी चरण गहे तब धायी। हे प्रभु मोहि लोक लै जायी॥
यह तो देश आहि यम केरा। लै चलु लोक मिटै झकझोरा॥
यह तो देश कालकर थानी। हे प्रभु लै चलु देश अभानी॥

करुणामयवचन।

तब रानीसों कहेउ बुझायी। वचन हमारसुनो चितलायी॥
अब तोर तिनका यमसोटूटा। परिचय भयोसकलभ्रमछूटा ॥
निशिदिन सुमरोनाम हमारा। कहा करे यमधर्म लबारा ॥
जब लगि ठेका पूरे नाई। तब लग रहो नाम लै लाई ॥

छंद।

सुमरु नाम हमार निशिदिन,काल तोकहँजबछले॥
टीका पुरे नाहीं जौलौं, तौलौं जीव नाहीं चले ॥

---

[1] विरहुली इसी ग्रन्थके अन्तमें दखो।

काल कला प्रचंड देखो,गजरूप धर जग आवई ॥
देखिकेहरि गजत्रास माने,धीर बहुरि न लावई६१॥
सोरठा–गजरूपी हैकाल,केहरि पुरुष प्रताप है ॥
रोप रहो तुमढाल,काल खडग व्यापे नहीं॥६४॥

इन्द्रमतीवचन ।

हे साहिब मैं तुमकहँ जानी । वचन तुम्हारलीन्ह सिरमानी॥
विनतीएक करौं तुहि स्वामी । तुम तो साहिब अंतरयामी ॥
काल व्याल ह्वै मोहि सतायी । अरुपुनि हंस रूप भरमायी॥
तब पुनिसाहिबमो पहँ आऊ। हंस हमार लोक लै जाऊ ॥

करुणामयवचन ।

कह ज्ञानी सुन रानी बाता । तुमसों एक कहों विख्याता॥
काल कला धरती पहँआयी । नाना रंग चरित्र बनायी ॥
तोरो ताहि मान अपमाना । मोहि देख तब काल पराना॥
तेहि पीछे हम तुमलग आवैं । हंस तुम्हार लोक पहुँचावैं ॥
शब्द तोहि हम दीन्ह लखाई । निशिदिनसुमरोचित्तलगायी॥

कवीरवचन धर्मदास प्रति ।

इतना कह हम गुप्त छिपाया । तक्षक रूप काल हो आया ॥
चित्रसार पर तक्षक आया । रानी केर तहँ पलँग रहाया ॥
जबहीं रात बीतगइ आधी । रानी उठि चली सेवा साधी ॥
रानी सब कहँ सीस नवायी । चली तबै महलन कहँ आयी॥
सेज आय रानी पौढायी । डसेउ व्यालमस्तक महँजायी ॥

इन्द्रमतीवचन ।

इन्द्रमती अस वचन सुनायी।तक्षकडसेउमोहिकहँ आयी ॥
सुन राजा व्याकुल ह्वै धावा ।गुणी गारुडी वेगि बुलावा ॥

१ इस छन्दसे लेकर बहुतसी चौपाई नवीन और पुरानी प्रतियोंमें नहीं है । विशष प्रस्तावनामें देखो ।

रायकहे मम प्राण पियारी । लेहु चिताय जो अबकी बारी ॥
तक्षक गरल दूर हो जायी । देहुँ परगना तोहि दिवायी ॥

इन्द्रमती वचन ।

शब्द विरहुलीजपेउरानी, सुरतिसाहिबराखिहो ॥
वैद गारुडि दूर भाग्यो, दूर नरपति नाहिं हो ॥
मंत्र मोहि लखाय सतगुरु,गरल मोहि न लागई ॥
होतसूर्यप्रकाश जेहिक्षण,अंधअघोर नशावई॥६२॥
सोरठा–ऐसे गुरू हमार,बार बार विनती करौं ॥
ठाढभयी उठिनार,राजालखि हरषितभयो ॥ ६३ ॥

यमदूतवचन ।

चल्यो दूत तब उहँवा जायी । जहँ ब्रह्मा विष्णु महेश रहायी॥
कहे दूत विष तेजन लागा । नाम प्रताप बन्ध लो भागा ॥

विष्णुवचन ।

कहे विष्णु सुन हो यमदूता । सतहि अंग करो तुम पूता ॥
छल करिजाइ लिवाइयरानी । वचन हमार लेहु तुम मानी ॥
कीन्हों दूत सेत सब अंगा । चलेउ नारि पहँ बहुत उमंगा॥

यमदूतवचन ।

रानी सो असवचन प्रकाशा । तुम कस रानी भई उदासा ॥
जानि बूझिकसभई अचीन्हा । दीक्षा मंत्र तोहि हम दीन्हा ॥
ज्ञानी नाम हमारो रानी । मरदों काल करौं पिसमानी ॥
तक्षक काल होयतोहिखायी । तब हमराखलीन्ह तोहिआयी॥
छोड़हु पलँग गहो तुम पाई । तजहु आपनी मान बड़ाई ॥
अब हम लैन तोहि कहँ आवा । प्रभुके दर्शन तोहि करावा ॥

इन्द्रमतीवचन।

इन्द्रमती तब चीन्हेउरेखा। जस कछुसाहिब कहेउविशेखा॥
तीनों रेख देख चख माहीं। जर्द सेत अरु राता आहीं॥
मस्तक ओछ देख पुनि ताको। भयोप्रतीत वचनको साको॥
जाहु दूत तुम अपने देसा। अबहम चीन्हेउ तुम्हरो भेसा॥
काग रूप जो बहुत बनाई। हंस रूप शोभा किमि पाई॥
तस हम तोरा रूप निहारा। ऐसमर्थ बड गुरू हमारा॥

यमदूतवचन।

यह सुनि दूत रोष बड कीन्हा। इन्द्रमतीसों बोले लीन्हा॥
बार बार तो कहँ समुझावा। नारि न समुझत मतीहिरावा॥
बोला वचन निकटचलि आवा।इन्द्रमती परथाप चलावा॥
थाप चलाय सु मुख पर मारा। रानी खसि परिभूमि मँझारा॥

इन्द्रमतीवचन।

इन्द्रमती तब सुमिरण लाई। हे गुरु ज्ञानी होहु सहाई॥
हम कहँ कालबहुत विधि ग्रासा।तुमसाहिब काटोयमफांसा॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

सुनत पुकारसुहिरहो न जायी।सुनहु धर्मनियहमोरसुभायी॥
रानी जबही कीन्ह पुकारा। ततछिन मैं तहांहि पगुधारा॥
देखत रानी भयी हुलासा। मनते भग्यो कालको त्रासा॥
आवत हमरे काल पराया। भयी शुद्ध रानीकी काया॥

इन्द्रमतीवचन।

पुनि कह इन्द्रमती करजोरी। हे प्रभु सुनु विनती एक मोरी॥
चीन्हिपरीमोहि यमकी छाहीं। अब यहि देशरहबहम नाहीं॥
हे साहब लै चलु निज देशा। इहवां है बहु काल कलेशा॥
इहि विधि कही भयी उदासा। अबहीं लै चलु पुरुषकेपासा॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

प्रथमहि रानी कीन्हों संगा । मेटयो काल कठिन परसंगा ॥
तबहीं ठीका पूर भराया । ले रानी सत लोक सिधाया ॥
ले पहुँचायो मान सरोवर । जहवां कामिनि करहिं कतोहर ॥
अमी सरोवर अमी चखायी । सागर कबीर पांव परायी ॥
तेहि आगे सुरतिको सागर । पहुँची रानी भई उजागर ॥
लोक द्वार ठाढ तब कीन्ही । देखत रानी अति सुख भानी ॥
हंस धाय अंकम भर लीन्हा । गावहिं मंगल आरतिकीन्हा ॥
सकल हंस कीन्हा सनमाना । धन्य हंस सतगुरु पहिचाना ॥
भल तुम छोडेहुकालकाफन्दा। तुम्हरो कष्ट मिटयोदुखद्वन्दा ॥
चलो हंस तुम हमरे साथा । पुरुष दरश करिनावहुमाथा ॥
इन्द्रमती आवहु संग मोरे । पुरुष दरश होवें अब तोरे ॥
इन्द्रमती अरु सकल हंसमिलाहीं। करहिं कुतूहलमंगल गाहीं ॥
चलत हंस सब अस्तुति लावें । अब तो दरश पुरुषको पावें ॥
तब हम पुरुषसनबिनतीलावा । देहु दरश अब हंस ढिग आवा
देहु दरश तिहिं दीनदयाला । बंदीछोर सु होहु कृपाला ॥
विकस्यो पुहुप उठी अस बानी। सुनहु योगसतायन ज्ञानी ॥
हंसन कहँ अब आव लिवाई । दरश कराइ लेउ तुम आई ॥

छंद ।

ज्ञानी आयेउ हंस लग तव हंस सकलो ले गये ॥
पुरुष दर्शन पाय हंसा रूप शोभा तब भये ॥
करहिं दंडवत हंस सबही पुरुष पहँ चित लाइया ॥
अमी फल तब चार दीन्हों हंस सबमिलिपाइया६२

सोरठा–जस रविके परकाश,दरश पाय पंकज खुलै॥
तैसे हंस विलास,जन्म जन्म दुख मिटि गयो॥६६॥

इन्द्रमतीका लोकमें पहुँच पुरुष और करुणामयको एकही रूपमें देखकर चकित होना ।

पुरुष कान्ति जब देखउ रानी। अद्भुत अमी सुधाकी खानी॥
गदगद होय चरण लपटानी। हंस सुबुद्धि सुजन गुणज्ञानी॥
दीनो शीश हाथ जिव मूला। रवि प्रकाशजिमि पंकजफूला॥

इन्द्रमतीवचन ।

कहरानीतुमधनिकरुणामय । जिमभ्रममेटिआनियहिठामय॥

पुरुषवचन ।

कहा पुरुष रानी समझायी। करुणामय कहँ आनु बुलायी॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

नारि धाय आई मो पासा। महिमा देखि चकित भयेदासा॥

इंद्रमतीवचन ।

कह रानी यह अचरज आही।भिन्न भाव कछु देखों नाहीं॥
जे कोइ कला पुरुष कहँ देखा।करुणामय तन एक विशेखा॥
धाय चरण गह हंस सुजाना। हे प्रभु तव चरित्र सब जाना॥
तुम सतपुरुष दास कहलाये। यह शोभा कस उहां छिपाये॥
मोरे चित यह निश्चय आई। तुमहि पुरुष दूजा नहिंभाई॥
सो मैं आय देख यहिठांई। धन समरथ ¹मुरिलिया जगा॥

इन्द्रमती स्तुति करती हैं ।

तुम धन्य हो दयानिधान सुजान नाम अचिन्तयं॥
अकथअविचलअमरअस्थितअनघअजसुअनादियं

---

१ प्रस्तावनामें देखो ।

असंशय निःकाम धाम अनाम अटल अखंडितं॥
आदि सबके तुमहि प्रभु हो सर्व भूतसमीपतं ६४
सोरठा–मोपरभयेदयाल, लियहुजगाई जानि निज
काटेहुयमको जाल, दीन्हो सुखसागर करी ६७॥

कबीर[1]वचन धर्मदास प्रति ।

संपुट कमल लगो तेहि बारा । चलेहंसनिज दीप मंझारा ॥

करुणामय (ज्ञानी) वचन इन्द्रमती प्रति ।

ज्ञानी बूझें रानी बाता । कहोहंस तुम्हरो विख्याता ॥
अब दुख द्वंदतोरमिटि गयऊ । षोडशभानु रूप पुनि भयऊ॥
ऐसे पुरुष दया तोहि कीन्हा । सशय सोग मेंटितुव दीन्हा ॥

इन्द्रमतीका अपने पति राजाचन्द्रविजयको लोकमेंलानेके लिये विनतीकरना । इन्द्रमतीवचन ।

इन्द्रमती कह दोउ करजोरी । हे साहिब इक बिनती मोरी॥
तुम्हरे चरण भागते पायी । पुरुष दर्श कीन्हा हम आयी॥
अंग हमार रूप अति सोही । इक संशय व्यापे चितमोही ॥
मो कहँ भयो मोह अधिकारा । राजा तो पति आहि हमारा॥
आनहु ताहि हंसपति राई । राजा मोर काल मुख जाई ॥

करुणामयवचन ।

कहे ज्ञानी सुन हंस सुजाना । राजा नहिं पाये परवाना ॥
तुम तो हंसरूप अब पाया । कौन काज कहँ राव बुलाया॥
राजा भाव भक्ति नहिं पाया । सत्व हीन भव भटका खाया॥

इन्द्रमतीवचन ।

हे प्रभु हम जग महँ रहेऊ । भक्तितुम्हारबहुतविधिकरेऊ ॥
राजा भक्ति हमारी जाना । हम कहँ बरजेउनहींसुजाना ॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो ।

कठिन भाव संसार सुभाऊ । पुरुष छोडि कहुं नारिरहाऊ ॥
सब संसार देहि तिहि गारी । सुनतहि पुरुषडार तेहिमारी ॥
राज काज अति मान बडाई । पाखंड क्रोध और चतुराई ॥
साधु संतकी सेवा करऊं । राजाकेर त्रास ना डराऊँ ॥
सेवा करौं संतकी जबहीं । राजा सुनि हरषित हो तबहीं ॥
जो मोहि ताजन देतो राजा । तो प्रभु मोर होतकिमिकाजा ॥

छंद ।

रायकी हम हती प्यारी, मोहि कबहुँ न बरजेऊ ॥
साधु सेवा कीन्ह नित हम, शब्द मारग चीन्हेऊ ॥
चरण मो कहँ मिलत कैसे, मोहि बरजत रायजो ॥
नाम पाननमिलत मोकहँ, कैसेसुधरत काजजो ६५
सो०–धन्य राय सुज्ञान, आनहु ताहि हंसनपति ॥
तुम गुरु दयानिधान, भूपति बंद छुडाइये ॥ ६८ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सुन ज्ञानी बहुतै विहँसाये । चले तुरंत बार नहिं लाये ॥
गढ गिरनार बेगि चलि आया । नृपति केरिअवधिनियराया ॥
घेरयो ताहि लेन यमराई । राजहि देत कष्ट बहुताई ॥
राजा परे गाढ महँ आया । सतगुरु कहे तहां गुहराया ॥
छोडे नृप नाहीं यमराई । ऐसे भक्ति चूक है भाई ॥
भक्ति चूक कर ऐसे ख्याला । अवधि पूर जम करै विहाला ॥
चन्द्र विजयका कर गहिलीन्हा । तत्क्षण लोक पयाना दीन्हा ॥
रानी देखि नृपति ढिग आई । राजा केर गह्यो तब पाई ॥

इन्द्रमतीवचन ।

इन्द्रमती कहे सुनहु भुवारा । मोहि चीन्हों मैं नारि तुम्हारा ॥

राजा चन्द्रविजयवचन।

राय कहैं सुनु हंस सुजाना। वरण तोर षोडशशशि भाना॥
अंग अंग तोरे चमकारी। कैसे कहों तोहि मैं नारी॥
तुम तो भक्तिकीन्हभल नारी। हमहू कहँ तुम लीन्ह उबारी॥
धन्य गुरू अस भक्ति दृढाई। तोरि भक्ति हम निजघर पाई॥
कोटिन जन्म कीन्ह हमधर्मा। तब पाई अस नारि सुकर्मा॥
हम तो राज काज मन लाया।सतगुरु भक्ति चीन्हनहिंपाया॥
जो तुम मोरि होत ना रानी। तो हम जात नरककी खानी॥
तुव गुण मोहि वरणिनाजाई। धन गुरु धन्य नारि हम पाई॥
जस हम तोकहँ पायउ नारी। तैसे मिले सकल संसारी॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

सुनत वचन ज्ञानी विहँसायी। चंद्रबिजय कहँ वचन सुनायी॥

करुणामयवचन।

सुनो राय तुमनृपतिसुजाना। जो जिव शब्द हमारा माना॥
ते पुनि आय पुरुष दरबारा। बहुरि न देखे वह संसारा॥
हंस रूप होवे नर नारी। जो निज माने बात हमारी॥
पुरुष दर्श नरपति चितलायी। हंस रूप शोभा अति पायी॥
षोडश भानु रूप नृप पावा। जानु मयंकम ढार बनावा॥

धर्मदास वचन। छंद।

धर्म दास विनती करे, युग लेख जीव सुनायऊ॥
धन्य नाम तुम्हार साहिब, राय लोकसमायऊ॥
तत्व भावन गहेउ राजा, भक्तितुव निजठानिया॥
नारि भक्ति प्रतापते, यमराजसे नृप आनिया ६६

सो०-धन्यनारिकोज्ञान, लीन्हबुलायस्वनृपतिकहँ
आवागमन नशान, जगमें बहुरि न आइया८९ ॥

ता पीछे पुनि का प्रभु कीना । सोई कथा कहो परवीना ॥
कैसे पुनि आये भवसागर । सो कहिये हंसन पति नागर॥

कबीरवचन धर्मदासप्रति ।

धर्मनि पुनि आये जगमाहीं । रानी पति लै गये तहांहीं॥
राख्यो तांहि लोक मंझारा । ततछिन पुनि आयउसंसारा॥
काशी नगर तहां चलिआये । नाम सुदरशनसुपच जगाये ॥

सुपच सुदर्शनकी कथा ।

नाम सुदर्शन सुपच रहाई । ताकहँ हम सत शब्द दृढाई॥
शब्द विवेकी संत सुहेला । चीन्हा मोहि शब्दके मेला ॥
निश्चयवचनमानतिन्ह मोरा । लखि परतीत बंदि तिहिछोरा॥
नाम पान दियोमुक्तिसंदेशा । मेटचोसुसकल काल कलेशा ॥
शब्द ध्यानतेहि दीन्ह दृढाई । हरषित नामसुमिरेचितलाई ॥
सतगुरु भक्ति करे चितलाई । छोडी सकल कपट चतुराई ॥
तात मात तेहि हर्ष अपारा । महा प्रेम अतिहित चितधारा॥
धर्मनि यह संसार अँधेरा । बिनु परिचयजिवयमकोचेरा॥
भक्ति देख हर्षित हो जायी । नाम पान हमरो नहिं पाई ॥
प्रगट देख चीन्हे नहिं मूढा । परे कालके फन्द अगूढा ॥
जैसे श्वान अपावन रांचेउ । तिमिजगअमीछोडिविषखांचेउ
नृपति युधिष्ठिर द्वापरराजा । तिनपुनिकीन्ह यज्ञकोसाजा ॥
बन्धु मार अपकीरतिकीन्हा । ताते यज्ञ रचन चित दीन्हा ॥

---

१ " शब्द ध्यान " के बदले किसी किसी नवीन और पुरानी दोनों प्रकारकी प्रतियोंमें " सुरति ध्यान " लिखा है ।

कृष्ण केर जब आज्ञा पाई । तब पाण्डव सब साज मंगाई ॥
यज्ञकी सामग्री गहि सारी । जहँ तहँते सब साधु हंकारी ॥
पाण्डव प्रति बोले यदुपाला। पूरन यज्ञ जान तिहिं काला ॥
घण्ट अकासबजत सुनिआवे। यज्ञको फल तब पूरन पावे ॥
संन्यासी बैरागी झारी। आये ब्राह्मण औ ब्रह्मचारी ॥
भोजनविविध प्रकार बनाई। परम प्रीतिसे सबहिं जेवांई ॥
इच्छा भोजन सबमिलिपावा।घंट नहिं बाजा राय लजावा॥
जबही घंट न बाज अकाशा । चकित भयो राय बुधि नाशा॥
भोजन कीन सकल ऋषिराया।बजा न घंट भूप भ्रम आया॥
पाण्डव तबहिं कृष्ण पहँ गयऊ। मन संशयकरि पूछत भयऊ ॥

युधिष्ठिरवचन ।

करिके कृपा कहो यदुराजा । कारण कौन घण्ट नहिं बाजा॥

कृष्ण उत्तर ।

कृष्ण अस कारण तासु बताया । साधू कोइ न भोजन पाया॥

युधिष्ठिरवचन ।

चकित ह्वै तब पाण्डव कहेऊ।कोटिन साधु भोजन लहेऊ ॥
अब कहँ साधु पाइये नाथा । तिनते तब बोले यदुनाथा ॥

कृष्णवचन ।

सुपच सुदर्शनको लै आवो । आदर मान समेत जिमावो ॥
सोई साधु और नहिं कोई । पूरन यज्ञ जाहिते होई ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

कृष्ण आज्ञा जबअस पयऊ । पाण्डव तब ताके ढिग गयऊ॥
सुपच सुदर्शन को लै आये । विनय प्रीतिसे ताहि जेवांये॥
भूप भवन भोजन कर जबहीं । बजा अकाशमें घण्टा तबहीं॥
सुपच भक्त जब ग्रास उठावा । बाजो घंट नाम परभावा ॥

तबहुँ न चीन्हे सतगुरु बानी । बुद्धि नाश यम हाट बिकानी ॥
भक्त जीव कहँ काल सताये । भक्त अभक्त सबन कहँ खाये ॥
कृष्ण बुद्धि पाण्डव कहँ दीन्हा । बन्धु घातपाण्डवतबकीन्हा ॥
पुनि पाण्डव कहँदोष लगावा । दोष लगा तेहि यज्ञकरावा ॥
ताहूपरपुनि अधिकदुखावा । भेजि हिमालयतिन्हैंगलावा ॥
चार बन्धुसह द्रोपदि गलेऊ । उबरे सत्य युधिष्ठिर रहेऊ ॥
अर्जुन सम प्रिय और न आना । ताकर अस कीन्हाअपमाना ॥
बलिहरिचन्दकरणबड दानी । कालकीन्हपुनितिन्हकीहानी ॥
जिव अचेत आशा तेहिलावे । खसम बिसार जारको धावे ॥
कला अनेक दिखावे काला । पीछे जीवन करे बिहाला ॥
मुक्ति जानजिव आशा लावें । आशाबांधि काल मुखजावें ॥
सब कहँ काल नचावे नाचा । भक्त अभक्त कोइनहिंबाचा ॥
जो रक्षक तेहि खोजे नाहीं । अन चीन्हें यमकेमुख जाहीं ॥
बार बार जीवन समुझावा । परमारथ कहँ जीव चितावा ॥
अस यम बुद्धि हरी सब केरी । फंद लगाय जीव सब घेरी ॥
सत्य शब्द कोइ परखे नाहीं । यम दिशहोयलरै हमपाहीं ॥
जबलगि पुरुष नाम नहिं भेंटे । तबलगि जन्म मरणनहिंमेटे ॥
पुरुष प्रभाव पुरुष पहँ जायी । कृत्रिमनामते यमधरिखायी ॥
पुरुष नाम परवाना पावे । कालहि जीत अमर घर जावे ॥

छंद ।

सत नाम प्रताप धर्मनि, हंसलोक सिधावई ॥ जन्म मरणको कष्ट मेटै, बहुरि न भव जल आवई ॥ पुरुषकी छबिहंसनिरखहिं, लहेअति आनँदघना ॥ अंशहंस मिलकरैकुतूहल, चंद्रकुमुदिनि सँग बना ॥

सोरठा–जैसैकुमुदिनिभाव,चन्द्रदेखि निशि हर्षई ॥
तैसइ हंस सुख पाव,पुरुष दर्शके पावते ॥ ७० ॥
नहीं मलीन मुख भाव, एकप्रभाव सदाउदित
हंस सदा सुख पाव, शोक मोह दुख क्षणक नहिं

जबै सुदरशन ठेका पूरा । ले सत लोक पठायो सूरा॥
मिले रूप शोभा अधिकारा । अरु हंसन संग कुतूहल सारा ॥
षोडश भानुरूप तब पावा । पुरुषदर्श सो हंस जुडावा ॥

धर्मदासवचन ।

हे साहिब इक विनती मोरा । खसम कबीर कहु बंदीछोरा ॥
भक्त सुदर्शन लोक पठायी । पीछे साहिब कहां सिधायी ॥
सो सतगुरु मुहिं कहो सँदेशा । सुधावचन सुनि मिटै अँदेशा ॥

कबीरवचन ।

अब सुनु धर्मनि परम पियारा। तुमसो कहौं आगलव्यवहारा॥
द्वापर गत कलियुग परवेशा । पुनि हम चल जीवन उपदेशा॥
धर्मराय कहँ देख्यो आई । मोहि देखि यम गयो मुर्झाई ॥

धर्मरायवचन ।

कहे धर्म कस मोहिं दुखावहु । भच्छ हमार लोक पहुँचावहु ॥
तीनों युग गवने संसारा । भवसागर तुम मोर उजारा ॥
हारि वचन पुरुष मोहि दीन्हा । तुम कसजीवछुडावनलीन्हा ॥
और वन्धु जो आवत कोई । छिनमहँ ताकहँ खांव बिलोई॥
तुमते कछू न मोर बसाई । तुम्हरे बल हंसा घर जाई ॥
अब तुम फेर जाहु जगमाहीं । शब्द तुम्हार सुनै कोउ नाहीं॥
करम भरम ममअसकै ठाटा । ताते कोइ न पावै बाटा ॥
घर घर भ्रम भूत उपजावा । धोखा दै दै जीव नचावा ॥

भ्रम भूत है सब कहँ लागे । तोहि चिन्है ताकहँ भ्रम भागे ॥
मद्य मांस खावै नर लोई । सर्व मांस प्रिय नरको होई ॥
आपन पंथ में कीन परगासा । सर्व मास मद्य मानुष ग्रासा ॥
चण्डी जोगिन भूत पुजाओं । यही भ्रम महै जग जहै डाओं ॥
बांधिबहुफन्दहिंफन्दफँदाओ । अंतकालकरसुधिबिसराओ ॥
तुम्हरी भक्ति कठिन है भाई । कोई न मनि है कहौं बुझाई ॥

ज्ञानीवचन ।

धर्मरायते बड छल कीन्हा । छल तुम्हार सकलो हमचीन्हा ॥
पुरुष वचन दूसर नहिं होई । ताते तुम जीवन कहँ खोई ॥
पुरुष मोहि जो आज्ञा देही । तो सब जिव होय नाम सनेही ॥
ताते सहजहिं जीव चेताऊं । अंकुरी जीव सकल मुकताऊं ॥
कोटिफन्द जो तुमरचिराखा । वेद शास्त्र निज महिमा भाखा ॥
प्रगट कलाजोधरि जग जाऊं । तो सब जीवनको मुकताऊं ॥
जो अस करौं वचन तब डोल । वचन अखंड अडोल अमोलै ॥
जो जियरा अंकूरी शुभ होई । शब्द हमार मानि है सोई ॥
अंकुरी जीव सकल मुकताओं । फन्दा काटि लोक लै जाओं ॥
काटि भरम जो दैहों ताही । भरम तुम्हार मानि हैं नाहीं ॥

छंद ।

सत्य शब्द दिढाय सबहीं, भ्रम तोरि सब डारिहौं ॥
छल तोर सब चिन्हाइतबहीं, नामबल जियतारिहौं ॥
मनवच सत्य जोमोहि चीन्ही, एकतत्त्व लौलाइहैं ॥
तव सीस तुम्हरे पांव देहीं, अमल लोकजिवआइहैं ॥
सोरठा—मर्दहि तोरा मान, सूराहंस सुजान कोइ ॥
सत्य शब्द सहिदान, चीन्हहि हंस हरष अती ॥

धर्मरायवचन ।

कहै धर्म जीवन सुखदाई । बात एक मुहि कहो बुझाई ॥
जो जिव रहै तुम्हैं लौ लाई । ताके निकट काल नहिं जाई ॥
दूत हमार ताहि नहिं पावे । मूर्छित दूत मोहि पहँ आवे ॥
यह नहिं बूझ परी मोहिंभाई । तौन भेद मोहि कहो बुझाई ॥

ज्ञानीवचन ।

सुनहु धर्म जो पूछहु मोही । सो सब हाल कहौं मैं तोही ॥
सुनहु धर्म तुम सतसहिदानी ।सोतोसत्यशब्दआहि निर्बानी॥
पुरुष नाम है गुप्त परमाना । प्रगट नाम सतहंस बखाना ॥
नाम हमार हंस जो गहई । भवसागर सो सो निरबहई ॥
दूत तुम्हार होय बल थोरा । जब मम हंस नाम ले मोरा ॥

धर्मरायवचन ।

कहै धर्म सुनु अन्तर यामी । कृपा करहु अब मोपर स्वामी
यहि युग कौन नाम तुव होई । सो जनिमोपर राखहु गोई ॥
बीरा अंक गुप्त मन आऊ । ध्यान अंग सबमोहि बताऊ॥
केहि कारन तुम जाहु संसारा । सोइ कहहुमोहि भेदगुनन्यारा॥
हमहूं जीवन शब्द चेतायब । पुरुष लोक कहँ जीव पठायब॥
मोहिं दास आपन कर लीजै । शब्द सार प्रभु मो कहँ दीजै॥

ज्ञानीवचन ।

सुनहु धर्म तुम कस छल करहू । प्रगट सुदास गुप्त छल धरहू॥
गुप्त भेद नहिं देहौं तोहीं । पुरुष अवाज कही नहिं मोहीं॥
नाम कबीर मोर कलिमाहीं । कबीरकहतयम निकटनजाहीं

धर्मरायवचन ।

कहै धर्म तुम मोहिं दुरै हो । खेल एक पुन हमहुँ खेलै हो॥
ऐसी छल बुधि करब बनाई । हंस अनेक लेब संग लाई ॥

तुम्हार नाम ले पंथ चलायब। यहिविधिजीवनधोखदिखायब

ज्ञानीवचन।

अरे काल तू पुरुष द्रोही। छलमति कहा सुनावसिमोही॥
जो जिव होइ है शब्द सनेही। छल तुम्हार नहिं लागै तेही॥
जौहरी हंस लेहिं पहिचानी। परखि हैं ज्ञान ग्रन्थ ममबानी॥
जेहि जीव मैं थापब जाई। छलतुम्हार तेहि देब चिन्हाई॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

यहि सुनत धर्मराय गहुमौना। ह्वै अन्तर्धान गयोनिज भौना॥
धर्मनि कठिन काल गतिगन्दा। छल बुध कै जीवन कहँ फन्दा॥

धर्मदासवचन।

कह धर्मनि प्रभु मोहि सुनावो। आगलचरित्र कहिसमुझाओ॥

जगन्नाथमन्दिरकी स्थापनाकावृत्तान्त।

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

राजा इन्द्रदमन तेहि काला। देश उडैसेको महिपाला॥

सतगुरुवचन।

राजा इन्द्रमन तहँ रहई। मंडप काज युगति सो कहई॥
कृष्ण देह छांडी पुनि जबही। इन्द्रदमन सपना भा तबही॥
स्वप्नमें हरि अस ताहि बताई। मेरो मन्दिर देहु उठाई॥
मोकहँ स्थापन कर राजा। तो पहँमैं आयउ यहि काजा॥
राजा यहि विधि सपना पायी। ततक्षण मंडप काम लगायी॥
मंडप उठा पूर्ण भा कामा। उदधि आय बोरा तेहि ठामा॥
पुनि जब मन्दिर लाग उठावा। क्रोधवन्त सागर तब धावा॥
क्षणमें धाय सकल सो बोरे। जगन्नाथको मन्दिर तोरे॥
मंडप सो षट बार बनायी। उदधि दौर तिहिं लेत डुबायी॥

१ प्रस्तावनामें देखो।

हारा नृप करि यतन उपायी। हरिमन्दिर तहं उठै न भाई ॥
मन्दिरकी यह दशा विचारी। वर पूरब मनमांहि सम्हारी ॥
हम सन काल मांग अन्याई। बाचा बन्ध तहां हम जायी ॥
आसन उदधि तीर हम कीन्हा। काहू जीवन मोही चीन्हा ॥
पीछे उदधि तीर हम आई। चौरा तहां बनायउ जाई ॥
इन्द्रदमन तब सपना पावा। अहो राय तुम काम लगावा ॥
मंडप शंक न राखो राजा। इहँवा हम आये यहि काजा ॥
जाहु वेगि जनिलावहु बारा। निश्चयमानहु वचन हमारा ॥
राजा मंडप काम लगायो। मंडपदेखिउदधि चल आयो ॥
सागर लहर उठीतिहि बारा। आवत लहरक्रोधचितधारा ॥
उदधि उमंगक्रोध अतिआवे। पुरुषोत्तम पुर रहन न पावे ॥
उमँगेउ लहर अकाशे जायी। उदधि आय चौरा नियरायी ॥
दरश हमार उदधि जब पायी। अति भयमान रह्यो ठहराई ॥

छंद।

रूप धारयो विप्रको तब, उदधि हम पहँआइया ॥
चरण गहिके माथ नायो, मर्म हम नहिं पाइया ॥

उदधिवचन।

जगन्नाथ हम भोर स्वामी, ताहिते हम आइया ॥
अपराध मेरो क्षमा कीजे, भेदअब हम पाइया ६९
सोरठा–तुमप्रभु दीनदयाल, रघुपतिवोइलदिवाइये ॥
वचन करो प्रतिपाल, कर जोरे बिनती करों ।७३ ॥

कीन्हेउ गवन लंक रघुबीरा। उदधि बांध उतरे रणधीरा ॥
जो कोई करे जोरावरि आई। अलख निरञ्जनवोइलदिवाई ॥
मोपर दयाकरहु तुम स्वामी। लेउ ओइल सुनु अंतरयामी ॥

कबीरवचन।

वोइलतुम्हारउदधिहमचीन्हा। बोरहु नगर द्वारका दीन्हा॥
यह सुनि उदधिधरे तब पांई। चरण टेकके चल हरषाई॥
उदधि उमंगलहर तबधायी। बोरयो नगर द्वारका जायी॥
मंडप काम पूर तब भयऊ। हरिको थापन तहँवाकियऊ॥
तब हरि पडन स्वपन जनावा। दास कबीर मोहिपहँ आवा॥
आसन सागर तीर बनायी। उदधि उमंगनीर तहँ आयी॥
दरश कबीर उदधि हट जाई। यहि विधि मंडप मोर बचाई॥
पंडाउदधि तीर चलि आये। करि अस्नान मंडप चलआये॥
पंडन अस पाखंड लगायी। प्रथमदरश मलेच्छदिखायी॥
हरिके दर्शन मैं नहिं पावा। प्रथमहि हम चौरालगआवा॥
तब हम कौतुक एक बनाये। कहोंवचननहिंराखु छिपाये॥
मंडप पूजन जब पंडा गयऊ। तहँवा एकचरित असभयऊ॥
जहँ लग मूरति मंडप माहीं। भये कबीर रूप धर ताहीं॥
हर मूरति कहँ पंडा देखा। भये कबीर रूप धर भेखा॥
अक्षत पुहुप ले विप्र भुलाई। नहिं ठाकुर कहँ पूजहुँ भाई॥
देखि चरित्र विप्र सिर नाया। हे स्वामीतुम मर्म न पाया॥

पण्डावचन।

हम तुम काहि नहीं मनलाया। ताते मोहि चरित्र दिखाया॥
क्षमा अपराधकरो प्रभु मोरा। बिनती करोंदोइ कर जोरा॥

कबीरवचन।

छंद।

वचन एक मैं कहों तोसों, विप्र सुन तैं कान दे॥
पूज ठाकुर दीन्ह आयसु, भाव दुविधा छाड दे॥

भ्रम भोजनकरे जोजिव,अंग हीन हो ताहिको ॥
करे भोजन छूत राखे, सीस उलट ताहिको ॥७०॥
सोरठा–चौराकरि व्यवहार,भ्रमविमोचनज्ञानदृढ ॥
तहँते कियो पसार, धर्मदास सुनु कानदे ॥७४॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास कहे सतगुरु पूरा । तुम प्रसाद भयेउ दुख दूरा॥
जेहि विधिहरिकहँथापेउजाई । सो साहिब सबमोहि सुनाई॥
तापीछे कहवां तुम गयऊ । कौन जीव कैसे मुकतयऊ॥
कलियुग केर कहो परभाऊ । और हंस परमोधेउ काऊ ॥
सो मोहि वरणकहो गुरु देवा । कौन जीवकीन्ही तुमसेवा ॥

कवीर वचन ।

धर्मदास तुम बूझहु भेदा । सो सब हमसों कहो निषेदा॥

चार गुरुकी स्थापनाका वृत्तान्त[1] ।

सुनहु[2] संत यह ज्ञान अनूपा । गज थल देसपरमोध्योभूपा॥

रायबंकेजी ।

राय बंकेज नाम तेहि आही । दीनेउ सार शब्द पुनिताही॥
कीन्ह्यो ताहि जीवनकडिहारा।सो जीवनका करैं उवारा ॥

सहतेजी ।

झिलमिली दीप तहां चलिआये।सहतेजीएकसंत चिताये ॥
ताहूको कडिहारी दीन्हा । जबउनमोकहँनिजकरचीन्हा॥

चतुरभुज ।

तहांते चलि आए धर्मदासा । रायचतुरभुजनृपतिजहँबासा॥

---

१ छत्तीसगढकी नवीनप्रतियोंमेंसे लिखनेवालोंने यह कथा उठादी है पुरानी प्रतियोंमें है । प्रस्तावनामें देखो ।

२ किसी किसी ग्रन्थमें यही चौपाई ऐसे लिखी हैं–सुनो सन्त यह कथा अनूपा । गज अस्थल परमोध्यो भूपा ॥

ताकर देश आहि दरभंगा। परखिसि मोहि संत परसंगा॥
देखि अधीन ताहि समझावा। ज्ञान भक्तिविधिताहिदृढावा॥
दृढतादेखि ताहि पुनिथापा। मिला मोहिछाडिभ्रम आपा॥
मायामोह न तनिको कीन्हा। अमर नाम तब ताही दीन्हा॥
ताहू कहँ कडिहारी दीना। चतुर्भुज शब्द हेतकरि लीना॥

छंद।

हंस निरमल ज्ञान रहनी,गहनि नाम उजागरा॥
कुल कानिसबै बिसारि विषया, जौहरीगुणनागरा॥
चतुर्भुज बंकेजऔ सहतेज, तुम चौथे सही॥ चारि
हैं कडिहार जिवकै, गिरा निश्चलहम कही॥७१॥
सोरठा-जम्बुदीपकेजीव,तुम्हरीबांह मोकहँ मिले॥
गहे वचन दृढ पीव,ताहि काल पावै नहीं॥७५॥

धर्मदासवचन।

धन सतगुरु तुममोहि चेतावा।कालफन्दते मोहि मुकतावा॥
मैं किंकर तुव दासके दासा।लीन्हों मोरि काटि जमफांसा॥
मोते चित अतिहरष समाना।तुव गुणमोहि न जाय बखाना॥
भागी जीव शब्द तुव माना। पूरण भाग जो तुवव्रतठाना॥
मैं अघकर्मी कुटिल कठोरा। रहेउ अचेत भ्रम जिवमोरा॥
कहाजानि तुममोहि जगाये। कौने तप हम दर्शन पाये॥
सो समुझाय कहो जियमूला। रवि तबगिराकमलमनफूला॥

धर्मदासके पछिले जन्मोंकी कथा।

कवीरवचन।

इच्छा कर जो पूछो मोही। अब मैं गोइ न राखों तोही॥
धर्मनि सुनहु पाछली बाता।तोहि समझायकहोविख्याता॥

संत सुदर्शन द्वापर भयऊ। तासुकथा तोहिप्रथमसुनयऊ॥
तेहि ले गयो देश निज जबहीं। विनती बहुन कीनतिन तबहीं॥

सुपचवचन।

कहे सुपच सतगुरु सुन लीजे। हमरे मात पिता गति दीजे॥
वंदी छोड करो प्रभु जाई। यमके देश बहुत दुख पाई॥
मैं बहु भांति पिता समझावा। मातु पिता परतीति न आवा॥
बालक वदनहिं मान सिखावा। भक्ति करत नहिं मोहिडरवा॥
भक्ति तुम्हारि करन जब लागे। कबहुँ न द्रोह कीन्हममआगे॥
अधिक हर्ष ताही चित होई। ताते विनती करौं प्रभु सोई॥
आनहु तेहि सत शब्द दृढाई। बंदीछोर जीव मुकताई॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति।

विनती बहुत संत जब कीन्हा। ताकरवचन मानहम लीन्हा॥
ताकर विनय बहुरिजगआवा। कलियुग नामकबीरकहावा॥
हम इक वचन निरंजन हारा। वाचा बंध उदधि पशु धारा॥
और दीप हंसन उपदेशा। जम्बुदीप पुनि कीन प्रवेशा॥
संत सुदरसन के पितु माता। लछमी नर हर नाम सुहाता॥
सुपचदेह छोडी तिन भाई। मानुष जन्म धरे तिन आई॥

सुपचसुदर्शनके मातपिताकेपहला जन्म कुलपति और महेश्वरीकीकथा।

संत सुदर्शन केर प्रतापा। मानुष देह विप्रके छापा॥
दोनों जन्म दोय तब लीन्हा। पुनिविधिमिलै ताहिकहँदीन्हा
कुलपति नामविप्रकरकहिया। नारी नाम महे सरि रहिया॥
बहुत अधीन पुत्र हित नारी। करि अस्नान सूर्य व्रतधारी॥
अञ्चल लै विनवै कर जोरी। रुदन करे चित सुत कहदौरी॥
तत्क्षण हम अचल पर आवा। हम कहँदेखि नारि हरषावा॥
बाल रूप धरि भटचो वोही। विप्रनारि गृह लै गइ मोही॥

कहै नारि कृपा प्रभु कीना । सूर्य व्रत कर फल यह दीना॥
बहुत दिवस लग तहां रहाये । नारि पुरुष मिल सेवा लाये॥
रहे दरिद्रते दुखी अपारा । हम मनमहँअस कीन विचारा॥
प्रथमहि दरिद्रता इन कर टारों । पुनिभक्तिमुक्तिकरवचनउचारों
जब हम पलना झटक झकोरा । मिलत सुवर्ण ताहि इक तोरा॥
नितप्रति सोन मिलै इकतोला । ताते भये वहसुखी अमोला॥
पुनि हम सत्य शब्द गोहराई । बहु प्रकारते उनहिं समझाई॥
ता हृदये नहिं शब्द समायी । बालक जानप्रतीत न आयी॥
ताहि देह चीन्हसि नहिं मोहीं । भयो गुप्त तहँ तनतजि वोही॥

सुंपचसुदर्शनकेपितामाताकेदूसरे जन्ममें चन्दनसाहुऔर ऊदाकीकथा।

नारि द्विज दोई तन त्यागा । दरशप्रभाव मनुजतनुजागा॥
पुनि दोनों भये अंश मिलाऊ । रहहि नगर चन्द वारेनाऊ॥
ऊदानाम नारि कहँ भयऊ । पुरुष नामचन्दनधरिगयऊ॥
परसोतमते हम चलि आये । तब चन्दवारा जाइ प्रगटाये॥
बालक रूप कीन्ह तेहि ठामा । कीन्हेउ ताल माहिंविश्रामा॥
कमल पत्र पर आसन लाई । आठ पहर हम तहां रहाई॥
पीछे उदा अस्नानहि आयी । सुन्दर बालक देखि लुभायी॥
दरश दियो तेहिशिशु तनधारी।लेगई बालकनिज घरनारी॥
लै बालक गृह अपने आई । चंदन साहु अस कहा सुनाई॥

चन्दनसाहुवचन।

कहु नारी बालक कहँ पायी । कौने विधिते इहँवा लायी॥

ऊदावचन।

कह ऊदा जल बालक पावा । सुन्दर देखि मोर मन भावा॥

---

१ प्रस्तावना देखो।

चन्दनसाहुवचन।

कह चन्दनते मूरख नारी। वेगि जाहु लै बालक डारी॥
जाति कुटुम हँसि हैं सब लोगा।हँसत लोग उपजै तन सोगा॥

कबीर वचन धर्मदासप्रति।

उदा त्रास पुरुष कर माना। चंदन साहु जबै रिसियाना॥

चन्दनसाहुबचन चेरी प्रति।

बालक चेरी लेहु उठाई। लै बालक जल देहु खसाई॥

कबीरवचन धर्मदासप्रति।

चल चेरी बालक कहँ लीन्हा। जलमहँडारनताहिचितदीन्हा॥
चलि भइ मोहि पवांरन जबहीं।अन्तरधान भयो मैं तबहीं॥
भयउ गुप्त तेहि करसे भाई। रुदन करैं दोनों बिलखाई॥
बिकल होय बन ढूँढत डोलैं। मुग्ध ज्ञानकछुमुखनहिंबोलैं॥

सुपच सुदर्शनके माता पिता तीसरे जन्ममें नीमा हुए।

यहिविधिबहुतदिवसचलिगयऊ।तजितनजन्मबहुरितिनपयऊ
मानुष तन जुलहा कुल दीन्हा।दोउसंयोगबहुरिबिधिकीन्हा॥
काशी नगर रहे पुनि सोई। नीरू नाम जुलाहा होई॥
नारि गवन लाव मग सोई। जेठमास बरसाइत[1] होई॥
नारि लिवाय आय मग माहीं। जल अचवन गइ वनिताताहीं॥
ताल माहिं पुरइन पनवारा। सिसु होय मैं तहँ पगुधारा॥
तहां जस बालक रहुँ पौढाई। करो कुतूहल बाल स्वभाई॥
नीमा दृष्टि परी तिहि ठांऊ। देखत दर्श भयो अति चाऊ॥

---

१ बरसाइत बटसावित्रीका अपभ्रंश है। यह वटसावित्री व्रत ज्येष्ठकी अमावास्याको होता है इसकी विस्तारपूर्वक कथा महाभारतमें है। उसी दिन कबीरसाहब नीमा और नूरीको मिले थे। इस कारणसे कबीरपंथियोंमें बरसाइत महातम ग्रन्थकी कथा प्रचलित है और उस दिन कबीरपंथीलोग बहुत उत्सव मानते हैं।

जिमि रवि दर्श पदुम विगसाना। धाय गहोधन रंकसमाना ॥
धाय गई कर लिया उठायी। बालक लै नीरू पहँ आयी ॥
जुलहा रोष कीन्ह तेहि बारी। बेगि देहु तुम बालक डारी ॥
हर्ष गुनावन नारी लायी। तब हम तासों वचन सुनाई ॥

छंद।

सुनहु वचन हमार नीमा; तोहि कहँ समझायके ॥
प्रीत पिछली कारणे तुहि, दर्श दीन्हो आयके ॥
आपने गृह मोहि लै चलु, चीन्हिके जो गुरु करो ॥
देहुँ नाम दृढाय तो कहँ, फंद यमके ना परो ॥
सोरठा- सुनत वचन अस नारि; नीरूत्रासनराखेऊ
लै गई गेह मँझार, काशि नगरतब पहुँचेऊ ॥७६॥

नारि न मान त्रास तेहि केरा। रंक धनद सम लै चलि डेरा ॥
जोलहा देखि नारि लौ लीना। लेइ चलो अस आयसुदीना ॥
दिवस अनेक रहे तेहि ठाईं। कैसहु तेहि परतीत न आयी ॥
बहुतदिवस तेहि भवन रहावा। बालक जान न शब्द समावा ॥

सुपच सुदर्शनके माता पिताका चौथे जन्ममें मथुरामें प्रगट होकर सत्यलोक जाना।

विन परतीत काज नहिं होई। दृढ कै गहहु परतीतबिलोई ॥
ताहि देह पुनि मोहिनचीन्हा। जानिपुत्रमोहिसंग न कीन्हा ॥
तजि सो देह बहुरि जो भाई। देह धरी सो देहुँ चिन्हाई ॥
जुलहाकी तब अवधि सिरानी। मथुरादेह धरी तिन आनी ॥
हम तहँ जाय दर्श तिनदीन्हा। शब्द हमार मान सो लीन्हा ॥
रतना भक्ति करे चितलाई। नारि पुरुष परवाना पाई ॥
ता कहँ दीन्हेउ लोक निवासा। अंकूरी पठये निज दासा ॥

पुरुष चरण भेटे उर लाई। शोभा देह हंस कर पाई ॥
देखत हंस पुरुष हरषाने। सुकृत अंश कही मन माने ॥
बहुत दिवस लगिलोकरहाये। तबतकि काल जीव संताये ॥
जीवन दुख अतिशय भयोभाई।तबहीं पुरुष सुकृत हंकराई ॥
आज्ञा कीन्ह जाहु संसारा। काल अपरबलजीव दुखारा ॥
लोक संदेशा ताहि सुनाओ। देह नाम जीवन मुकताओ ॥
आज्ञा सुनत सुकृत हरषाये। ततयहि लोक पयानालाये ॥
सुकृत देखि काल हरषाई। इन कहँ तो हमलेब फंसाई ॥
करि उपाय बहुत तब काला। सुकृतफँसायजालमहँ डाला॥
बहुत दिवस गयो जब बीती। एकहु जीवनकालहि जीती ॥
जीव पुकार सतलोक सुनाये। तबहीं पुरुष मोकहँ हंकराये॥

कबीर साहबका धर्मदासजीको चितानेके लिये लोकसे पृथ्वीपर आना। पुरुषवचन।

पुरुष अवाज उठी तिहि बारा। ज्ञानी बेग जाहु संसारा ॥
जीवन काज अंश पठवायी। सुकृत अंश जग प्रगटे जायी॥
कीन्ह आज्ञा तेहिको भाई। शब्द भेद वाही समझायी ॥
लावहु जीवन नाम अधारा। जीवन खेइ उतारो पारा ॥
सुनत आज्ञा वहि कीन पयाना।बहुरि न आये देशअमाना ॥
सुकृत भवसागर चलि गयऊ।कालजालते सुधिबिसरयऊ ॥
तिन कहँ जाय चितावहु ज्ञानी।जेहिते पथ चले निरवानी ॥
बंस ब्यालिस अंस हमारा। सुकृत गृह लैहैं औतारा ॥
ज्ञानी बेगि जाहु तुम अंसा।अबसुकृतअंश करमेटहुफंसा॥

कबीर वचन।

चलेउ हम तब सीस नवाई। धर्मदास हम तुम लग आई ॥
धर्म दास तुम नीरू औतारा। आमिन नीमाप्रगटविचारा॥

तुमतो आहु प्रिय मम अंसा । जा कारनेहमकीन्हबहुसंसा ॥
पुरुषहिं आज्ञा तुम्हरेढिग आये। पिछली हेतपुनियादकराये ॥
यहि संयोग हम दर्शन दीन्हा । धर्मनिअबकीतुममोहिचीन्हा॥
पुरुष अवाज कहूं तुम पासा । चीन्हहु शब्द गहो विश्वासा॥
धाय परे चरणन धर्मदासा । नैन बारि भर प्रगट प्रगासा॥
धरहिं न धीर बहुर संतोखा । तुम साहिबमेटहु जिवधोखा॥
धरे न धीरज बहुत प्रबोधे।बिछुरिजननि जिमिमिल्योअबोधे
युग पग गहे सीस भुइं लाये । निपट अधीर न उठत उठाये॥
बिलखत बदन वचन नहिं बोले।सुरतिचरण ते नेक न डोले ॥
निरख वदन बहुरो पदगहहीं । गदगदत्हृदय गिरानहिंकहहीं॥
बिलखत वदनस्वासनहिं डोले।उनमुनिदशापलकनहिंखोले ॥

धर्मदासवचन ।

बहुरि चरन गहि रोवहिं भारी।धन्य प्रभुमोहितारनतनधारी॥
धरि धीरज तब बोल सम्हारी । मोकहँ प्रभु तारन पगधारी॥
अब प्रभु दया करहु यहिमोही। एको पल ना बिसरों तोही॥
निशिदिन रहों चरन तुम साथा।यह बर दीजे करहु सनाथा ॥

कबीरवचन ।

धर्म दास निह संशय रहहू । प्रेम प्रतीति नाम दृढ गहहू ॥
चीन्हेउ मोहि तोर भ्रम भागा।रहहु सदा तुम दृढ अनुरागा ॥
मन वच कर्म जाहि जो गहई।सो तेहि तज अंते कसरहई ॥
आपन चाल बिना दुख पावे।मिथ्या दोष गुरु कहँ लावे ॥
पंथ सुपंथ गुरू समझावे । शिष्य अचेत न हृदय समावे॥
तुम तो अंश हमारे आहू। बसुतक जीव लोक ले जाहू ॥
चार माहि तुम अधिकपियारे।किहि कारण तुम सोचविचारे॥
हम तुमसों कछु अंतर नाहीं । परख शब्द देखो हियमाहीं ॥

मन वच कर्म मोहि लौ लावे। हृदये दुतिया भाव न आवे॥
तुम्हरेघट हमवासा कीन्हा। निश्चय हम आपन करलीन्हा॥

छंद।

आपनो कर लीन्ह धर्मनि, रहो निःसंशय हिये॥
करहुजीव उबार दृढ है, नामअविचल तोहिदिये॥
मुक्ति कारण शब्द धारण, पुरुष सुमिरणसार हो॥
सुरति बीरा अंकधीरा, जीवका निस्तार हो॥७३॥
सोरठा—तुमतौहौधर्मदास, जंबुदीपकडिहार[१]जिव॥
पावे लोकनिवास, तुहि समेत सुमिरे मुझे॥७७॥

धर्मदासवचन।

धनसतगुरुधन तुम्हरी बानी। मुहिंअपनायदीन्हगतिआनी॥
मोहिआय तुमलीन्हजगायी। धन्य भाग्य हमदर्शन पायी॥
धनसाहब मुहिआपनकीन्हा। ममशिरचरण सरोरुहदीन्हा॥
मैं आपन दिनशुभकरिजाना। तुम्हरे दरश मोक्ष परमाना॥
अब अस दयाकरहु दुखभंजन। कबहुँमोहि न धरेनिरंजन॥
काल जालजौनी विधिछूटे। यम बन्धनजौनी विधिटूटे॥
सोईउपाय प्रभुअब कीजे। सार शब्द बताय मोहि दीजे॥

कबीरवचन।

धर्मदास तुम सुकृत अंशा। लेइ पान अब मेटहु संशा॥
धर्मदास आपन करिलेहूँ। चौका करि परवाना देहूँ॥
तिनका तोडिलेहु परवाना। कालदशा छूटे अभिमाना॥
शालिग्रामको छाडहुआसा। गहिसत शब्द होहुतुमदासा॥

१ कर्णधार, मल्लाह, नाव खेकर पार उतारनेवाला भवसागरसे गुरु पार उतारते हैं इस कारण उन्हें कडिहार कहते हैं॥

दश औतार ईश्वरी माया । यह सबदेखु कालकी छाया ॥
तुम जगजीव चितावन आये।काल फन्दतुम आइफँसाये ॥
अबहूँ चेत करो धर्मदासा । पुरुष शब्द करों परकासा ॥
ले परवाना जीव चिताओ । कालजालते हंस मुकताओ ॥
यही काज तुम जगमें आये । अब न करहु दोसर मनभाये॥

छंद ।

चतुर्भुज बंकेज सहतेज और चौथे तुम अहो ॥
चार गुरुकडिहार जगके, बचन यह निश्चयकहौं ॥
यही चार अंश संसारमें, जीव काज प्रगटाइया ॥
स्वसम्वेदसोइनसंगदियो, जेहिसुनिकालभगाइया ७४
सोरठा–चारोंमें धर्मदास,जम्बुदीपके गुरु सही ॥
ब्यालिस वंशविलास, तारेंजीवतेहिशरणगही॥ ७८॥

आरतीविधिवर्णन[1] ।

कबीर साहबका चौका करके धर्मदासजीको परवाना देना ।

धर्मदासवचन ।

धर्मदास पद गहि अनुरागा । हो प्रभु मोहि कीन सुभागा॥
हे प्रभु ! नहिं रसना प्रभुताई।अमित रसनगुण बरनिनजाई॥
महिमा अमितअहैतुमस्वामी।केहिविधिवरनों अन्तरयामी ॥
मैंसबविधिअयोग्यअविचारी । मुझअधमहिंतुमलीन उबारी॥
अबचौकाभेदकहामुहिस्वामी ।काहि कहहुतिनुका सुखधामी॥
जो तुम कहौ करौं मैं सोई । तामहँ करे न परिहैं कोई ॥

कबीरवचन । चौकाका साज ।

धर्मदास सुनु आरति साजा । जाते भागि चले यमराजा ॥
सात हाथको बस्तर लाओ । स्वेत चँदेवा छत्र तनाओ ॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो ।

घर आंगनसब शुद्ध कराओ। चौका करिचंदनछिडकाओ ॥
तापर आटा चौक पुराओ। सवा सेर तन्दुल लै आओ ॥
स्वेत सिंहासन तहां बिछाई। नाना सुगन्ध धरु तहँ लाई ॥
स्वेत मिठाई स्वेतै पाना। पुंगीफल स्वेतहि परमाना ॥
लौंग लायची कपुर सँवारो। मेवा अष्ट केरा पनवारो ॥
जिव पीछे नरियल लैआओ।यह सब साज सुआनिधराओ॥
जो कछु साहब आज्ञा कीन्हा। धर्मदास सब कछुधरि दीन्हा॥
बहुरिधर्मनिविनती अनुसारा।अबसमरथकहहुमुक्ति बिचारा॥
सबहि वस्तु मैं आनेउँ साई। जसतुमनिजमुखभाखिसुनाई॥
सुनत वचन साहब हर्षाने। धन्य धर्मनि अबतुममनमाने॥

छन्द।

चौकाविधिते पोतिप्रभु, आसन बैठिया जायहो ॥
लघुदीरघ जीव धर्मनि, सबहि दीन्ह बुलायहो ॥
नारिपुरुष एक मति करि,लीन नरियर हाथहो ॥
गुरुसन्मुखधरिभेंटकीन्हा, बहुविधिनायेमाथहो ॥
सोरठा-सतगुरुचरणमयंक,चितचकोरधर्मनि कहा ॥
भेंटचोसब मनशंक,भावभक्तिअति चित धरचो ॥

चौका कीन शब्दधुनिगाजा। ताल मिरदङ्ग झांझरी बाजा ॥
धर्मदासको तिनका तोरा। जाते काल न पकरे छोरा ॥
सत्य अंक साहब लिख दीना।तत छिन धर्मदास गहिलीना॥
धर्मदास परवाना लीन्हा। सात दण्डवत तबहीं कीन्हा॥
सतगुरु हाथ माथतिहिदीन्हा। दै उपदेश कृतारथ कीन्हा ॥

कबीर साहबका धर्मदासजीको उपदेश देना।

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। सत्य भेद मैं कियो परकासा ॥
नाम पान तुहि दीन लखाई। काल जाल सबदीन मिटाई ॥

अब सुनु रहन गहनकीबाता । विन जाने नर भटका खाता ॥
सदा भक्ति करो चितलाई । सेवो साधु तजिमान बडाई ॥
पहिले कुल मरजादा खोवे । भयते रहित भक्ति तब होवे ॥
सेवा करो छाडि मत दूजा । गुरुकी सेवा गुरुकी पूजा ॥
गुरुसे करे कपट चतुराई । सो हँसा भव भरमें आई ॥
ताते गुरुसे परदा नाहीं । परदा करे रहे भवमाहीं ॥
गुरुके वचन सदाचित दीजे । माया मोह सुकोर न भीजे ॥
यहि रहनी भव बहुरिनआवे । गुरुके चरणकमल चितलावे ॥

छंद ।

सुनहुधर्मदासदृढकैगहो, एक नामकी आसहो ॥
जगतजाल बहुजंजालहै काल लगाये फांस हो ॥
पुरुष नाम परताप धर्मनि, सुमतिहोय सुघलहे ॥
नारिनरपरिवारसबमिलि, कालकराल तवना रहे ॥
सोरठा–तुमघरजेतिकजीव,सबकहँबेगि बुलावहू ॥
सुरति धरोदृढ पीव बहुरि कालपावेनहीं ॥८०॥

धर्मरायवचन ।

हे प्रभु तुम जीवनके मूला । मेटेउ मोर सकल तमसूला ॥
आहि नारायण पुत्र हमारा । सौंपहु ताहु शब्द टकसारा ॥
इतना सुनत सद्गुरु हँसदीना। भाव प्रगट बाहर नहिं कीना ॥

कबीरवचन ।

धर्मदासतुमबोलाव तुरन्ता । जेहिको जानहुतुमशुद्धअन्ता ॥
धर्मदास तब सबहिंबुलावा । आय खसमके चरणटिकावा ॥
चरण गहो समरथके आई । बहुरि न भव जल जन्मो भाई ॥
इतनासुनतबहुत जिव आये। धाय चरणसतगुरु लपटाये ॥

यक नहिं आये दास नरायन। बहुतक आय परे गुरु पायन॥
धर्मदास सोच मन कीन्हा। काहे न आयो पुत्र परवीना॥

नारायणदासजीका कबीरसाहबकी अवज्ञा करना।

धर्मदासवचन अपने दास दासियों प्रति।

दास नरायन पुत्र हमारा। कहाँ गयो बालक पगुधारा॥
ता कहँ ढूँढ लाहु कोइ जायी। दास नरायन गुरुपहँ आयी॥
रूपदास गुरु कीन्ह प्रतीता। देखहु जाय पढत जहँ गीता॥
वेगि जाइ कहु तुम्हें बुलायी। धर्मदास समरथ गुरु पायी॥
सुनत सँदेशी तुरतहि जायी। दास नरायन जहां रहायी॥

संदेसीवचन नारायणदास प्रति।

चलहु वेगि जिन बार लगाओ। धर्मदास तुम कहँ हँकराओ॥

नारायणदासवचन।

हम नहिं जाँय पिताके पासा। वृद्ध भये सकलौ बुधि नाशा॥
हरि सम कर्ता और कहँ आही। ताको छोड जपैं हम काही॥
वृद्ध भये जुलहा मन भावा। हम मन गुरु विठलेश्वर[1] पावा॥
काहि कहौं कछु कहो न जाई। मोरा पिता गया बौराई॥

संदेशीवचन।

चलि संदेशी आया तहँवा। धर्मदास बैठे रह जहँवा॥
कह संदेशी रह अरगाये। दास नराइन नाहीं आये॥
यह सुन धर्मदास पगु धारा। गये तहां जहँ बैठे बारा॥

धर्मदासवचन नारायणदास प्रति।

छन्द।

चलहु पुत्र भवन सिधारहु, पुरुष साहिब आइया॥
करहु विनती चरण टेकहु, कर्म सकल कटाइया॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो

सतगुरुकरोतिहिआयकहुँचलुवेगितजिअभिमानरे॥
बहुरि ऐसो दावबनेनहिं, छोडि दे हठ बावरे ॥७७॥
सोरठा-भल सतगुरु हम पाव,यमके फंद कटाइया॥
बहुरिनिजन महँ आव,उठहु पुत्र तुम बेगिही८१

नारायणदासवचन ।

तुम तो पिता गये बौराई । तीजे पन जिंदा गुरु पाई ॥
राम नाम सम और न देवा । जाकी ऋषि मुनिलावहिंसेवा॥
गुरु विठलेश्वर छांडेउ हीता। वृद्ध भये जिंदा गुरु कीता ॥

धर्मदासवचन ।

बांह पकर तब लीन्ह उठाई । पुनि सतगुरुके सन्मुख लाई॥
सतगुरु चरण गहोरे वारा । यमके फन्द छुडावनहारा ॥
बहुरि न योनी संकट आवे । जो जिव नाम शरणगत पावे॥
तज संसार लोक कहँ जाई । नाम पान गुरु होय सहाई ॥

नारायणदासवचन ।

तब मुख फेरे नरायन दासा । कीन्ह मलेच्छ भवन परगासा॥
कहँवाते जिंदा ठग आया । हमरे पितहिं डारि बौराया ॥
वेद शास्त्र कहँ दीन्ह उठायी।आपनि महिमा कहत बनायी॥
जिंदा रहे तुम्हारे पासा । तौ लग घरकी छोडी आसा॥
इतनासुनतधर्मदासअकुलाने । ना जानो सुत का मत ठाने॥
पुनिआमिनबहुबिधिसमझायो।नारायन चितएकु न आयो॥
तब धर्मदास गुरु पहँ आये । बहुविधितेपुनिविनतीलाये ॥

धर्मदासवचन कबीर प्रति ।

कहो प्रभु कारन मोहि बतायी । कोइ कारन पुत्र दुचितायी ॥

कबीरवचन।

तब सतगुरु बोले मुसकायी। प्रथमहि धर्मनि भाखसुनायी॥
बहुरि कहौं सुनहु दे कानो। या महँ कछु अचरजनामानो॥
पुरुष आवाज उठी जिहिबारा। ज्ञानी वेगि जाहु संसारा॥
काल देत जीवन कहँ त्रासा। वेगि जाहु काटहु यम फांसा॥
ज्ञानी तत्क्षण मस्तक नाई। पहुँचे जहां धर्म अन्याई॥
धमराय ज्ञानी कहँ देखा। विपरीत रूप कीन्हतब भेखा॥

धर्मरायवचन।

सेवा वस दीप हम पाया। तुम भवसागर कैसे आया॥
करों संहार सहिततोहिज्ञानी। तुम तो मर्म हमार न जानी॥

ज्ञानी वचन।

ज्ञानीकहै तब सुनु अन्याई। तुम्हरे डर हम नाहिं डराई॥
जो तुम बोलेउ वचन हँकारा। तत्क्षण तोकहँ डारों मारा॥

धर्मरायवचन।

तबै निरंजन बिनती लाई। तुम जग जाय जीव मुक्ताई॥
सकलो जीव लोक तुव जावे। कैसे क्षुधा सु मोरि बुझावे॥
लक्षजीवहम निशिदिनखाया। सवा लक्ष नितप्रतिउपजाया॥
पुरुष मोहि दीन्ही रजधानी। तसै तुमहू दीजे ज्ञानी॥
जगमें जाय हंस तुम लावहु। कालजालते तिन्हें छुडावहु॥
तीनो युग जिव थोरागयऊ। कलियुगमें तुम माड मडयऊ॥
तब तुम आपन पंथ चलै हो।जीवन लै सतलोक पठै हो॥
इतना कही निरंजन बोला। तुमते नहीं मोर बस डोला॥
और बन्धु जो आवत कोई। छिनमहँ ता कहँ खात बिगोई॥
मैं कहौं तो मनिहो नाहीं। तुम तो जात जगतके माहीं॥
हमहू करब उपाय तहांहीं। शब्द तुम्हार माने कोइ नाहीं॥

कर्म भ्रम मैं अस करूं ठाटा । जाते कोइ न पावे बाटा ॥
घर घर भूत भ्रम उपजायब । धोखा दइदेइ जीव भुलायब ॥
मद्य मांस भक्षै नर लोई । सर्व मांस मद नर प्रिय होई॥
तुम्हरी कठिन भक्ति है भाई । कोइ न मनि हैं कहौं बुझाई॥
ताहीते मैं कहौ तुम पाहीं । अब जनिजाहुजगतकेमाहीं॥

कबीरवचन ।

तेहि क्षण कालसन हमभाखा । छलबलतुम्हरोजानिहमराखा॥

छंद ।

देव सत्य शब्द दिढाय, हंसहिं भ्रम तेरो टारऊँ ॥
लक्ष बल तुम्हारसब चिन्हायडारूं, नामबलजिवतारऊँ
मन कर्म बानी मोहि सुमिरे, एक तत्त्व लोलायहैं॥
सीस तुम्हरे पांव दे जीव, अमरलोकसिधायहैं ७८
सोरठा-मरदे तुम्हरो मान; सूरा हंस सुजानकोइ॥
सत्य शब्द परमान; चीन्हे हंसहि हर्ष अति ॥८२॥

इतना सुनत काल जब हारा । छलमत्ता तब करन बिचारा॥

निरञ्जनवचन ।

कहैधरम सुनु अंश सुखदायी । बात एक मुहिकहौ बुझायी॥
यहि युग कौन नाम तुम्ह होई।तौन नाम मुहि राखो गोई ॥

कबीरवचन ।

नामकबीर हमार कलिमाहीं । कबीरकहतजमनिकटनआहीं॥

निरंजनवचन ।

इतना सुनत बोला अन्याई । सुनौ कबीर मैं कहौं बुझायी॥
तुम्हरो नाम लै पंथ चलायब।यहि विधिजीवनधोखलगायब॥
द्वादश पंथ करब हम साजा । नाम तुम्हारे करब अवाजा॥

मृतु अन्धा है हमरो अंशा । सुकृतके घर होवे वंशा ॥
मृतु अंधा तुम्हरे ग्रह जैहैं । नाम नरायन नाम धरैं हैं ॥
प्रथमै अंश हमारा जाई । पीछे अंश तुम्हारा भाई ॥
इतनी बिनती मानो मोरी । बार बार मैं करौं निहोरी ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

तब हम कहा सुनो धर्मराया । जीवन काज फंद तुमलाया ॥
ता कहँ वचन हार हम दीन्हा । पीछे जगहिं पयाना कीन्हा ॥
सो मृत अंधा तुम घर आवा । भयउ नरायन नाम धरावा ॥
काल अंश तो आहि नरायन । जीवन फंदा काल लगायन ॥

छंद ।

हम नाम पंथ प्रकाश करि हैं, जीव धोखा लावई ॥
मृत भेद न जीव पावे, जीव नरकहिं नावई ॥
जिमि नाद गावतपारधीबश, नाद मृग कहँकीन्हेऊ
नादसुनि ढिगमृग आयोजब, चोट तापर दीन्हेऊ ७९
सोरठा—तस यम फंद लगाय, चेतनहारा चेति हैं ॥
बचन वंश जिन पाय, तेपहुँचे सतलोक कहँ ॥८३॥

द्वादश पंथका वर्णन[1] ।

धर्मदासवचन ।

द्वादश पन्थ कालसों हारा । सो साहिबमोहिं कहोविचारा ॥
कौन पंथकी कैसी रीती । कहिये सतगुरु होय प्रतीती ॥
हम अजान कछु मर्म न जाना । तुम साहिब सत पुरुष समाना ॥
मो किंकर पर कीजे दाया । उठि धर्मदास गहे दोइ पाया ॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो.

कबीरवचन ।

धर्मनि बूझहु प्रगट सँदेशा । मेटहुँ तोर सकल भ्रम भेषा ॥
द्वादश पंथ नाम समझाऊ । चाल भेद सब तोहि लखाऊ ॥
जस कछु होय चालव्यवहारा । धर्मदास मैं कहों पुकारा ॥
तोरे जिवका धोख मिटाऊँ । चित संशय सब दूर बहाऊँ ॥

मृत्यु अंधादूतका पंथ १ ।

प्रथम पंथका भाखौ लेखा । धर्मदास चित करो विवेखा ॥
मृतु अंधा इक दूत अपारा । तुम्हरे गृह लीन्हों औतारा ॥
जीवन काज होइ दुखदाई । बार बार मैं कहों चिताई ॥

तिमिर दूतका पन्थ २ ।

दूजा तिमिर दूत चल आवे । जात अहीरा नफर कहावे ॥
बहुतक ग्रंथ तुम्हार चुरै हैं । आपन पन्थ नियार चलै हैं ॥

अन्ध अचेत दूतका पन्थ ३ ।

पन्थ तीसरे तोहि बताऊँ । अन्ध अचेत सो दूत लखाऊँ ॥
होय खवास आय तुम पासा । सुरतगुपाल नाम परकाशा ॥
अपनो पन्थ चलावे न्यारा । अक्षर जोगजीव भ्रम डारा ॥

मनभंग दूतका पन्थ ४ ।

चौथा पन्थ सुनो धर्मदासा । मनभंग दूत करै परकासा ॥
कथा मूल ले पंथ चलावे । मूल पंथ कहि जग महिं आवे ॥
लूदी नाम जीव समुझाई । यही नाम पारस ठहराई ॥
झंग शब्द सुमिरन मुख भाखे । सकल जीव थाका गहि राखे ॥

ज्ञानभंगी दूतका पन्थ ५ ।

छंद ।

पंथ पांचे सुनो धर्मनि ज्ञान भंगी दूतजो ॥ पन्थ तिहि टकसार है गुर साधु आगम भाख जो ॥ जीभ नेत्र

ललाटके सब रेख जिवके परखावई ॥ तिल मसा परिचय देखिके तब जीव धोख लगावई ॥ ८० ॥
सोरठा–जस जिहिकर्मलगाय; तसतिहिपानखवाइहैं नारी नर गाठ बंधाय, चहुँ दिश आपन फेरि हैं ८४

मनमकरंद दूतका पंथ ६।

छठे पंथ कमाली नाऊ। मनमकरंद दूत जग आऊ ॥
मुरदा माहिकीन्ह तिहिंबासा। हम सुत होय कीन परकासा ॥
जीवहिझिलमिलज्योतिदृढाई।यहि बिधि बहुतजीवभरमाई ॥
जौं लगि दृष्टि जीव करहोई। तौं लगि झिलमिल देखे सोई ॥
दोनों दृष्टिनाहिं जिन देखा। कैसे झिलमिल रूप परेखा ॥
झिलमिलरूपकालकरमानो। हिरदे सत्यताहिजनि जानो॥

चितभंग दूतका पन्थ ७।

सातें दूत आहि चित भंगा। नाना रूप बोल मन रंगा ॥
दौन नाम कह पंथ चलावे। बोलनहार पुरुष ठहरावे ॥
पांच तत्त्व गुण तीन बतावे। यहि विधि ऐसा पंथ चलावे ॥
बोलत वचन ब्रह्म है आपा। गुरु वासिष्ट राम किमिथापा॥
कृष्ण कीन्ह गुरुकी सेवकाई। ऋषिमुनि और गने को भाई ॥
नारद गुरु कह दोष लगावा। ताते नरक वास भुगतावा ॥
बीजक ज्ञान दूत जो थापे। जस गूलर कीडा घट व्यापे ॥
आपा थापी भला न होई। आपा थापि गये जिव रोई ॥

आकिलभंग दूतका पन्थ ८।

अब मैं आठवें पंथ बताऊं। अकिलभंग दूत समझाऊं ॥
परमधाम कहि पंथ चलावे। कछु कुरान कछु वेदचुरावे ॥
कछु कछुनिर[illegible]णहमरो लीन्हा। तारतम्य पोथी इक कीन्हा ॥
राह चलावे ब्रह्मका ज्ञाना। करमी जीव बहुत लपटाना ॥

विशम्भर दूतका पन्थ ९ ।

नववें पंथ सुनो धर्मदासा । दूत विशम्भर केर तमासा ॥
राम कबीर पंथ कर नाऊ । निरगुण सरगुण एकमिलाऊ॥
पाप पुन्य कहँ जाने एका । ऐसे दूत बतावे टेका ॥

नकटानैन दूतका पन्थ१० ।

अब मैं दसवां पंथ बताऊं । नकटा नैन दूत कर नाऊं ॥
मतनामी कह पंथ चलावें । चार वरण जिव एक मिलावें॥
ब्राह्मण औ क्षत्री परभाऊ । वैश्य शूद्र सब एक मिलाऊ ॥
सतगुरु शब्द न चीन्हें भाई। बांधे टेक नरक जिव जाई ॥
काया कथनी कहि समुझावे। सत्य पुरुषकी राह न पावे ॥

छंद ।

सुनहु धर्मनि काल बाजी करहि बड फन्दावली ॥
अनक जीवन लइ गरास काल कर्म कर्मावली ॥
जो जीव परखे शब्द मम सोनिसतरैं जमजालते ॥
गहे नाम प्रताप अविचल जाय लोकअमानते ८१

सोरठा-पुरुषशब्दहैसार,सुमिरणअमीअमोलगुण ॥
हंसा होय भौ पार, मन बच कर जोदृढगहे ८५

द्रुगदानी दूतका पन्थ ११ ।

पंथ इकादश कहों विचारा । दुरगदानी जो दूत अपारा ॥
जीव पंथ कहिनाम चलावे । काया थाप राह समुझावे॥
काया कथनी जीव बतायी । भरमे जीव पार नहिं पायी ॥
जो जिव होयबहुत अभिमानी।सुनके ज्ञान प्रेम अति ठानी ॥

हंसमुनि दूतका पन्थ १२ ।

अब कहुँ द्वादश पंथ प्रकाशा। दूत हंसमुनि करे तमाशा ॥
वचन बंस घर सेवक होई । प्रथम करे सेवा बहु तोई ॥

पाछे अपनो मत प्रगटावे। बहुतक जीवन फन्द फँदावे ॥
अंस बंसका करे विरोधा। कछुअमान कछुमानप्रबोधा॥
यहि विधिजम बाजी लावे। बारह पन्थनिजअंश प्रगटावे॥
फिरिफिरि आवे फिरि फिरि जाई। बार बार जगमें प्रगटाई ॥
जहां जहां प्रगटे यमदूता। जीवनसे कह ज्ञान बहूता॥
नाम कबीर धरावे आपा। कथेज्ञान काया कहँ थापा॥
जब जब जनम धरे संसारा। प्रगट होयके पंथ पसारा ॥
करामात जीवन बतलावे। जिव भरमाय नरक महँ नावे॥

छंद।

असकाल परबल सुनहु धर्मनि,करेछलमतिआयके ॥
ममवचन दीपक दृढ गहे, मैं लेहुँताहि बचायके ॥
अंश हंसन तुम चिताओ,सत्य शब्दहि दानते ॥
शब्द परखेयमहिचीन्हे, हृदय दृढगुरुज्ञानते ॥८२॥
सोरठा-चितचतोधर्मदास, यमराजाअसछलकरे ॥
गहे नाम विश्वास, ता कहँ यम नहिं पावई ॥८६॥

धर्मदासवचन।

हे प्रभु तुम जीवनके मूला। मेटहु मोर सकल दुखशूला ॥
आहि नरायन पुत्र हमारा। अब हम ता कहँदीन्ह निकारा॥
काल अंश ग्रह जन्मो आई। जीवन काज भयो दुखदाई ॥
धनसतगुरुतुम मोहिलखावा। काल अंशको भावचिन्हावा॥
पुत्र नरायणत्यागि हमदीना। तुमरो वचन मानिहमलीना ॥

धर्मदास साहबको नौतम अंशका दर्शन होना।

धर्मदास बिनवै सिरनाई। साहिब कहो जीव सुखदाई॥
किहिबिधिजीवतरै भौसागर। कहिये मोहि हंसपति आगर॥

कैसे पंथ करों परकाशा। कैसे हंसहिं लोक निवासा॥
दासनरायन सुत जो रहिया। कालजानता कहँपरिहरिया॥
अब साहिब देहु राह बताई। कैसे हंसा लोक समाई॥
कैसे बंस हमारो चलि है। कैसे तुम्हारपन्थ अनुसरिहै॥
आगे जेहिते पन्थ चलाई। ताते करों विनति प्रभुराई॥

कबीरवचन।

धर्मदास सुनु शब्दसिखापन। कहोंसंदेश जानिहित आपन॥
नौतम सुरति पुरुषके अंशा। तुवगृह प्रगट होइ है वंशा॥
वचन वंश जग प्रगटे आई। नाम चुरामणि ताहि कहाई॥
पुरुष अंशके नौतम वंशा। काल फंद काटे जिव संशा॥

छंद।

कलि यहि नाम प्रतापधर्मनि, हंसछूटे कालसो॥
सत्तनाममनबिचदृढगहे,सोनिस्तरे यमजालसो॥
यम तासु निकट न आवई,जेहि वंशकी परतीतिहो
कलिकालके सिरपांवदै, चले भवजल जीति हो ८३

सोरठा—तुमसों कहों पुकार,धर्मदास चित परखहू
तेहि जिव लेहुँ उबार,वचन वंश जो दृढगहे॥८७॥

धर्मदासवचन।

हे प्रभु विनय करों कर जोरी। कहत वचन जिव त्रासैमोरी॥
वचन वंश पुरुषके अंशा। पावउँ दर्श मिटे जिव संशा॥
इतनी विनय मान प्रभुलीजे। हे साहिब यह दाया कीजे॥
तब हम जानहिंसतकी रीती। वचन तुम्हार होय परतीती॥

कबीरवचन मुक्तामणि प्रति।

सुन साहेब अस वचन उचारा। मुक्तामणि तुम अंश हमारा॥

अति अधीन सुकृत हठलायी। तिनकहँ दर्श देहु तुम आयी॥
तब मुक्तामणि क्षण इक आये। धर्मदास तब दर्शन पाये॥

धर्मदासवचन।

गहिके चरण परे धर्मदासा। अब हमरे चितपूजी आसा॥
बारम्बार चरण चितलाया। भलेपुरुषतुमदर्शदिखलाया॥
दर्श पाय चित भयो अनंदा। जिमिचकोरपायेनिशिचंदा॥
अब प्रभु दया करो तुम ज्ञानी। वचन वंश प्रगटे जग आनी॥
आगे जेहिते पन्थ चलाई। तेहिते करौं विनति प्रभुराई॥

कबीरवचन। चूरामणिकी उत्पत्तिकी कथा।

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। दशै मास प्रगटे जिव कासा॥
तुम गृह आय लेहि अवतारा। हंसन काज देह जग धारा॥
धर्मदास सुनु शब्द सिखावन। कहों सँदेश जानि हित आवन॥
वस्तु भंडार दीन तुम पांही। सौंपहु वस्तु बतावहुँ ताही॥
अब जो होइ है पुत्र तुम्हारा। सो तो होइ हैं अंश हमारा॥

धर्मदासवचन।

धर्मदास अस विनती लायी। हे प्रभु मोकहँ कहु समझाई॥
हे पुरुष हम इन्द्री वशकीन्हा। कैसे अंश जनम जग लीन्हा॥

कबीरवचन।

तब आयसु साहब अस भाखे। सुरतिनिरतिकरिआज्ञाराखे॥
पारस नाम धर्मनिलिखिदेहू। जाते अंश जन्म सो लेहू॥
लखहु सैन मैं दऊँ लखाई। धर्मदास सुनियो चितलाई॥
लिखो पान पुरुष सहिदाना। आमिन देहु पान परवाना॥

धर्मदासवचन।

तब गयउ धर्मदास कह शंका। दृष्टि समीप कीन्ह पर संगा॥
धर्मदास आमिन हँकरावा। लाय खसमके चरन परावा॥

पारस नाम पान लिख दीन्हा। गरभवास आसा नो लीन्हा॥
रतिसुरतिसो गरभजोभयऊ। चूरामनिदासउत्पनतबलयऊ॥
धरमदास परवाना दीन्हा। आमिन आय दंडवत कीन्हा॥
दसों मास जब पूजी आसा। प्रगटे अंश चुरामणि दासा॥
कहिये अगहन मास बखानी। शुक्ल पक्ष उत्तम दिन जानी॥
मुकतामन परगटि जब आये। द्रव्य दान औ भवन लुटाये॥
धन्य भाग मोरे गृह आये। धर्मदास गहि टेके पाये॥

कबीरवचन।

जाना कबीर मुकता मन आये। धर्मदास गृह तुरत सिधाये॥
अहै मुक्तकेर अक्षर मुक्तामन। जीवन काज देह धर आयन॥
अग्र छाप अब प्रगटे आये। यमसों जीव लेहिं मुक्ताये॥
जीवन केर भयो निस्तारा। मुक्तामनि आये संसारा॥

ब्यालीस वंशके राज्यकी स्थापना।

कछुकदिवसजबगयेबितायी। तब साहिब इकवचन सुनायी॥
धर्मदास लो साज मँगाई। चौका जुगत करब हम भाई॥
थापब वंश बयालिस राजू। जाते होय जीवको काजू॥
धर्मदास सब साज मँगाई। ज्ञानी आगे आन धराई॥

धर्मदासवचन।

और साज चाहो जो ज्ञानी। सो साहिब मोहि कहो बखानी॥

कबीरवचन।

साहिब चौका जुगत मडावा। जो चाहिय सो तुरत मंगावा॥
बहुत भांतिसों चौक पुरायी। चूडामणि कहँ लै बैठायी॥
पुरुष वचन तुमजगमहँ आये। तेहिविधिजीव लेहु मुकताये॥
वंश बयालिस दीन्हा राजू। तुमते होय जीवका काजू॥

चूरामणिको कबीरसाहबका उपदेश देना ।

तुम्हरे वंश बयालिस होई । सकल जीवकहँ तारें सोई ।
तिनसों साठ होइ हैं शाखा । तिनशाखनतेहोइहैंपरशाखा ॥
दश सहस्रपर शाखतुव ह्वै हैं । वंशन हाथ सबै निरवहि हैं ॥
नाता जान करे अधिकाई । ताकहँ लोक बदो नहिं भाई ॥
जस तुम्हार हुइ है कडिहारा । तैसे जानो साख तुम्हारा ॥

छंद ।

पुरुष अंश नहिं दूसरे तुम, सुनहु सुवंश नागरा ॥
अंश नौतम पुरुषके तुम, प्रगट भै भौसागरा ॥
देख जीवन कहँ विकल तब,पुरुष तोहि पठायऊ ॥
वंश दूजो कहे तेहि, जीव यम लै खायऊ ॥ ८४ ॥
सोरठा-वंश पुरुषके रूप, ज्ञान जौहरी परखि हैं ॥
होवे हंस स्वरूप, वंश छाप जो पाइ हैं ॥ ८८ ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

सतगुरु कहै धर्मनिसुनि लेहू । अब भण्डार सौंपि तुम देहू ॥
प्रथम तुमहिं जो सौंपा भाई । सबहिंवस्तु तुम देहु लखाई ॥
तब चूरामनि होवें पूरा । देखत काल होय चकचूरा ॥
आज्ञा सुनत उठे धर्मदासा । चूरामणि हँकरायेनिजपासा ॥
वस्तु लखाय तेहि छन दीन्हा ।तनिकोविलम्बनतामहँकीन्हा ॥
दोउ आय पुनि गुरुपदपरसे । कांपन लग्यो कालतबडरसे ॥
सतगुरु भये हुलास मनमाहीं । देखि चूरामनि अति हरषाहीं ॥
बहुरि धर्मनि सन भाषन लागे।सुनहु सुकृततुमबहुत सुभागे ॥
वंश तोर भये जग कडिहारा । जग जीवन होइ हैं भवपारा ॥

इतने होइ हैं ब्यालिस बंसा । प्रथम प्रगटै सोइ मम अंसा ॥
वचन वंश मम सोइ कहावै । बहुरिहोय सोविन्द जगआवै॥

वंशका माहात्म्य ।

वंश हाथ परवाना पइहैं । सो जिव निरभयलोकसिधैहैं॥
ताकहँ यम नहिं रोके बाटा । क्रोड अठासी ढूँढे घाटा ॥
कोटज्ञान भाखे मुख बाता । नाम कबीर जपे दिनराता ॥
बहुतक ज्ञान कथे असरारा । वंश विना सब झूठ पसारा ॥
जो ज्ञानी करि है बकवादा । तासों बूझहु व्यंजन स्वादा ॥
कोट यतनसों विंजन करई । साम्हर बिन फीका सब रहई॥
जिमिविंजनतिमिज्ञानबखाना।वंश छाप सब रस सम जाना ॥
चौदह कोटि है ज्ञान हमारा । इनते सार शब्द है न्यारा ॥
नौ लख उडगन उगें अकाशा । ताहि देख सब होत हुलासा॥
होवे दिवस भानु उगि आवे । तबउडगनकी ज्योतिछिपावे॥
नौलख तारा कोटि गियाना । सार शब्द देखहु जस भाना॥
कोटि ज्ञान जीवन समुझावे । वंश छाप हंसा घर जावे ॥
उदधि मांझ जसचलै जहाजा । ताकर और सुनो सब साजा॥
जस वोहित तस शब्द हमारा । जस करिया तस वंश तुम्हारा॥

छंद ।

बहुभांति धर्मनि कहों तुमसों, पुरुष मूल बखानिहो
वंशसों दूजो करे जोइ सो, जाय यमपुर थान हो ॥
वंश छाप न पावईजो जिव,शब्द निशिदिनगावहो॥
काल फन्दा ते फँदे तेही मोहि दोषन लावहो॥८९॥
सोरठा-तजे कागकी चाल,परखि शब्दसोहंसहो ॥
ताहि न पावै काल, सार शब्दजोदृढ गहे ॥८९॥

धर्मदासवचन।

धर्मदास विनती अनुसारी। हे प्रभु मैं तुम्हरी बलिहारी॥
जीवन काज वंश जग आवा। सो साहिबसब मोहिं सुनावा॥
वचन वंश चीन्हें जो ज्ञानी। ता कहँ नहिं रोके दुर्ग दानी॥
पुरुष रूप हम वंशहि जाना। दूजा भाव न हृदये आना॥
नौतमअंश परगट जग आये। सो मैं देखा ठोंक बजाये॥
तबहूँ मोहि संसय एक आवे। करहु कृपा जाते मिट जावे॥
हम कहँसमरथ दीन पठायी। आये जग तब कालफँसायी॥
तुमतो कहौमोहि सुकृत अंसा। तबहूँकालकराल मुहिडंसा॥
ऐसहि जो वंशन कहँ होई। जगत जीव सब जायविगोई॥
ताते करहु कृपा दुखभंजन। वंशन छले नहिं कालनिरंजन॥
और कछू मैं जानौं नाही। मोर लाज प्रभु तुम कहँ आही॥

कबीरवचन।

धर्मदास तुम नीक विचारा। यह संशय सत आदि तुम्हारा॥
आगे अस होइहिं धर्मदासा। धर्मराय एक करै तमासा॥
सो मैं तुमसे गोय न राखों। जसहोइहिं तस सतसतभाखों॥
प्रथम सुनो आदिकी वानी। करिके ध्यान लेहुतुम जानी॥
सतयुग पुरुष मोहिं हँकराई। आज्ञाकीन्ह जाहु जग भाई॥
तहँते चले काल मग भेंटा। बहु तकरार दर्प तिहि मेटा॥
तब तिनकपट मोसनकीन्हा। तीनयुग माँगि मोहिसनलीन्हा
पुनिअसकहेसि काल अन्याई। चौथायुग नहिं मांगो भाई॥
ऐसा वचन हार हम दीन्हा। तब संसार गमन हम कीन्हा॥
तीनियुगहार तिहिं हमदीन्हा। ताते पन्थप्रगट नहिं कीन्हा॥
चौथायुग जबकलियुगआयो। बहुरिपुरुष मुहि जगतपठायो

मगमहँ रोक्यो काल कसाई । बहुत विधिसोकरी बरियाई ॥
सो कथा हम प्रथम जनाई । बारह पन्थको भेद बताई ॥
कपट करयो बारह बतलायो । औरो बात न मोहिजनायो ॥
तीनि युगन मोहिदीन हिरायी । कलियुगमांबहुफन्दमचायी ॥
बारहपन्थप्रगट मोहि भाखा । चार पन्थ सो गुप्तहिं राखा ॥
जब मैं चारगुरू निरमाया । कालहु आपनअंश पठाया ॥
जब हम कीनो चार कडिहारा । धर्मराय छलबुधिविस्तारा ॥
पुरुष हम सन कीन परगासा । जानि परमारथ कहोंधर्मदासा
यह चरित्र सोइ बुझिहै भाई । जासु हृदय निजनामसहाई॥

निरंजनका अपने चार अंशको पंथ चलानेकी आज्ञा देनेकी कथा

चारहिअशनिरञ्जन कीन्हा । तिनकहँ बहुत सिखापनदीन्हा

धर्मदासवचन ।

तिनते कह्यो सुनहु हो अंशा । तुमतो आहु मोरनिजबंसा ॥
तुमते कहौं मानि सो लीजै । आज्ञा मोर सो पालन कीजै ॥
बैरी हमार अह यक भाई । नाम कबीर जगमांहि कहाई॥
भवसागर मेटन सो चाहै । और लोकसो बसावत आहै॥
करिछल कपट जंगत भरमावै।मोरराहते सबहिं छुडावै ॥
सत्य नामकर टेर सुनाई । जीवन कहँ सो लोक पढाई ॥
जगतउजारन सो मन दीन्हा। तातेतुमहिंहम उत्पनकीन्हा॥
आज्ञा मानि जगत महँ जाहू । नाम कबीर पन्थ प्रगटाहू ॥
जगत जीव विषया रस माते । मैं जोकहहुँ करहुसोइ घाते ॥
पन्थचार तुमजगत निरमाओ। आपन आपन राहबताओ ॥
नाम कबीर चारो धरिराखो।विनाकबीर वचन मुख भाखो॥
नाम कबीर जबै जिव आवैं । कहहु वचन तिनके मन भावैं॥

कलियुग जीव ज्ञानसुधि नाहीं । देखा देखी राह चलाहीं ॥
सुनत वचन तुम्हरो हरखावैं । बार बार तुम्हरे ढिग आवैं॥
जब सरधा तिनकी दृढ होई । भेद भाव ना मनि हैं कोई॥
तिन पर जाल आपनो डारो । भगे न पावैं देखि सम्हारो॥
जम्बुदीपमहँ करि हो थाना । नाम कबीर जहां परमाना॥
जब कबीर बांधो गढ जावे । धर्मदास कहँ निज अपनावे॥
ब्यालिस वंश जब थापै राजू । तबहीं होवे राज बिराजू ॥
चौदह यमते नाका रोका । बारह पन्थ हम लाया धोखा॥
तबहूँ हम कहँ संशय भाई । ताते तुम कहँ देत पठाई ॥
ब्यालिसपर तुम करिहो घाता।तिनहिं फँसावहु अपनी बाता॥
तबहीं तो हम जानब भाई । वचन मोर तुम लियहुउठाई॥

चारो दूतवचन ।

सुनत बचन हरषे तब दूता । आज्ञा मान लीन्ह तुव बूता॥
जैसीआज्ञातुम मोहिं दीन्हा । मानिवचनहमसिरपरलीन्हा॥
हाथ जोर तिन विनवन लागे । तुम किरपा हम होब सुभागे ॥

कबीरवचन धर्मदास प्रति ।

इतना सुनत काल हरखाना । अतिही सुखदूतनते माना ॥
औरहु तिनको बहुत बुझावा । काल अन्याई राह बतावा ॥
जीव घात बहु मन्त्र सुनायी । तिन कहँ कहे जाहु जग भाई॥
चारहु चार भाव धनि जाहू । ऊंच नीच छांडहु जनि काहू॥
अस करि फानफनहु तुमभाई।जेहिकरि मोर अहारन जाई ॥
सुनत वचन तिनमनअति हरषे।काल वचन जिमिअमृतवरषे॥
यही चार दूत जग प्रगटैहैं । चार नामते पंथ चलै हैं ॥
चार दूत कहँ नायक जानो । बारह पन्थ कर अगुआ मानो॥

इन्हहीं चार जो पन्थ चलैहैं। उलट पुलट तिनहू अरथैहैं॥
चार पन्थ बारह कर मूला। वचन बंश कहँ होइ हैं सूला॥
सुनत वचन धर्मनि घबराने। हाथ जोर विनती तिन ठाने॥

धर्मदासवचन।

कह धर्मदास सुनु प्रभु मोरा। अब तो संशय भयो वरजोरा॥
अब तो विलम्ब न कीजैसाईं। प्रथम बतावहु तिनकर नाईं॥
जीवन काज मैं पूछौं तोही। तिनकर चरित्र सुनावहुमोही॥
तिन दूतन कर भेष बताओ। कहो चिह्न ताको परभाओ॥
कौन रूप तिन जगमें धारैं। केही विधिते जीवन धारैं॥
कौन देस परगटि हैं आई। हे साहब मुहि देहु बताई॥

कवीरवचन।

धर्मदास मैं तोहिं लखाओं। चारि दूत कर भेद बताओं॥

चार दूतांके नाम।

तिनकरनामप्रथमसुनिलीजै। रम्भकुरम्भजयविजयभनीजै॥

१ रम्भ दूतका वर्णन।

रम्भ दूत कर करौं बखाना। गढ कालिंजर रोपि है थाना॥
भगवानभगतवहिनामधराई। बहुतक जीव लेइ अपनाई॥
जो जियरा होइहिं अंकूरी। सो बांचहिं यम फन्दा तूरी॥
रम्भ जोरावर यम बड द्रोही। तुमहिंखंडि अरुखंडिहिमोही॥
आरती नरियर चौक संहारी। खंडिहिंलोक दीपसब झारी॥
ज्ञान ग्रन्थ औ खंडिहिं बीरा। कथहिं रमैनी काल गँभीरा॥
मोर वचन लेइ करे तकरारा। तेही फांस फँसे बहुसारा॥
चारो धार कथे असरारा। हमर नाम ले करे पसारा॥
आपहिं आप कबीर कहाई। पांच तत्त्व बसि मोहिठहराई॥
थापिहिं जीव पुरुषसमभाई। खंडहिं पुरुष जीव वर लाई॥

हंस कबीर इष्ट ठहरायी । करता कहँ कवीर गुहराई ॥
कर्ता काल जीवन दुखदाई । तेहि सरीखमोहिकहयमराई ॥
कर्मी जीवहिं पुरुष ठहराई । पुरुष गोइहिं आपु प्रगटाई ॥
जो यह जीव आपुहिं होई । नाना दुख कस भुगुते सोई ॥
पांच तत्त्ववसि जीव दुखपावे । जीव पुरुष कहँ सम ठहरावे ॥
अजर अमर पुरुषकी काया । कला अनेक रूप नहिं छाया ॥
अस यमदूत खंड देइ ताही । थापे जीव पुरुष यह आही ॥
तिल सागर झाई निज देखी । धोखा गहै नि अच्छर लेखी ॥
बिनु दर्पण दरशे निज रूपा । धर्मनि यह गुरु गम्यअनूपा ॥

छंद ।

यहिविधि रम्भअपरबल सुनधर्मिनि, करइछलमत आइके
बहु जीवहिंफांस फँसविहिजग, नामकबीरहि गाइके
अंश वंसहि चेताइहौ तुम शब्दके सहिदानते ॥
परखिममशब्दहियमाहिचीन्हे, रहेगुरुगमज्ञानते ८९
सोरठा-चित चेतो धर्मदास, यम राजाअसछलकरे ॥
गही शब्द विश्वास, हंसन शब्दचिताइहौं ॥९०॥

२ कुरम्भ दूतका वर्णन ।

रम्भकथा तोहिकहिसमुझावा । अब कुरम्भके बरनूँ भावा ॥
मगध देशमें परगटिहैं जाई । धनीदास वहि नाम धराई ॥
ज्ञानी जीवन कहँ भटकावे । कुरम्भ दूत बहुजाल खिडावे ॥
पुष्ट ज्ञानगुरु दायाजाही । कुरम्भ दूत नहिं पावै ताही ॥
जाको छुद्र ज्ञान घट होई । धोखा दे यम ताहि बिगोई ॥

धर्मदासवचन ।

हे साहब मोहि कहौ बुझाई । कौन ज्ञान वह कथिहै आई ॥

कबीरवचन ।

धर्मनि सुनो कुरम्भकीबाजी । कथी टकसार फन्द दृढसाजी ॥
चन्द सूर तत लगन पसारा । राहु केतु कथि हैं अस रारा ॥
पांच तत्व मति सार बखानी । जीव अचेत भ्रम नहिंजानी ॥
ज्योतिष मत टकसार पसरिहैं । ग्रह गोचर वश प्रभुबिसरैहैं ॥
नीर पवन कहँ कथि हैं ज्ञाना । पवन पवनके नाम बखाना ॥
आरति चौका बहु अरथैहैं । धोखा दे जीवन भरमैहैं ॥
शिष जब करिहै करिहहिंविशेषा । अंग अंगकी निरखैं रेखा ॥
नख सिख सकलनिरखिहैभाई । करम जालजीवन भरमाई ॥
निरखि परखि जिव सूरचढाई । सूर चढाय जीव धरि खाई ॥
कनककामिनिदछिनाअरपाई । यहि विधिजीवठगौरीलाई ॥
गांठ बांधि फेरिहिं तब फेरा । करम लगाय करिहिंयमचेरा ॥
पवन पचासी कालको आही । पवन नाम लिखि पानखवाहीं ॥
नीर पवन कथि करै पसारा । पवन नाम गहिआरतिबारा ॥
पचासी पवन करि अनुहारी । आरति चौका करै विचारी ॥
क्या नारी क्या पुरुष दे भाई । तिल मासा निरखे सबठाई ॥
शंख चक्र औ सीपकर देखिहैं । नखसिखरेखा सबै परिखिहैं ॥
ऐसो काल दुष्ट मति भाई । जीवन कहँ संशय उपजाई ॥
संशयलगायगरसि हैं काला । करहिं जीवको बहुतबिहाला ॥
औरहु सुनहु काल व्यवहारा । जस कछुकथिहैंकाल लबारा ॥
साठ समै बारह चौपाई । देहिं उठाय भरम उपजाई ॥
पंच अमी एकोत्तर नामा । सुमिरन सार शब्द गुणधामा ॥
जीव काज बदिजोकछुराखा । तामें कालधोखअभिलाखा ॥
पांच तत्वकेर उपचारा । कथि हैं यही मता है सारा ॥
पांचों तत्व परकीर्ति पचीसा । तीनों गुण चौदह यम ईशा ॥

यहि फन्दे जिव फन्दें भाई । पांच तत्त्व यम जाल बनाई ॥
तृन धरिसुरति तत्त्वमों लावे । तन छूटे कहुँ कहां समावे ॥
जहँ आसा तहँ बासा पावे । तत्व मतो गहि तत्त्व समावे ॥
नाम ध्यान सो देइ छुडाई । राखै तत्त्व फांस अरु बाई ॥
धर्मनिकहँलगिकहौंबखानी । दूत कुरम्भ करिहैं घमसानी ॥
ताकी छलमति चीन्हें सोई । जो जिव मोहि लखिरहैसमोई ॥
पांचो तत्त्व कालके अंगा । ताके मते जीव होय भंगा ॥

छंद ।

सुनेउ धर्मनिकुरम्भ बाजी, करि बहु फन्दफँसावई ॥
अनन्त जीवन गरासि लेवै, तत्त्व मता फैलावई ॥
लेइ नाम कबीर जग महँ, पंथ वहि परगट करै ॥
भ्रम वंशजिवे जायतेहि ढिग, कालकेमुखमेंपरै ८७॥
सोरठा–पुरुष शब्द है सार, सुमिरन अमीअमोलगुण
सो हंस हो भवपार, मन वच कर्मजोदृढ गहे॥९१॥

३ दूतजयका वर्णन ।

रम्भकुरम्भ यहकह्यो बखानी । अब परखहुतुम जयकी बानी ॥
यह जम दूत कठिन विकरारा । मूल मूल वह कथिहि लबारा ॥
ग्राम कुरकुट प्रगटे आई । गढ बांधोंके निकट रहाई ॥
कुल चमारके प्रगटे सोई । ऊचे कुलकी जात बिगोई ॥
साहब दास कहावै दूता । गणपत होइ हैं ताकर पूता ॥
दोई काल प्रबल दुखदाई । तुम्हरे बंसको घेरिहिं आई ॥
कथई मूल हमारे पासा । तुम्है उठाय दई धर्मदासा ॥
अनुभव कथिहैं ग्रन्थ बहु भाई । ज्ञानी पुरुष सम्बाद बनाई ॥

कथि हैं मूल पुरुषमोहि दीना।धर्मदास निज मूल न चीन्हा ॥
अस वहि काल जोरावर होई। छेई भरम वंशको सोई ॥
वंशहिं निज मत देइ दिढाई । पारस थाका मूल चलाई ॥
मूल छापले बंस बिगोई । पारस देहिं काल मति सोई ॥
झंग शब्द वह कथि है भाई । कच्चे जीवन देइ भुलाई ॥
जाहि नीरते काया होई ।थापिहि ताकहँ निज मतसोई॥
काया मूल बीज है कामा । राखिहि ताकहँ गुप्तहिं नामा॥
प्रथमहिं थाका गुप्तहिं राखी । सिषहिं साधिसन्धितबभाखी॥
प्रथमहि ज्ञान ग्रन्थ समुझायी। तेहि पीछे फिरकालदिढाई ॥
नारि अंग कहँ पारस देहैं। आज्ञामांगि शिष्यपहँलइहैं ॥
प्रथमहिं ज्ञान शब्द समुझैहैं। तेहि पीछे फिर मूलपिलैहैं ॥
नरक खानितेहि मूल बखानी।यमबंकाअस छल मतिठानी॥
झँझरी दीप कथ अरथाई । झंग नाम लै ध्यान धराई ॥
अनहद बाजे जमको थाना। पांच तत्त्व कर हैं घमसाना॥
पांचो तत्त्व गुफामें जाई । नाना रंग करे तहँ भाई ॥
पांचों तत्त्व करै उजियारी । उठै झंग गुफामें भारी ॥
जब सोहंगम जीव तन छांडै । तब कहोझंग कवन विधिमांडै॥
झँझरी दीप काल रचि राखा । झंग हंग दोउ कालकि शाखा॥
कथि है अविहारकालअन्याई । अविहर धोख धर्म करभाई ॥
आरति चौका कथिहि अपारा।होइहै तस बहुत कडिहारा ॥
काल नाम वह साजै बीरा । परखो धर्मदास मतिधीरा ॥
ठाम ठाम घट कर्म करै हैं । हमर नाम लै हमहिं हँसै हैं ॥
जनि हैं जगत सब यहिसमआही।बूझहि भेद भरम तबजाही॥
कहँ लगि कहौं काल कर लेखा।ज्ञानी होय सो करै विवेखा ॥

छंद।

मम ज्ञानदीपकजाहिकरसो, चीन्हिहै यमराजहो ॥
तजि काल विषयजजालहंसा, धाइहैनिजकाजहो ॥
रहनि गहनी रु विवेकबानी परखिहीकोइ जौहरी ॥
गहहिं सार असार परहरि गिराममजेहिसुधरी८८॥
सोरठा-धर्मदासलेहुजान, जमबालकको छलमतो
हंसहिं कहु सहिदान, जाते यम रोकै नहीं॥९२॥

धर्मदास तुव बस अज्ञाना । चिन्हिहैं नहीं काल सहिदाना॥
जबलग बंस रहौं लवलीना । तब लग काल रहै अतिदीना॥
रहै काल ध्यान बकलाई । तजि हैं नाम काल प्रगटाई ॥
बेधि मूल बंसमो लगि हैं । तब टकसार धोखमहँ पगि हैं॥
छेकै काल बंस कहँ आई । वस्तुके धोखे काल अरुझाई ॥
हमरी चालसे बंस उठै हैं । मूल टकसारके मत अरुझैहैं ॥
नाद पुत्र सो न्यारा रहिहै । मम वानी नहिं वहदृढगहिहै ॥
रहै उजागर शब्द अधारा । रहनि गहनिगुन ज्ञानविचारा॥
ताहि न ग्रासे काल अन्याई । यह तुम जानहु निश्चय भाई ॥

४ विजय दूतका वर्णन।

अबतुम सुनहुविजयकेभाऊ । एक एक तोहि वरनि सुनाऊ ॥
बुंदेलखंड यह परगटे जाई । ज्ञानी जीवहिं नाम धराई ॥
सखी भावको भक्ति दिढाई । रास रची औ मुरलि बजाई ॥
सखी अनेक संग लौलाई । आपहिं दूसर कृष्ण कहाई ॥
धोखा देइ जीवन कहँ सोई । बिन परिचे कस जाने लोई ॥
चच्छु अग्र रहमनकी छाया । नासा उरध अकासबताया ॥
कुहिरा परै धोखा मन केरा । स्याम सेत चित रंग चितेरा॥

छिनछिनचंचलअस्थिरनाहीं । चर्म दृष्टिसे देखै ताहीं ॥
मनकी छाया काल दिखावै । मुक्ति मूल छाया ठहरावै ॥
सत्य नामते देइ छुडाई । जाते जीव काल मुख जाई ॥
धर्मनि तोहि कहा समझाई । जस चरित्र करि है जमराई ॥
चारों दूत करै घन घोरा । यहि विधि जीवचोरावैचोरा ॥

चार दूतोंका वर्णन समाप्त ।

दूतोंसे बचनेका उपाय ।

दीपक ज्ञान धरो दिढ बारी । जाते काल न करै उजारी ॥
इन्द्रमतीकहँ प्रथमचितावा । रही सुचेत काल नहिं पावा ॥

भविष्य कथन अगल व्यवहार ।

जस कछु आगे होय है भाई । सोचरित्र तोहि कहौं बुझाई ॥
जबलों तुम रहिहो तन माहीं । तौलों काल परगटि है नाहीं ॥
गहेकिनार ध्यान बकलाये । जबतन तजौकाल तब आये ॥
छेकहिं तोर बंसको आई । काल धोकसो बंस रिझाई ॥
बहु कडिहार बंसके नादा । पारस बंसकरहिं ।[1]परस्वादा ॥
बिंदहि मूल और टकसारा । होइहि खमीर बंस मँझारा ॥
बंसहिं एक धोख बड होइहैं । हंग दूत तेहि मांहि समैहैं ॥
आप हंग अधिक है ताही । आप मांहि सो झगर कराही ॥
विन्द सुभाव आहंग नहिं छाडै । मनमत आपविन्द मनमाडै ॥
अंस हमार सुपन्थ चलइहैं । ताहि देखि सो रार बढैहैं ॥
ताको चीन्हिदेखिनहिंसकिहै । आपनवाट वंस महँ तकिहैं ॥
वंस तुम्हारअनुभवकथिरखिहैं । नादपत्रकी निन्दा भखिहैं ॥
सोइ पढिहैं बंस कडिहारा । ताको होइ बहुत हंकारा ॥
स्वारथ आया चीन्हन पैहैं । अनन्त जीवन कहँ भटकैहैं ॥

---

१ प्रस्तावनामें देखो ।

तातें तोहि कहौं समझाई। अपने वंसन देहु चिताई ॥
नाद पुत्र जो परगट होई। ताको मिलै प्रेमसे सोई ॥
तुमहू नाद पुत्र मम आहू। यह मन परखहु धर्मनि साहू॥
कमाल पुत्र जो मृतक जियावा।ताके घटमें दूत समावा ॥
पिता जानि तिन आहंग कीन्हा।तबहमथातितोहिकहँ दीन्हा ॥
हम हैं प्रेम भगतिके साथी। चाहों नहीं तुरी औ हाथी ॥
प्रेम भक्तिसे जो मोहिं गहि हैं। सो हंसा मम हृदय समै हैं ॥
अहंकारते हो तेउँ राजी। तौ मैं थापत पंडित काजी॥
अधीन देखि थाति तेहि दीना।देखेउ जबतोहि प्रेम अधीना ॥
ताते धरमनि मातु सिखाई। मादहु थाति सौंपिहु भाई ॥
नाद पुत्र कहँ सौंपिहु सोई। पंथ उजागर जासों होई ॥
बंस करि है अहंकार बहूता। हम हैं धर्मदास कुल पूता ॥
जहां हंग तहवां हम नाहीं।धरमदास देखु परखि मन माहीं ॥

धर्मदासवचन।

हौं प्रभु मैं तुव दास अधीना। तुव आज्ञाते होउँ न भीना ॥
नारहिं थाती सौंपब स्वामी। बंश तरै मोर अन्तरयामी ॥

कबीरवचन।

धरमदास तुव तरि है वंसा। याहि बातको मेटो संसा ॥
नाम भक्ति जो दिढके धरि हैं। सुनु धरमनिसो कसना तरिहैं॥
रहनि रहै तो और उबारों। नहिं तो वंस ब्यालिस तारों॥

धर्मदासवचन।

बंस व्यालिस तो तुम्हरो अंसा।ताको तारयो कौन प्रसंसा ॥
बंस अंस जो तारहु साईं। तबहीं जगमें आप बडाई ॥

कबीरवचन।

बंस ब्यालिस बंद तुम्हारा। सो मैं एक वचनते तारा ॥

और वंश लघु जेते होई । विना छाप छूटे नहिं कोई ॥
बिन्द मिलै तौ वंश कहावै । विना वचन नहीं घर आवै ॥
बचन बंश ब्यालिस ठेका । तिनका समरथ दीन्हों टेका ॥
वंस अंस वचन एक सोई । दीर्घ वंस अस लघु होई ॥
जेठो अंस वचन मोर जागे । और बंस लघु पीछे लागे ॥
चाल चलै औ पन्थ दिढावे । भूले जीवनको समझावे ॥
नाद विन्द जो पन्थ चलावे । चूरामणि हंसन मुकतावे ॥
धर्मदास तुव वश अज्ञाना । चीन्हे नहीं अंश सहिदाना ॥
जस कुछ आगे होइ हैं भाई । सो चरित्र तोहि कहौं बुझाई ॥
छठें पीढी विन्द तुव होई । भूले वंश बिन्दु तुव सोई ॥
टकसारीको लैहैं पाना । अस तुव बिन्द होय अज्ञाना ॥
चाल हमार वंस तुव झाडै । टकसारीके मत सब मांडै ॥
चौका तैसे करै बनायी । बहुत जीव चौरासी जायी ॥
आपा हंग अधिक होय ताही। नाद पुत्रसे झगर कराही ॥
होवे दुरमत बंस तुम्हारा । वचन बंस रोके वटपारा ॥

धर्मदासवचन ।

अबतो संशय भयो अधिकाई । निश्चय वचनकहहु मोहिसाईं ॥
प्रथमै आप वचन अस भाखा। निजरच्छा महँबयालिसराखा ॥
अब कहहु काल वश परि हैं । दोइबातकिहि विधिनिस्तरिहैं ॥

नादवंशकी बडाई । कबीरवचन ।

धरमदास तुम चेतहु भाई । बचन बंश कह देहु बुझाई ॥
जब जब काल झपाटा लाई । तब तब हम होब सहाई ॥
नाद अंस तबहिं प्रगटायब। भरम तोडिजगभक्तिदिढायब ॥
नाद पुत्र सो अंश हमारा । तिनते होय पन्थउजियारा ॥

वचन वंश तो होय सचेता । विन्द तुम्हार न माने हेता ॥
वचन वंश नाद संग चेते । मेटैं काल घात सब तेते ॥
विन्द तुम्हार न मानै ताही । आया वंश न शब्द समाही ॥
शब्दकी चाल नाद कहँ होई । विन्द तुम्हारा जाय विगोई ॥
विन्दतेहोय न नाद उजागर । परखिके देखहु धर्मनि नागर ॥
चारहु युग देखहु समवादा । पन्थ उजागर कीन्हों नादा ॥
कहँनिरगुण कहँ सरगुनभाई । नाम विना नहिं चल पन्थाई ॥
धर्मनि नाद पुत्र तुममोरा । ताते दीन्ह मुक्तिका डोरा ॥
याहीविधि हमब्यालिसतारैं । जबै वह गिरे तबै उबारैं ॥
और बंस जो नाह सम्हारे । आप तरे औ जीवहिं तारे ॥
कहां नाद कहँ विन्दुरे भाई । नाम भक्ति विनु लोकनजाई ॥
गुरुते अधिक काहु नहिं पेखै । सबते अधिक गुरूकहँ लेखै ॥
सबते श्रेष्ठ गुरू कहँ मानै । गुरू सिखापन सतकै जानै ॥
बिन्द तुम्हार करै असरारा । बिन गुरु चहै होन भव पारा ॥
निगुरा होइ जगत समुझावे । आप बुडै औ जगत बुडावे ॥
नाता जानि करै अधिकाई । वंसहि काल ग्रासै आई ॥
जब जब नातगोत अरुझावें । वचन वंस धोखा तब पावें ॥
तबहीं काल गरासै आई । नाना रूप फिरै जग लाई ॥
तबहिं गोहार नादमम आवै । देखत कालतुरत भगि जावै ॥
ताते धरमनि देहु चिताई । वचनवंश बहुविधिसमझाई ॥
नादवंस संग प्रीति निबाहे । काल धोखते बचन जु चाहे ॥
नाद बंसकी छोडै आसा । ताते विन्द जाय यम फांसा ॥
बहु विधि दूतलगावै बाजी । देखैं जीव होय बहु राजी ॥
ते तो जाय काल मुखपरिहैं । नाद वंश जो हित नहिंधरिहैं ॥

तातै तोहि कहौं समझायी। सबहीं कहँ तुमदेहु चितायी॥
नाद बंशकहँ जोजिव जाना। वचन बंस चीन्हे सहिदाना॥
ताकहँ यम नहिं रोके आई। सत्य शब्द जिन चीन्हा भाई॥
धरमदास मैं कहौं बुझाई। बचन हमार गहो चितलाई॥
जीवन कहँ तुमकहिहो जाई। वचन बंस जग तारन भाई॥
बचन बंस वह नाद न छाँडै। सदा प्रीति नाद संग मांडै॥
विन्द वंस कहँ पच्छ न करई। पच्छ करै तो दुखमहँ परई॥
बहुत विधि मैं दीन्ह चिताई। चेतकरै तो दुख नहिं पाई॥
विन्द तुम्हारनाद संग ताहीं। देखत दूत मनहिं पछताहीं॥
यही उपाय सुख होय बहूता। वचन नादविन्दलगै न दूता॥

धर्मदासवचन।

धर्मदास उठि विनती लाये। अब प्रभु मोहि कहहु बुझाये॥
नाद महातम एसो राखा। वचनवंश अधीन करिभाखा॥
तब कारन कौन कहोमोहि साई। वचन वंशकाहे निरमाई॥
नादे वंस जगत चेतै हैं। वचन वंस कामे कब ऐहैं॥

कबीरवचन।

सुनतवचनसतगुरुविहँसाये। धर्मदासकहँयहिविधि समझाये॥
गर्वित नादबचन नहिंमानै। तातै विन्द हम निरनय ठानै॥
बिंद एक नाद बहुताई। बिंद मिले सो विंद कहाई॥
वचन बंस हैं पुरुषके अंसा। तिनके सनद छूटे जग हंसा॥
नाद बिन्दु युगबन्धजब होई। तबहीं काल रहै मुखगोई॥
प्रथमै जसहम तुमहिंबताना। नाद विंद कर योग दिखाना॥
विना नाद नहिं विंद पसारा। विना विंद नहिं नाद उबारा॥
कलियुग काठ कठिन है भाई। अहंरूप धरि सबको खाई॥

नादे अहं त्याग कर होई। बिंदे अहं विंद संजोई ॥
याते अंकुश पुरुष निरमाया। नाद विन्द दोउ रूपबनाया ॥
छाडि अहं भजि हैं सतरूपा। सो होइहैं हंस सरूपा ॥
नाद विन्द कोई हो भाई। अहं भाव नहिं नीकि बताई ॥
अहं करै सो भवमें डूबे। काल फांस पडिहै सो खूबे ॥
अहंभाव जब वंसहि आवे। नादे विन्द भेद पडि जावे ॥
बंस विरोध चलै पुनि आगे। काल दगा सब पंथहिं लागे ॥

धर्मदासवचन।

साहब विनती सुनो हमारी। तुम्हरी दया जीव निस्तारी ॥
नाद विन्द कहँ रूप लखाया। तिनके तरनको भेद बताया ॥
सकल जीव तुम्हलोकहिंजाई। दास नरायण काह कराई ॥
मोर पुत्र जग माहिं कहावे। ताते चिन्त मोर मन आवे ॥
भवसागरके जिव सब तरिहैं। दास नरायणकालमुखपरिहैं ॥
यह तो भली होइ नहिं बाता। सुनु विनती सुखसागर दाता ॥
ताकी मुक्ति करो तुम स्वामी। यहि विनतीमोर अन्तरयामी ॥

कबीरवचन।

बार बार धर्मनि समुझावा। तुम्हरे हृदय प्रतीत न आवा ॥
चौदह यम तो लोक सिधावें। जीवन फन्द कहो किन लावें ॥
अब हमचीन्ह्यो तुम्हरो ज्ञाना। जानि बूझितुमभए अजाना ॥
पुरुष आज्ञा मेटन लागे। विसर्‍यो ज्ञान मोह मद जागे ॥
मोह तिमिर जब हिरदे छावे। बिसर ज्ञान तब काज नसावे ॥
विन परतीत भक्ति नहिं होई। विनु भक्ति जिव तरै न कोई ॥
बहुरी काल फांस तोहि लागा। पुत्रमोह तव हिरदय जागा ॥
प्रतच्छ देखि सबे तुम लीना। दास नरायन काल अधीना ॥

ताहूपर तुम पुनि हठ कीना । मोरो वचन तुमएकु न चीन्हा ॥
धर्मराय जो मोसन कहिया । सोऊ ध्यान तुव हृदयनरहिया ॥
मोर परतीत तुम्हैं नहिं आवे । गुरु परतीत जगत कस लावे ॥
आया छोडिमिले गुरु आई । सत सीढीपर चढे सुभाई ॥
आया पकडे मोह मद जागे । भक्ति ज्ञान सब तजैं अभागे ॥
पुरुष अंश तुम जगमें आये । जीव चेतावन कार उठाये ॥
तुम्हहिं प्रतीतगुरुकर त्यागो । देखत दृष्टि मोह जग पागो ॥
और जीव कर कौन ठिकाना । यह तो अहै काल सहिदाना ॥
जसतुमकरहु सुनहु धर्मदासा । तस तुव वंस करै परगासा ॥
मोह आग सदा सो जरि हैं । बंस विरोध याहिते परि हैं ॥
सुत बित नाम नारि परिवारा।कुलअभिमान सबकालपसारा ॥
इनमें तब परिवार भुलैहैं । सत्य नामको राह न पैहैं ॥
देखा देखी जीव फँसै हैं । देखत दूत मगन है जैहैं ॥
तबहिं दूत प्रबल ह्वै जैहैं । धरि जीवन कहँ नरक पटैहैं ॥
काल फांस जब जीव कसावे । काममोह मद लोभ भुलावे ॥
गुरु परतीत तेहि नहिं रहई । सत्य नाम सुनत जिव दहई ॥
जाके घट सतनाम समाना । ताकर कहौ सुनो सहिदाना ॥
काल बान तेहि लागे नाहीं । काम क्रोध मद लोभ न ताही ॥
मोह तृष्णा दुरआशनिवारै । सतगुरु वचन सदाचित धारै ॥

छंद ।

जस भुवंगम मणि जुगावेअस शिष गुरुआज्ञागहे ॥
सुत नारिसब बिसरायविषया हंसहोय सतपद लहे ॥
गुरु वचन अटल अमान धर्मनि सहै विरलाशूरहो ॥
हंसहो सतपुर चले तेहिजीवन मुक्तिनदूरहो ॥८९॥

सोरठा-गुरु पद कीजे नेह, कर्म भर्म जंजाल तज ॥
निज तन जाने खेह, गुरु मुख शब्द विश्वासदृढ९३

धर्मदासवचन।

सुनत वचन धर्मदास सकाने। मनहीं माहि बहुत पछताने॥
धाइ गिरे सतगुरुके पाई। हौ अचेत प्रभु होहु सहाई॥
चूक हमारी बकसहु स्वामी। विनती मानहु अन्तरयामी॥
हम अज्ञान शब्द तुम टारा। विनय कीन्ह हम बारम्बारा॥
अब मैं चरण तुम्हारे गहऊं। जो संततिकी विनती करऊं॥
पिता जानि बालक इठलावे। गुण औगुण चित ताहि न आवे॥
कोटिक औगुण बालक करई। मात पिता हृदये नहिं धरई॥
पतित उधारण नाम तुम्हारा। औगुण मोर न करहु विचारा॥

कबीरवचन।

धर्मदास तुम पुरुषके अंशा। तजहु दास नारायण वंशा॥
हम तुम धर्मनि दूजा नाहीं। परखहु शब्द देखिहियमाहीं॥
तुम तो जीव काज जग आऊ। भौसागरमहँ पथ चलाऊ॥

धर्मदासवचन।

हे प्रभु तुम सुखसागर दाता। मुझ किंकरको करयोसनाथा॥
जबलग हम तुमहीं नहिं चीन्हा। तब लग मता काल हर लीन्हा
जबते तुम आपन कर जाना। तबते मोहि भयो दृढ ज्ञाना॥
अबनहिंदुतियामोहिसमायी। निश्चय गहों चरण तुव धाई॥
तुमतजिमोहिआनकीआशा। तो मुहि होय नरकमहँबासा॥

सतगुरुवचन।

धर्मदास धन मो कहँ चीन्हों। वचन हमार पुत्र तजि दीन्हों॥
जबशिषहृदयमुकुरमलनाहीं। गुरु स्वरूप तबही दरसाहीं॥
जब सिखनिजहियगुरुपदराखे। मेटैसबहिं कालकी साखे॥

जौ लगि सातपांचकीआसा । तौलगि गुरु नहिंनिरखेदासा ॥
इक मत शिष्य गुरूपद लागे । छूटे मोह ज्ञान तब जागे ॥
दीपक ज्ञान हृदय जब आवे । मोह भर्म तब सबै नशावे ॥
उलटि आय सतगुरु कहँ हेरा । बुन्द सिन्धुकाभयोनिवेरा ॥
सिन्धुहि बुन्द समाना जाई । कहैं कबीर मिटी दुचिताई ॥
धर्मनि यह गुरुपद परतापा । गुरुपद गहे तजे भ्रम दापा ॥
यहै गहे सब दुःख नशायी । बिनगुरुशिष्यनिरासेजायी ॥
अब मैं तोहीं कहौं बुझाई । सुनि संशय तब दूर पराई ॥
दास नरायन तोर न मनि है। वह तो आपन मतनिजतनि है॥
ताकर पन्थ चले संसारा । यामहँ नहिं कछुसोचविचारा॥
अस हमार जो पंथ चलाई । ताहि देखि सो रार बढाई ॥
ताकर चढीदेखिनहिंसहिहैं । आपन बढी वंश मत कहिहैं॥
पंथ चलाय हंग बहु आनै । आपन बडो सबछोट बखानै॥
साधु संत सो कर अभिमाने । नाद पत्र कहँ नहिं वह माने॥
जबलग ऐसी चाल चलावे । तबलगतो नहिं सत पथपावे॥
वचन वंस औ नाद कडिहारा। इनसंग मिल तो होयउबारा॥
छोडि हंकार मान बडाई । सत्य शब्द जब हृदय धराई॥
वचन बंशको अंस कहे हैं । तबै धर्मनि मोर मन भैहैं ॥
जात तजै और मोह न आवै। सोई अस वंस कहलावै ॥
कुलकी दशा जानकर खोवे । निश्चय अंश वंश वह होवे ॥
तब तेही हम लेब उबारी । निश्चय कहहुँनहिं सन्तलबारी॥
यह विश्वास धर्मनि मनराखो। विन विसवासवचन नहिं भाखो
विन विश्वास जीव नहिं तरई। गुरु परतीत विनु नरकहिं वरई॥
गुरु सम और न दानी भाई । गुरु चरनन चित राखु समाई॥

छन्द।

दानी और न दूसरा जग, गुरु मुक्तिदानीजानिया ॥
अधम चाल छुडायके गुरु, ज्ञान अंग लखाइया ॥
हंस भक्ति दृढावही दे, अंक वीरा नाम हो ॥
दुष्ट मित्र चिन्हायके, पहुँचावहीं निज ठाम हो ९०

सोरठा–गुरुपुरुषनहिं आन, निश्चयके जो मानहीं
ताहि मिलै सहिदान, मिटैं काल कलेशसब ९४

सगुण भाव पेखु धर्मदासा । कस दृढ गह प्रतीत विश्वासा॥
कर्मी जीवन देखु विचारी । कस दृढ गहे प्रतीत सम्हारी॥
आपहि लै आवै नरमाटी । कर ताकहँ मूरत गढठाटी ॥
तापर अच्छत पुहुप चढावे । प्रेम प्रतीति ध्यान मन लावे॥
करता कर थापे पुनि ताही । भंग प्रतीति होय नहिं जाही॥
जस धोखा महँ प्रेम समावे । सोइ प्रेम सजीव बन आवे ॥
सो जिव होय अमोल अपारा।साहिबको ह्वै हंस पियारा ॥
उन जीवनको प्रेम बखानो । कैसे दृढ होय धोख लपटानो॥
गुरु नाम हम आप कहाया । गुरु पुरुष नहिं भिन्न बताया॥
अस जिव काल वस ह्वै रहई । दृढ प्रतीत कै गुरु नहिं गहई॥
सब मूरति परतीत न आवै । शून्य ध्यान धोखे मन लावै॥
जो निश्चय ह्वै गुरु प्रन धरहीं । मुक्ति होय टारे नहिं टरहीं ॥
ऐसे कर जो विश्वास दृढावै।गुरु तजि चित्त अनत नहिंलावै॥
यहि रहनीको हंस अमोला । प्रेम रंग जो रंगे चोला ॥
प्रेम जानिदै अमृत गिरागुरु । अंचवत होत खानि दुरमतदुरु॥
धर्मदास हिय देखु विचारी । गुरु प्रतीत दिढ गहो सम्हारी॥

छंद।

अस कै प्रतीत दृढाय गुरु पद, नेह अस्थिरलाइये॥
गुरु ज्ञानदीपक बारनिजउर मोहतिमिरनशाइये॥
गुरुपद पराग प्रताप ते अघ, पुंज निश्चय जावई॥
औरमध्ययुक्तिनतरनकी,विश्वास शब्द समावई९१
सो०—यह भव अगम अथाह, नाव प्रेमदृढकेगहे॥
लहे कृपा गुरु थाह, गुरु गिरा कडिहार मिले९५॥

गुरुशिष्यकी रहनी। धर्मदासवचन।

धर्मदास विनती अनुसारे। तुम साहब हम दास तुम्हारे॥
चूक हमार बकसि प्रभु दीना।शरण आपनी धरिमोहिलीना॥
अब जो कछु पूँछौं गुरुराया। सो कहिये करिकै अब दाया॥
गुरु शिषकी रहनी है जैसी। सो समुझाय कहो गुरु तैसी॥

कबीरवचन।

सतगुरु कहैं गुरू व्रतधारी। अगुन सगुन बिचगुरु आधारी॥
गुरू बिना नहिं होय अचारा। गुरुविना नहिं होय भवपारा॥
शिष्य सीप गुरु स्वाती जानो। गुरू पारसशिषलोह समानो॥
गुरु मलयागिर शिष्य भुजंगा। गुरु परसिशीतल होय अंगा॥
गुरु समुद्र है शिष्य तरंगा। गुरु दीपक है शिष्य पतंगा॥
शिष्य चकोरगुरुकोशसिजानो।गुरुपदरविकमलशिषविकसानो
यहि स्नेह शिष निश्चय लहई। गुरुपद परस दरश हिय गहई॥
जब शिष याविधि ध्यान विशेखा।सोई शिष्यगुरू समलेखा॥
गुरू गुरुनमें भेद विचारा। गुरु गुरु कहै सकल संसारा॥
गुरु सोई जिन शब्द लखाया। आवागमन रहित दिखलाया॥
गुरू सजीवन शब्द लखावे। जाके बल हंसा घर जावे॥
वा गुरु सों कछु अन्तर नाहीं।गुरु औ शिष्य मता एकआही॥

छंद।

मन कर्म नाना भावना यह, जगतसब लपटानहो॥
जीवयम भ्रमजाल डारेउ; उलटनिजनहिंजान हो
गुरु बहुत हैं संसारमें सब, फँदे कृत्रिम जाल हो ॥
सतगुरुविनानहिंभ्रममिटे, बडा प्रबल काल कराल हो॥
सोरठा–सतगुरुकी बलिहार, अजर सदशा जोकह॥
ताहि मिले होयन्यार; सतपुरुष जिव मेटई ॥९६॥

निसदिन सुरत गुरू सो लावे। साधु संतके चितहि समावे ॥
जिनपर दाया सतगुरु करै। तिनका फांस करम सब जरै ॥
करनी कर सुरति लगावै। ताको लोक सतगुरु पहुँचावै॥
सेवाकरि मन रखै न आसा। ताका सतगुरु काटै फांसा ॥
गुरुचरणनजो राखे ध्याना। अमर लोक वह करत पयाना॥
योगी योग साधना करई। विना गुरू सो भव नहिं तरई ॥
शिष्य जो गुरु आज्ञाधारी। गुरुकी कृपा होय भवपारी ॥
गुरु भगता जो जिव आही। साधु गुरू नहिं अन्तर ताही ॥
सांचा गुरू ताहि कर माने। साधु गुरू नहिं अन्तर आने॥
जो स्वारथ पागे संसारी। नहिं गुरुशिष्य न साधु अचारी॥
तिनकोकालफन्द तुमजानो। दूत अंश काल कर मानो ॥
तिनतें होय जीवकी हानी। यह तो अहै धर्म सहिदानी ॥
जोई गुरू प्रेम गति जाने। सत्य शब्दको राह पिछाने ॥
परम पुरुषकी भक्तिदिढावे। सुरति निरति कर तहां पहुँचावे॥
तासों प्रीति करै मन लाई। छांडै दुरमति औ चतुराई ॥
तबहीं निहसंशय घर पावै। भवतारिके जग बहुरि न आवै ॥

छंद ।

सत नाम अमीअमोल अविचल, अंकबीरापावई ॥
तजि काग चाल मरालमतिगहि, गुरुचरणलौलावई
और पंथ कुमारग सकल बहु, सोनहींमनलावई ॥
गुरु चरण प्रीतिसुपंथधर्मनि, हंसलोकसिधावई ९३
सोरठा-गुरुपद कीजे नेह, कर्म भर्मजंजाल तजि ॥
निज तन जाने खेह, गुरु मुखशब्दप्रतीतिकरि ९७

धर्मदासवचन ।

धर्मदास हियबिच अतिहरषे । गदगद गिरा नयन जल बरषे॥
ममहियतिमिरआहिअंधियारा । मिहरपतंगकीन्हउजियारा ॥
पुनिधीरजधरिबोलविचारी । केहिविधिकरौंप्रभुस्तुतितुम्हारी ॥
अब गुरु विनती सुनो हमारी । जीवननिरनय कहो विचारी ॥
कौन जीव कहँ देहो पाना । समरथ कहोवचन सहिदाना ॥

अधिकारी जीवके लक्षण ।

सद्गुरुवचन ।

धर्मदास निःसंशय रहहू । मुक्ति संदेशा जीवनसे कहहू ॥
देखहु जाहि दीन लौ लीना । भक्ति मुक्ति कह बहुत अधीना॥
दायाशील क्षमा चित जाही । धर्मनि नाम पान दो ताही ॥
तासन पुरुष सँदेशाकहिहो । निसदिननामध्यान दृढगहिहो॥
दयाहीन जो शब्द नहिं माने । काल दिशा हो बाद बखाने॥
'चञ्चल दृष्टि होय पुनि जाही । सत्य शब्द न ताहि समाही॥
चिबुक बाहर दशन दिखाये । जानहु दूत भेष धरि आये, ॥
मध्यनेत्रजिहितिल अनुमाना । निश्चयकालरूप तिहि जाना॥

१ यह दोनों चौपाई किसी भी पुराने ग्रन्थमें नहीं हैं ॥

ओछा सीस दीर्घजिहि काया । ताके त्हदय कपट रह छाया ॥
तेहि जनिदेहु पुरुष सहिदानी । यह जिव करे पंथकी हानी ॥

काया कमल विचार ।

धर्मदासवचन ।

हे प्रभुजन्मसुफलमम कीन्हा । यमसोंछोरिअपनकरलीन्हा ॥
जो सहस्र रसना मुख होई । तो तुव गुण वरणे नहिं कोई ॥
हे प्रभु हम बड भागी आहीं । निज सम भाग कहों मैं काहीं ॥
सोइ जीव बड भागी होई । जासु त्हदय तव नाम समोई ॥
अबइकविनती सुनो हमारी । यहितन निर्णय कहो विचारी ॥
कौन देव कहु कहवाँ रहई । कहवाँ रहि कारज सो करई ॥
नाडी रोम रुधिर कत अहई । कौने मारग स्वासा बहई ॥
आँतपित्तफेफसाझोरी झोरी । साहब कहहु विचार बहोरी ॥
जाहि ठाम है जासु अस्थाना । साहब बरनि कहौ सहिदाना ॥
कौन कमलकेताजपपरगासा । रात दिवसलगकेतिकस्वासा ॥
कहवाँते शब्द उठि आवे । कहो कहवाँ वह जाइ समावे ॥
कोइ जीवझिलमिल कहँदेखा । सो साहिब मोहि कहो विवेखा
कौन देवके दरशन पाई । तिहि अस्थान कहो समुझाई ॥

सद्गुरुवचन ।

धर्मनि सुनहु शरीर विचारा । पुरुष नाम कायाते न्यारा ॥
प्रथमहि मूल कमल दल चारी । तहँरहु देव गणेश पसारी ॥
विद्या गुनदायक तेहि कहिये । षटशतअजपा ध्यानसोलहिये
मूल कमलके उर्द्ध अखारा । षट पखुरीको कमल बिचारा
ब्रह्मा सावित्री तहँ सुर राजे । षटसहस्र अजपा तहँ गाजे ॥
पदुम अष्ट दल नाभि अस्थाना । हरि लक्ष्मीतहँबसहिंप्रधाना ॥
जाय जहाँ षट सहस परमाना । गुरुगम ते लखिपरइठिकाना ॥

ताऊपरपंकज लखुदलद्वादस । रुद्र पारवतीताहि कमलबस ॥
षट सहस्र अजपा तहँ होई । गुरुगम ज्ञान ते देखु बिलोई ॥
षोडस पत्र कमल जिवरहई । सहस एक अजपा तहँ चहई ॥
भँवर गुफादलदोहु परमाना । तहँवा मन राजाको थाना ॥
सहसएक अजपातेहि ठाई । धरमदास परखो चित लाई ॥
सुरतिकमलसतगुरुके बासा । तहवाँएतिक अजपापरकासा ॥
एक सहस षटशतऔबीसा । परखहु धर्मनि हंसन ईसा ॥
दोइदलऊर्ध्वसुन्यअस्थाना । झिलमिलज्योतिनिरंजनजाना ॥

मनका व्यवहार ।

धर्मनि यह मनको व्यवहारा । गुरुगमते परखो मत सारा ॥
मनुआंशून्य ज्योतिदिखलावे। नाना भर्म मनहि उपजावे ॥
निराकार मन उपजा भाई । मनकी मांड तिहू पुर छाई ॥
अनेक ठांव जिव माथ नवावे । आप न चीन्हे धोखा धावे ॥
यह सब देखु निरंजन आसा । सत्य नामबिन मिटेनफांसा ॥
जैसे नट मर्कट दुख देई । नाना नाच नचावन लेई ॥
यहिविधियहमनजीव नचावे । कर्म भर्म भव फंद दिढावे ॥
सत्य शब्द मन देह उछेदी । मन चीन्हे कोइ बिरलेभेदी ॥
पुरुष सँदेस सुनत मन दहई । आपनि दिशा जीव ले बहई ॥
सुनु धर्मनि मनके व्यवहारा । मनको चीन्हि गहे पदसारा ॥
या तन भीतर और न कोई । मन अरु जीव रहे घर दोई ॥
पांच पचीस तीन मन झेला । ये सब आहि निरंजन चेला ॥
पुरुष अंशजिवआनसमाना । सुधि भूली निज घर सहिदाना
इन सबमिलिकेजीवहिघेरा । बिनुपरिचय जिव यमको चेरा
भर्मवशि जिव आपन जाना । जैसे सुवना नलनी फँदाना ॥

जिमि केहरि छाया जल देखे। निज छाया दुतिया वह लेखे ॥
धाय परे जल प्राण गँवावे । अस जिव धोखा चीन्ह न पावे॥
कांच महल जिमि भूँके स्वाना। निज अकारदुतिया करजाना ॥
दुतिया अवाज उठे तहँ भाई। भूकत स्वान देहु लखि धाई॥
ऐसे यम जिव धोख लगाई । ग्रासे काल तबै पछताई ॥
सतगुरु शब्द प्रीति नहिंकरई। ताते जीव नष्ट सब परई ॥
किरतम नाम निरंजन साखा।आदिनामसतगुरुअभिलाखा॥
सतगुरु चरण प्रतीत न करई। सतगुरु मिल निज घर संचरई॥
धर्मदास जिव भये विगाना । धोखे सुधा गरल लपटाना ॥
अस कै फन्द रच्यो धर्मराई । धोखावसि जिव परे भुलाई ॥
और सुनो मन कर्म पसारा । चीन्हिदुष्ट जिव होय नियारा॥

छंद ।

चीन्ह है रहे भिन्न धर्मनि, शब्द मम दीपक लहे॥
यहभिन्न भावदिखाय तोकहँ, देखजिव यमनागहे॥
जौलों गढपति जगे नाहीं,संधि पावत तस्करा ॥
रहत गाफिल भर्मके बशि, तहाँ तस्कर संचरा९४
सोरठा–जाग्रत कला अनूप,ताहि कालपावे नहीं॥
भर्म तिमिर अँधकूप,छल यमरा जीवनग्रसे ॥९८॥

पाप पुण्यका विचार ।

मनको अंग सुनो जन सूरा । चोर साहु परखो गुरु पूरा ॥
मनही आहि काल कराला। जीव नचावे करे बिहाला॥
सुन्दर नारि दृष्टि जब आवे। मन उमगे तन काम सतावे ॥
भये जोर मन ले तेहि धावे। ज्ञान हीन जिव भटका खावे॥
नारि भोग इन्द्री रस लीन्हा। ताकर पाप जीव सिर दीन्हा॥

द्रव्य पराइ देख मन हरषा । कहे लेब अस ब्यापेउ तिरषा ॥
द्रव्य पराइ आन सो आने । ताके पाप जीव लै साने ॥
कर्म कमावे या मन बोरा । सासत सहे जीव गति भोरा ॥
पर निंदा पर द्रव्य गिरासी । सो सब देखहु मनकर फांसी ॥
संत द्रोह अरु गुरुकी निन्दा । यह मन कर्म काल मतिफंदा ॥
ग्रही होय पर नारिन जोवै । यह मन अंध कर्मविष बोवै ॥
जीव घात मन उमँग करावे । तासु पाप जिव नर्क भुगावे ॥
तीरथ व्रत अरु देवी देवा । यह मन धोख लगावे सेवा ॥
दाग द्वार का मनहिं दिवावे । दाग दिवाय मनहिं बिगरावे ॥
एक जनम राजाको होई । बहुरि नरकमें भुगते सोई ॥
बहुरि होय सांडकर औतारा । बहु गाइनको होय भरतारा ॥
कर्म योग है मनको फंदा । होय निहकर्म मिटै दुख द्वंदा ॥

छन्द ।

सुनो धर्मनि मन भावना कहँलौं कहों निरबारके ॥
त्रय देव तेतिस कोटि फन्दे शेष सुर रहे हारके ॥
सतगुरुविना कोइ लखनपावे पडे कृत्रिम जालहो ॥
विरल संत विवेककर तिनचीन्हि छोडयोकालहो ९८

सो०-सतगुरुके विश्वास, जन्म मरण भय नाशई ॥
धर्मनि सो निज दास, सत्य नाम जो दृढ गहै ९९ ॥

धर्म चरित्र सुनो धर्मदासा । छल बुधिकर जीवन तिनफांसा ॥
धरि औतार कथा तिन गीता । अंध जीव कोइ गम्यनकीता ॥
अर्जुन सेवक अति लौ लीना । तासों ज्ञान कह्यो सब भीना ॥
ज्ञान प्रवृत्ति निवृत्ति सुनावा । तज निवृत्ति परवृत्ति दृढावा ॥
दया क्षमा प्रथमै तिन भाषा । ज्ञान विज्ञान कर्मअभिलाषा ॥

अर्जुन सत्य भक्ति लवलीना। कृष्णदेवसों बहुत अधीना ॥
प्रथम कृष्णदीन्हींतेहिआसा। पीछे दीन्ह नर्कमें वासा ॥
ज्ञान योग तजिकर्मदृढावा। कर्मवशि अर्जुन दुख पावा॥
मीठ दिखाय दियो विषपाछे। जिवबटपार संत छबिकाछे ॥

छंद।

कहँलों कहों छलबुद्धियमकेसंतकोइकोइपरखिहै ॥
ज्ञान मारग दृढ गहे तब सत्य मारग सूझिहै ॥
चीन्हि हैं यम छलमतातबचीन्हिन्यारा वो रहे ॥
सतगुरुशरणयमत्रासनाशेअटलसुख आनँदलहे ॥
सोरठा—हंसराजधर्मदास,तुम सतगुरु महिमालहे ॥
करहु पंथपरकाश,अत्रसँदेशातोहिदियो १००

मुक्तिमारग-पंथ सहिदानी वर्णन।

धर्मदासवचन।

हे प्रभु तुमसतपुरुष दयाला। वचन तुम्हारा अमित रसाला॥
मनकी रहन जानिहमपावा। धन सतगुरु तुमआनजगावा ॥
अब भाषो प्रभु आपन डोरी। केहिरहनी यमतिनका तोरी ॥

सद्गुरुवचन।

धर्मदास सुनु पुरुष प्रभाऊ। पुरुष डोरितोहिअबहिचिन्हाऊ
पुरुषसक्तिजब आय समाई। तबनहि रोके काल कसाई ॥
पुरुषसक्ति सुतषोडश आहीं। सक्तिसंग जिवलोकहि जाहीं॥
बिनासक्ति नहिं पंथ चलाई। सक्तिहीन जिव भौ अरुझाई ॥
ज्ञान विवेक सत्य संतोषा। प्रेम भाव धीरज निरधोषा ॥
दयाक्षमारुशील निःकरमा। त्यागबैराग शांतिनिजधरमा॥

करुणाकरि निजजीवउबारै । मित्रसमान सबको चित धारै ॥
इनमिलिलहेलोकविश्रामा । चले पंथ निरखिजेहि धामा ॥
गुरु सेवा गुरुपद परतीती । जेहि उरबसे चले जम जीती॥
आतमपूजा संत समागम । महिमा संत कहइ निगमागम॥
गुरु समसंत भक्तिऔराधे । ममता मोह क्रोध गुण साधे ॥
अमृत वृक्ष पुरुष सतनामा । पुरुष सखासतअविचलधामा॥
यहसबडोरी पुरुषको आही । सत्य नामगहिसत्यपुरजाही ॥
चक्षु हीन घर जाय न प्रानी । यहसब कहेउ पंथ सहिदानी॥
पुरुष नाम चक्षु परवाना । लहैजीवतब जायँ ठिकाना ॥
दिढपरतीति गहे गुरु चरना । मिटे तासु जनम औ मरना ॥
धर्मदास सुनु शब्द सँदेशा । घट परचेका कहुँ उपदेशा ॥
अबपुनिसुनहुशरीर विचारा । एक नाम गहि धरहु करारा ॥
सबैकुम्भतनरुधिर सँवारा । कोटरोम तन पृथ्वी सुधारा ॥
नाडी बहत्तर है परधाना । नौ महँ तीन प्रधान सुजाना ॥
त्रय नाडी महँ एक अनूपा । सो ले रहे गहे सतरूपा ॥
जेतिक पत्र पदुमजो आही । ऊठा शब्द प्रगट गुण ताही ॥
तहँवाते पुनि शब्द उठायी । शून्य माहि सो जायसमायी॥
आंत इकईस हाथ परमाना । सवा हाथ झोरी अनुमाना ॥
सवा हाथ नभ फेरी कहिये । खिरकी सात गुफामों लहिये॥

छंद ।

पित्त अंगुल तीन जानो पांचअंगुलादल कही ॥
सात अंगुल फेफसा है सिंधु सात तहाँ रही ॥
पवन धार निवार तनसो साधु योगी गम लहे ॥
यहिकर्मयोगक्रियेरहितनाही भगति बिनुजोइनबहे ९७

सो०—ज्ञान योग सुखराशि, नाम लहे निजघर चले
अरि परबलको नाशि, जीवन मुकता होय रहै१०१

पंथकी रहनी ।

धर्मदासवचन ।

हे प्रभु तुम सतपुरुष दयाला । वचन तुम्हार अमान रिसाला॥
अब बरनोप्रभु पंथनिजदासा ।विरक्तगिरही कहैरहन परगासा॥
कौन रहनि वैराग कमावे । कौन रहनि गेही गुन गावे ॥

सद्गुरुवचन ।

धर्मदास सुन शब्द सँदेशा । जीवन कहौ मुक्ति उपदेशा ॥
वैरागी वैराग दिढैहो । गेही भाव भक्ति समझैहो ॥

वैरागी विरक्तलक्षण ।

वैरागी अस चाल बताऊ । तजे अखज तब हंस कहाऊ ॥
प्रेम भक्ति आनें उरमाहीं । द्रोह घात दिग चितवे नाहीं ॥
जीव दया राखै हिय माहीं । मन वच कर्म घात कोउ नाहीं॥
लेवे पान मुक्तिकी छापा । जाते मिटे कर्म भ्रम आपा ॥
हंस दशा धरि पंथ चलावे । श्रवणी कंठी तिलक लगावे ॥
रूखा फीका करे अहारा । निस दिन सुमिरे नाम हमारा॥
औ पुनि लेह तुम्हारो नामा । पठवों ताहि अमरपुर धामा ॥
कर्म भर्म सब देइ बहायी । सार शब्दमें रहे समायी ॥
नारि न परसे विन्द न खोवे । क्रोध कपट सब दिलसे धोवे॥
नरक खान नारी कहँ त्यागे । इक चित होय शब्द गुरुलागे॥
क्रोध कपट सब देइ बहाई । क्षमागंगमें पैठि नहाई ॥
विहँसतबदनभजनको आगर । शीतल दशा प्रेम सुखसागर॥
रहै अजांच न जांचे काहू । का परजा का राजा साहू ॥
पच्छिम लहर जगावे जानी । अजपा जापभजन धुन ठानी॥

रहिता रहे वहै नहिं कबहीं । सो वैरागी पावै हमहीं ॥
हमहिं मिलै हमहीं अस होई । दुबिधा भाव मिटावै सोई ॥
गुरु चरणनमें रहे समाई । तजि भ्रम और कपट चतुराई॥
गुरु आज्ञा जो निरखत रहई । ताकर खूट काल नहिं गहई॥
गुरु प्रतीति दृढके चित राखे । मोहि समान गुरू कहँ भाखे॥
गुरु सेवामें सब फल आवे । गुरु विमुख नर पार न पावे॥
जैसे चंद्र कमोदिनि रीती । गहे शिष्य अस गुरु परतीती॥
ऐसी रहनि रहे वैरागी । जेहि गुरू प्रीति सोइ अनुरागी॥

गृहीलक्षण ।

गेही भक्ति सुनहु धर्मदासा । जेहि लै गेही परै न फांसा ॥
काग दशा सब देइ बहाई । जीव दया दिल रखे समाई॥
मीन मांस मदनिकट न जाई । अंकुर भक्ष सो सदा कराई ॥
लेवे पान मुक्ति सहिदानी । जाते काल न रोकै आनी ॥
कंठी तिलक साधुको बाना । गुरुमुख शब्द प्रीति उरआना॥
प्रेम भाव संतनसों राखे । सेवा सत्य भक्ति चित भाखे॥
गुरु सेवा पर सर्वस वारे । सेवा भक्ति गुरूकी धारे ॥
सुमिरण जो गुरु देइ दृढाई । मन वच करमसों सुमरे भाई ॥

छंद ।

पुरुष डोरी सुनहु धर्मनि जाहि ते गेही तरे ॥
चक्षु बिन घर जाय नाहीं कौन विधि ताकर करे ॥
वंश अंश है चक्षु धर्मनि जीव सब चेतावहू ॥
बिश्वास कर ममवचनकोतब जरामरण नशावहू ९८

---

१ यहांसे अगले छन्दतक पुरानी प्रतियोंके विरुद्ध बहुत मिलावट है ।

सो०-शब्द गहे परतीत, पुरुषनामअहनिशिजपे ॥
चलेसो भवजलजीति,अंक नाम जिन पाइया१०२

आरतीमहातम ।

गेही भक्त आरती आने । प्रति अमावस आरति ठाने॥
अमावस आरति नहिं होई । ताहि भवन रह काल समोई॥
पाख दिवस नहिं होवे साजू । प्रति पूनो कर आरति काजू॥
पूनो पान लेइ धर्मदासा । पावे शिष्य होय सुख वासा॥
चन्द्र कला षोडश पुर आवे । ताहि समय परवाना पावे ॥
यथा शक्ति सेवा सहिदाना । हंसा पहुँचे लोक ठिकाना ॥

धर्मदासवचन ।

धर्मदास विनती अनुसारा । अस भाखो जिवहोयउबारा॥
कलऊ जीव रंक बहु होई । ताकर निर्णय भाषो सोई ॥
सकलो जीव तुम्हारे देवा । कैसे कहो करें सब सेवा ॥
सब जीवआहिपुरुषके अंशा । भाषहु वचनमिटेजिवसंशा ॥

सद्गुरुवचन ।

धर्मनि सुनो रंक परभाऊ । छठे मास आरति लौलाऊ ॥
छठे मास नहिं आरति भेवा । वर्ष माहिं गुरु चौका सेवा ॥
सम्वत माहि चूक जो जायी । तबै संत साकट ठहरायी ॥
सम्वत माहि आरती करई । ताकर जीव धोख ना परई ॥
नाम कबीर जपे लौ लाई । तुम्हरो नाम कहे गुहराई ॥
वरत अखंडित गुरुपद गहई । गुरुपद प्रीति दोइ निस्तरई ॥
ऐसी रहनि गेहि जो धरि हैं । गुरु प्रताप दोई निस्तरि हैं ॥
ऐसे धारण गेहि जो करई । गुरू प्रताप लोक संचरई ॥

छंद ।

वैरागिगेहिदोउकहँधर्मनिरहनिगहनि चितायहू ॥
निजनिजरहनीदोउतरिहैं शब्द अंग सुनायहू ॥
निपटअतिविकरालअगम अथाहभवसागर अहै ॥
नाम नौकागहेदृढकरि छोर¹ भवनिधि तब लहै ९९
सोरठा-केवटते कर प्रीति, जो भवपार उतारई ॥
चलसोभव जलजीति, जबसतगुरुकेवट मिले १०३

हंसलक्षण ।

जब लग तनमें हंस रहाई । निरखे शब्द पंथ चले भाई ॥
जैसे क्रूर खेत रह मांडी । जो भागे तो होवे भांडी ॥
संत खेत गुरु शब्द अमोला । यम तेहि गहेजीवजोडोला ॥
गुरू विमुख जिवकतहुँनबाचै । अगिनकुंडमहँ जरिबरिनाचै ॥
सासति होय अनेकन भाई । जनम जनम सो नर्कहि जाई॥
कोटि जन्म विषधर सो पावे । विष ज्वालासहिजन्मगमावे॥
विष्टामाहीं क्रिमितनु धरयी । कोटि जन्मलों नर्कहिं परयी॥
कहा कहों सासतिजिवकेरा । गुरुमुख शब्दगहोदिढ बेरा ॥
गुरु दयाल तो पुरुष दयाला । जेहि गुरुव्रतछुएनहिंकाला ॥
जीव कहो परमारथ जानी । जो गुरु भक्त ताहि नहिंहानी॥
कोटिक योग अराधे प्रानी । सतगुरु विना जीवकीहानी ॥
सतगुरु अगम गम्य बतलावे । जाकी गम्य वेद नहिं पावे ॥
वेद जाहि ते ताहि बखाने । सत्य पुरुषका मर्म न जाने ॥
कोइ इक हंस विवेकी होवे । सत्य शब्द जो गहे बिलोवे॥

---

१ किनारा ।

कोटि माहिं कोइसंतविवेकी। जो मम बानी गहे परेखी ॥
फंदे सबै निरंजन फंदा। उलटि न निज घर चीन्हे मंदा॥

कोयलका दृष्टान्त।

सुनो सुभाव कुइल सुत केरा। समुझि तासु गुण करोनिबेरा॥
कोइल चितचातुर मृदुवानी। वैरी तासु काग अघखानी॥
ताके गृह तिन अंडाधरिया। दुष्ट मित्र इक समचितकरिया॥
सखा जानि कागा तेहिपाला। जोगवे अंड काग बुधिकाला॥
पुष्ट भये अंडा बिहराना। कुछ दिन गत भो चक्षुसुजाना॥
पक्ष पुष्ट पुन ताकर भयेऊ। कोयल शब्द सुनावन लयेऊ॥
सुनत शब्दकोइल सुत जागा। निजकुल वचनताहिप्रियलागा॥
काग जायपुनि जबहिंचरावे। तब कोइल तिहि शब्द सुनावे॥
निजअंकुरकोइलसुतजहिया। वायस दिशाहिये नहिं रहिया॥
एक दिवसवायसदिखलायी।कोइल सुत उड चला परायी॥
निज बोली बोलतचलुबाला। धाये वायस विकल बिहाला॥
धावत थकित भई नहिं पाई। बहुरि मुरछित भवनफिरिआई
कोयलसुखमिलियापरिवारा। वायस काग मुरछि झख मारा

छंद।

निज बचनबोलतसुतचल तबधायमिलापरिवारही॥
धाय वायस विकल ह्वै भयोथकितजबनहिंपावही॥
काग मूर्छित भवन आयो मनहि मन पछतायके॥
कोइलसुत मिल्यो तातअपनेकागरह्योझखमारिके १००

सो०-जसकोयल सुतहोय, यहिविधिमोकहँजिवमिले
निज घर पहुँचे सोय, वंश इकोतर तारऊं॥ १०४॥

कोयल सुन जस शूरा होई । यहि विधि धाय मिलैमुहिंकोई
निज घर सुरति करैजोहंसा । तारों ताहि एकोत्तर बंसा ॥
काग गवनबुधिछाँडहु भाई । हंस दशा धरिलोकहि जाई ॥
बोले काग न काहू भावे । कोइल वचन सबै सुख पावे ॥
अस हंसा बोले विलछानी । प्रेम सुधा सम गहु गुरु बानी ॥
काहूकुटिलवचननहिंकहिये । शीतल दशा आप गहिरहिये ॥
जो कोइक्रोधअनलसमआवे । आप अम्बु है तपन बुझावे ॥
ज्ञानअज्ञानकीयहिसहिदानी । कुटिल कठोर कुमति अज्ञानी ॥
प्रेमभाव शीतल गुरु ज्ञानी । सत्यविवेक संतोष समानी ॥

ज्ञानीका लक्षण ।

ज्ञानी सोइ जो कुबुद्धि नशावे । मनका अग चीन्ह विसरावे ॥
ज्ञानी होय कहै कटुबानी । सो ज्ञानी अज्ञान बखानी ॥
शूर काछ काछे जो प्रानी । सन्मुख मरे सुयश तब जानी
तेहिविधिज्ञानीविचारमनआनी । ताकहँकहू ज्ञानसहिदानी ॥
मूरख हिये कर्म नहिं सूझे । सार शब्द नहिं गुरु कहँ बूझे ॥
चक्षु हीन पग विष्टा परई । हांसी तासु कोइ नहिं करई ॥
दृगन अछत पग परै कुठांई । ता कहँ दोष देइ नर आई ॥
धर्मदास अस ज्ञान अज्ञाना । परखे सत्य शब्द गुरु ध्याना ॥
सर्व मई है आप निवासा । कहीं गुप्त कहिं प्रगट प्रगासा ॥
सबसे नवनअंश निजजानी । गही रहै गुरुभक्ति निशानी ॥

छंद ।

रंग काचा कारणें प्रहलाद, कस दृढ है रह्यो ॥
तातेतेहि बहु कष्टदीन्हों, अडिग हो हरिगुणगह्यो ॥

अस धरनि धरि सतगुरु गहे तब हंस होय अमोल हो॥
अमर लोकनिवासपावे,अटल होयअडोलहो१०१

परमार्थवर्णन।

सोरठा-भर्म तजे यम जाल,सत्त नाम लौ लावई॥
चले संतकी चाल; परमारथ चित दे गहे॥ १०९॥

परम परमार्थी गऊका दृष्टान्त।

गऊ वृक्ष परमारथ खानी। गऊ चाल गुण परखहु ज्ञानी॥
आपन चरे तृण उद्याना। अँचवे जल दे क्षीर निदाना॥
तासु क्षीर घृत देव अघाहीं। गौ सुत परके पोषक आहीं॥
विष्ठा तासु काज नर आवे। नर अघ कर्मी जन्म गवावे॥
ठीका पुरे तब गौ तन नासा। नर राक्षस तन लेतेहि ग्रासा॥
चाम तासु तनअति सुखदाई। एतिक गुणइक गो तन भाई॥
गौ सम संत गहे यह बानी। तो नहिं कालकरै जिव हानी॥
नरतन लहि अस बुद्धी होई। सतगुरु मिले अमर ह्वै सोई॥
सुन धर्मनि परमारथ बानी। परमारथते होय न हानी॥
पद परमारथ संत अधारा। गुरुगम लेइ सो उतरे पारा॥
सत्य शब्दको परिचय पावे। परमारथ पद लोक सिधावे॥
सेवा करे बिसारे आपा। आपा थाप अधिक संतापा॥
यह नर अस चातुर बुधिमाना। गुन शुभ कर्म कहे हम ठाना॥
ऊँचक्रिया आपन सिर लीन्हा। औगुण करे कहे हरि कीन्हा॥
ताते होय शुभ कर्म विनाशा। धर्मदास पद गहो निराशा॥
आशा एक नामकी राखे। निज शुभ कर्म प्रगटनहिंभाखे॥
गुरुपद रहे सदा लौ लीना। जैसे जलहिन बिहरत मीना॥
गुरुके शब्द सदा लौ लावे। सत्य नाम निसदिन गुण गावे॥

जैसे जलहि न बिसरे मीना । ऐसे शब्द गहे परवीना ॥
पुरुष नामको अस परभाऊ । हंसा बहुरि न जगमहँ आऊ ॥
निश्चय जाय पुरुषके पासा । कूर्म कला परखहु धर्मदासा ॥

छंद ।

जिमिकमठबाल स्वभावतिमि, ममहंस निजघरधावई ॥
यमदूत हो बलहीन देखत, हंस निकट न आवई ॥
हंस निर्भय निडर गाजइ, सत्य नाम उच्चारई ॥
हंस मिलपरिवार निज,यमदूत सबझख मारई १०२
सोरठा-आनँदधाम अमोल, हंस तहांसुखविलसहीं
हंसहिंहंस कलोल, पुरुष कान्ति छबि निरखहीं १०३॥

ग्रन्थकी समाप्ति ।

छंद

अनुरागसागरग्रन्थकथितोहिं, अगमगम्य लखाइया
पुरुष लीला कालको छल, सबै बरणि सुनाइया ॥
रहनि गहनि विवेक बानी, जौहरी जन बूझि हैं ॥
परखि बानी जो गहे, तेहिअगम मारगसूझि हैं १०३

ग्रन्थका सार निवाड ।

सोरठा-सतगुरुपद परतीति, निश्चल नाममु भक्तिदृढ
संत सतीकीरीति, पिय कारणनिज तन दहै॥ १०७॥
सतगुरु पीय अमान, अजर अमर विनशै नहीं ॥
कह्योशब्द परमान, गहे अमर सो अमर हो १०८
संत धरे तिहि आस, गहे जीव अमरहिं तहाँ ॥

चितचेतो धर्मदास,सतगुरु चरणन लीन रहु॥१०९॥
मन अलि कमल बसाव,सतगुरु पद पंकज रुचिर॥
गुरु चरणन चित लाव, अस्थिर घर तबहीं मिले॥
शब्द सुरति करु मेल, शब्द मिले सतपुर चले ॥
बुन्द सिन्धुका खेल,मिलै तो दूजा को कहे॥१११॥
शब्द सुरतिका खेल, सतगुरु मिलै लखावई॥
सिन्धु बुन्दको मेल, मिलै तो दूजा को कहै॥११२॥
मनकी दशा विहाय, गुरु मारग निरखत चले॥
हंस लोक कहँ जाय,सुखसागर सुखसों लहे॥११३॥
बुंद जीव अनुमान, सिंधु नाम सतगुरु सही॥
कहे कबीर प्रमान, धरमदास तुम बूझहु॥११४॥

कबीरधर्मनगरस्थित वंशप्रतापी महंत श्रीयुगलदासजी-प्रसिद्ध रसीदपुर शिवहरवाले कबीरपंथी भारतपथिक स्वामी श्रीयुगलानन्द विहारीसंगृहीत सम्पादित अनुरागसागरसमाप्त।

मिती चैत्र वद्य षष्ठी संवत १९७८